

५

इसप कवि कृत
नीतिकथा





186.D. 247.

(GOOJRATEE RARE BOOK

TRANSLATION OF

(ESOP'S FABLES.)



इसपनोति कथाओ

नापूशास्त्रीपंड्या रायकवाळ

एवोये

मराठी उपरची गुजराती भाषामां करीये
मुंबईनी शिक्षामंडळीना शापखानामां हापीये

सन इसवी

National Library Calcutta
Rare book Division.

१८१८? (1818)

RARE BOOK COLLECTION

संवत्

१८८४

अथ शालिवाहन.

१०५५

78

1729

BACK DOOR

College of St. William



(१)

अनुक्रमिका

पान	अ	पृष्ठ
८ अरण्य अने लाकडा कापनारो	८	६०
६		
१२५ इंद्र अने गणपति	- -	२१२ 149
१२८ इंद्र अने गंधेडो	- - -	२३६ 209
७		
८३ उंदरसाथे सिंदीनु लघ	- -	१२८ 58
१४१ उंदर अने सापनो नागो	-	२४२ 67
१५१ उंदरनी सभा	- - -	२६१ 212
८		
१२७ एक बांले काणु हरण	- -	२१५ 169
१७६ एक खाली घोडा अने सादेलां		
गंधेडो	- - -	३०५ 277

* This column refers to the corresponding Fable in Croxall's Esop, London 20th Edition.

३५ कठकडता पचडानी - - -	४३	190
५५ कणवी खनें शाहारुग - - -	७२	261
१४८ कणवी खनें तेना होकरा - - -	२५५	235
१७४ कणवी खनें चट्ट - - -	३०२	309
१६ कवुतर खनें कुकडां - - -	१८	109
१०६ कारडकणो कुनरो - - -	१७९	81
१७ कसरीयो रुग - - -	२०	111
८६ कागडो जेणे मोरमां योडां		
शरीरमां खोशां हतां - - -	१३५	7
१३२ कागडो खनें खवुतर - - -	२२४	173
१७० कागडो खनें साप - - -	२२५	325
१७२ कागडो खनें गाडहं - - -	३०९	303
१०९ काचवो खनें गरडपंशी - - -	१६९	74
१८९ काजुं नाणस - - -	३९९	292
६६ कांडाखानारां उटनी - - -	८९	276
	कोडीषो	

(३)

३६	कीडीयो चनें तीड	- - -	४८, 205
७६	कीडी चनें माख	- - -	१२१ 48
८४	कुकडी चनें चकली	- - -	१४६ 300
१६५	कुकडी चनें शियाळ	- - -	२८८ 317
१७५	कुकडु चनें शियाळ	- - -	३०३ 323
८२	कुकडो चनें रत्न	- - -	१४६ 1
१४७	कुकडो चनें शियाळ	- - -	२५२ 215
९	कुतरो चनें तेनु प्रतिविंब	- - -	१ 8
४४	कुतरो चनें गाडरुं	- - -	५७ 220
७६	कुतरो चनें दीपडुं	- - -	११३ 35
१३८	कुतरो जेणे गाडरां खर्धा	१३४	180
१३६	कोयला वेंचनारो	- - -	२३० 133

ख

१२३	खबूतरी	- - -	२०६ 158
४८	खबूतर चनें कीडी	- - -	६२ 226

॥

(૪)

૧૧૭ ગધેડો અને સિંહ એમનો પારખ	૧૮૪	127
૧૪૨ ગધેડો સિંહ અને કુકડું -	૨૪૫	207
૧૪૫ ગધેડો અને કુતરો - - -	૨૪૮	210
૫૦ ગરુડ અને કાગડો - - -	૬૪	227
૭૧ ગરુડ પક્ષીઓ અને શિયાળણી -	૧૦૧	23
૧૨૦ ગરુડ પક્ષીઓ, ચલાડી, અને મુંડળો	૨૦૦	139
૧૨૭ મનદ સારંગીવાલો - . -	૨૨૨	183
૭૭ માહત્ત જેને વકરીયે પાવ્યું હતું	૧૧૬	37
૬ ગામડીયો અને સાપ - - -	૬	45
૧૪૦ ગામડીયો હંદર અને સેહેરી હંદર	૨૩૭	63
૮૫ ગોવાળીયો અને હંડેરામ -	૧૫૦	304

ઘ

૮૦ ઘરડો કુતરો - - - -	૧૨૪	51
૧૫૨ ઘરડો સિંહ - - - -	૨૬૫	246

૧

૨

(५)

४३	वासनी गंजीउपरनो कुतरो -	५५'219
१२६	घुड अने मोड - - -	२१३ 167
६	घोडो अने सावर - - -	१० 62
५२	घोडो अने गधेरो - - -	६७ 233
१४८	घोडो अने सिंह - - -	२५७ 237

च

१२३	चकली अने ससको - - -	२२६ 176
१५८	चकली अने बिजां पक्षी - - -	२७४ 266
१६८	चाकर अने अणसमज - - -	२८३ 287
१०८	चिचो अने शियाळ - - -	१७५ 105
२८	चोर अने डोकरो - - -	३४ 186
२८	चोर अने कुतरो - - -	३५ 182
१६१	चोर अने कुकडो - - -	२८१ 298

ख

४०	कोकरो अने ना - - -	५० 201
----	--------------------	--------

ज

(६)

११५ अवान पुरुष अने घोषन पक्षी १८६ 124

१५६ अवान पुरुष अने बलाडो - २७६ 274

१६४ अवान होकरो अने सिंहनुजिच २८६ 315

४

१०३ टाल पडेलो शिलेदार - - १६५ 85

४

२६ डाहायो सिंह - - - ४४ 194

११८ डाहायो गधेडो - - - १८६ 128

११२ डोसो अने नृत्य - - - १८३ 117

१५४ डोसो अने तेनां होकरां - - २६६ 217

१५५ डोसो अने तेनी लुंडीयो - - २६८ 249

६

३७ दीपडुं अने नांदो गधेडो - - ४६ 203

३८ दीपडुं अने वफारोन वधु - - ४६ 193

दीपडां

(७)

६२ दीपडां अने गांडरा - -	८४ 272
८८ दीपडुं अने वगलुं - - -	१२८ 12
८९ दीपडुं अने वकरुं म्हानं - - -	१४७ 3
१२८ दीपडुं शियाळ अने वांदरो -	१२० 198
७४ देडका अने वे वळद - -	१०७ 27
८५ देडकां अने शियाळ - -	१२३ 79
८७ देडकांचे राजा करवामे	

विष्णुनी प्रार्थना करी - -	१५४ 6
१६६ देडकुं अने उंदर - - -	१८० 284
१४ देव अने गाडीवान् - - -	१६ 100
१६९ देवशर्मा पंडीत - - -	१२३ 172
१२ देव अने होकरो - - -	४० 156

न

१३० नरीनो मत्स अने समुद्रनो मत्स -	२२९ 170
१६७ नोळवो अने माणस - -	२८९ 286

(५)

ब

७ पर्यंत बाह्यतीव्रत दुःखी घायके	७	47
७५ पराळ गानु सावर	- -	१०८ 83
१४६ पयु, पथी, यने बानोळ	-	१५० 112
१३ पारधी यने पथी	- - -	२८ 147
४८ पारधी यने पथी	- -	६३ 250
५४ पारधी यने खवूनर	- -	७९ 258
१८८ पारधी यने चकली	- -	१२२ 166
१४२ वेड यने विजा यवयव	- -	२४३ 68
१५७ वेड यने पांजरा	- -	२८२ 256

क

४५ बकरानु वसु यने चितरो	- -	५८ 108
१० बकरी यने कुतरी	- -	१७ 175
११ बलाही यने उंदर	- - -	२५ 152
४२ बलाही यने कुंकुं	- -	५३ 217
		बलाही

१०६ बलाडो अने शियाळ	- - -	१७६	107
१६२ बलाडो अने जमवा			
बोलाव्यो हतो	- - -	२८२	302
२ बळद अने देडकुं	- - -	२	20
२० बळद अने बकरो	- - -	२४	146
११० बाज अने बुलबुल	- - -	१७८	113
१११ बांडो शियाळ	- - -	१८०	115
१२४ ब्रह्मसती अने मुर्ति कर्तारो	- - -	२२७	298
२७ बे कर्चला	- - -	३३	185
६६ बे कुतरियोनी	- - -	६७	18
६८ बे कुकडा	- - -	१५६	305
८६ बे डग अने भात्री बेचनारो	- - -	१४०	307
१६ बे देडका	- - -	२२	136
७३ बे बायडियोना धंणीनी	- - -	१०५	31
६३ बे बटे मार्ग	- - -	८६	293
१०५ बे बटे मार्ग अने सीं	- - -	१६८	83

१८५ ने वासण	— — —	११८	88
१८९ वेहेन यने भार	— — —	२०२	131
१९१ कच्चा यने छंद	— — —	२२६	82

म

५७ मरवाडनो होकरो	— — —	७५	268
५६ मुंडणी यने दीपड	— — —	७४	260

न

१८३ मयणी वर	— — —	२१४	290
४९ मधुपडो यने रीक	— — —	५२	214
१६० मधमाख्यो, माख्यो, यने भमरी	१७६	279	
१५ मनुष्य यने हंसी	— — —	१७	102
१०७ मज्जान भोकडो	— — —	१७३	103
१०० मा यने दीपड	— — —	१६०	73
१८ साखी यने माख्यां	— — —	२९	120

माखी

६५	माकी - - - - -	८२	295
१३	माणस अने सिंद - - -	१५	96
३९	माणस अने कुतरे करीया हतो	३८	155
१८४	माणस अने मसर - - -	३१६	318
८९	सांदो समलीनो कोकरो -	१२६	63
६०	माली अने कुतरो - - -	१४२	321
६९	मेहेताजी अने निसालियो -	१४४	327
७८	मोर जे पोताया स्वरने सोटे		
	जाणीने खेद करतो हतो -	११८	39
१०४	मोर अने वगलो - - -	१६७	88
१५६	मोर अने 'कागडो' - - -	२७०	254

२

५८	रणधीनु वमाडमारी - - -	७८	268
१६२	रवारी बेपारी असी हतो -	२८४	31३
१३५	राजा मूरखेन अने मेनो राव	२२६	178

क

१७२ छावरी चने तेनी वखां - - -	२८७	70
१४ लोभायो माणस - - -	४९	137
५१ लोभी चने मत्सरी - - -	६६	229

ख

१०२ बमनोदेव चने मार्ग - - -	१६३	98
१२८ बरुण चने कवाडी - - -	२१७	188
१० बाघनां वेश लेनारो मधेडो - - -	११	78
६४ बाघनां पडेलुं शियाळ - - -	८७	281
१४४ बांदरो चने शियाळ - - -	२४७	208
१८० बांदरो चने तेनां वे वझां - - -	३१०	311
६१ वेव धारी दीपडु - - -	८३	271

ग

५२ गाऊडो चने साव - - -	६८	252
३ शियाळ चने द्राव - - -	३	41

शियाळ

५	शियाळ अने वकरो	- -	५०	44
२२	शियाळ अने कांठा	- - -	२६	151
२६	शियाळ अने सूरहर	- - -	३२	162
३१	शियाळ अने गामडोयो	- -	३७	153
४६	शियाळ अने सिंह	- - -	६०	230
६८	शियाळ अने कागडो	- -	८४	16
७०	शियाळ अने शाहादत	- - -	८८	22
८६	शियाळ अने गधेडो	- -	१५२	299
१२२	शियाळ अने मांकड	- -	२०६	159
१६८	शियाळ अने शाऊडो	- -	२८४	326
१७७	शियाळ अने दोपडो	- -	३०६	282
१८२	शियाळ अने मांदो सिंह	-	३१३	210
१८६	शियाळ अने बाघ	- -	३१८	91
१८७	शियाळ अने मुखवटो	- -	३२१	135
८८	शीतळवायु अने सूर्य	- -	१५७	76
१९८	शेखीदार प्रवासी	- - -	१८८	129

स

११३ सकाम सिंह - - - -	१८५	118
१७९ समली अने कोली - - - -	३०८	222
६० ससलो अने काचवो - - - -	८०	269
८४ ससलो अने देडकां - - - -	१३९	54
१२४ सागनझाड अने कांटानझाड - २१०		144
४ साप अने रेतडी - - - -	४	42
५८ साप अने सालस - - - -	७७	264
११६ सावर अने बखु - - - -	१८२	122
६७ सावरी पाणीमां जातीहतो - - - -	८२	13
१२ सिंह अने चार बळद - - - -	१३	93
२४ सिंह अने देडकुं - - - -	२८	112
२५ सिंह अने बकरो - - - -	३९	141
८२ सिंह अने उंदर - - - -	१२७	58
८७ सिंह अने परु - - - -	१३७	10

(૧૫)

૧૧૪ સિંહણ અને શિયાલણી	- - -	૧૮૭ 120
૧૫૦ સિંહ, રીંદ, અને શિયાલ	-	૨૫૯ 238
૧૫૨ સિંહ ગધેડો અને શિયાલ	-	૨૬૨ 244
૭૨ સુહર અને ગધેડો	- - -	૧૦૪ 25

હ

૧૭૮ હરણ અને દ્રાક્ષના વેલા	-	૨૦૮ 288
૧૮૯ હરણ અને સિંહ	- - -	૨૨૨ 320
૪૭ હંસ અને વગલાં	- - -	૬૧ 232
૧૧ છોટાંશાહ અને ન્હાંનાં શાહ	-	૧૨ 89

સમાપ્ત

વાત ૧

કુતરો અને તેનું પ્રતિબિંબ

એક કુતરો છોમાં માંસનો કડકો ચાલીને
 નદી ઉતરીને, પેલે તોરે જતો હતો. તેણે પોતાનો
 કાયા પાણીમાં દીધી, ત્યારે તેના મનમાં આવ્યું જે,
 આ કોઈ વિજો. કુતરો માંસનો કડકો હોઈને જા
 ય છે. તે છં અને પાસેથી લુંચી લેંજ, એવો વિચાર
 ર કરીને પોતાનું છો ઉઘાડીને લોભથી તે લેવા
 થયો. તો છોમાંનું માંસ પાણીમાં પડ્યું તે તલે લે
 ટું, તે પારીને અને મચ્છ નહીં.

સાર

પરમેશ્વરે આપ્યું જે આવ્યું તેમાં સંતોષ ન મા
 નીને, જે પદ્મ વિજાનું લેવાને રહે છે, તેને તે ન મ
 લે અને પોતાની પાસે હોય તે પણ જાય.

बल्लद अने देडकुं

एक बल्लद बौडमां चरतो रहतो, त्यांहां म्हाणां
म्हानां देडकां फारमां हतां, तेचोमांनुं एक देड
कुं बल्लदमा पयतळे चंपार्दनें मरी गयुं, ते वात बि
जे देडके घेर अर्दनें पोतानी नामें कहो, अनें ब
ळी बोल्ह जे मा एवडो छोटा जीव यच्चो कोर्द दि
वसे दीठो नहोतो. ते सांभळीनें देडकी पोतानुं
पेट घणुं फुलांवीनें ते प्रत्ये बोलवा लागी, जे ते
जीव आवडो छोटा हे, देडको बोल्हो, मा ए क
रतां घणोमोडो हे. फरीनें तेथी वस्तुं पेट फुला
वीनें देडकी बोली, एटली हे. ते बोल्हो मा तुं
पेट फुटे एटली फुले, तो पण तेना जेवडी बा
ध नही. ते सांभळीनें नर्वे करीनें घणुंज फुलवा
लागी, एटलासं पेट फाटीं गयुं अनें मरी गयो.

सार

करीवे पोतानी शक्ति प्रमाणे खरब करव. यो

संतनी

સતેની બંધવરી કરવા જાય તો દેડકીની પેટે
માર્યો જાય.

—•••—

વાત ૨

શિયાળ અને દ્રાણ

એક શિયાળ મુલે પીડાયેલું, ફરતું, ફરતું દ્રા
ણના માંડવા તલે આવ્યું ઉંચું, જોયું, ઇટલે સારિ
પાકેલી દ્રાણનાં લુંમણાં છટકતાં દોડાં, પણ માં
ડવો ઉંચો માટે હાથમાં આવતાં નથી, વાલે કુ
તકારા મારીમારીને વાલું પણ એકે દ્રાણ હાથ
માં આવો નહીં. છેલો વારે સનાર વેગઝું જોડેને દ્રા
ણો સામું જોડેને કેહેકે, જા દ્રાણો એ કોથે તે ક્યો, ય
જાં તો કાચો અને છાટો જાળોને મુંકોને જાઝું કું.

સાર

કોટલાક પુરુષ એવા હોયકે જે તેને હાથ જે વ
જુ આવે નહીં. તે ઉપર કાર્ડ દેશ મેહેલોને ખે
તપનો ફલકાર્ડ દેલાડતા નથી.

વાત

(४)

पात ४

साप जनें रेतडी

एक साप लम्हारनी दुकानमां जईनें, काई खा
मानु जोषा साव उंचे नीचे डोलतो हतो, तेखे ए
क रेतडी दीवी, तेनें खावा गयो. ते बलत रेतडी
नेनें तिरस्कार करीनें केहेछे. अरे मूर्ख तूं ज्ञाने अ
धीन नहीं, ग्रामाटे जे ऊं लोहोहो, जनें तीलाने
खानारी, ते ज्ञाने चाबीनें तारा दांत नाच पड्यो.

सार

सामानु सामर्थ्य जोईनें तेनें उपद्रव करवो, प
ण जेनें सर्व लोक माने छे, जनें जेनुं कस्तुं सांग
ले छे, जनें करे छे. तेनें साचे विरोध करीये
तो तेमां आपणोज नाच जाय. तेमज डाहापण
का जोरनी छोटा माणसनी चेछा करीये तो, ते
मां आपणुंज मूर्खत्व नाच दीसे.

पात

(५)

वात ५

शियाळ अने बकरो

एक शियाळ पाणी पीवानें बाव उपर गयं. ते, मांडे पड्युं. तेणे बाहेर नोकळवानें घणी बार सुधी श्रम कर्चो, पण कांदें. लान फाव्यो नहीं एठ लामां एक बकरो त्याहां-आव्यो, तेणे तेनें पळ्युं अरे आ पाणी साहं हे शियाळ उत्तर करेहे भाई साहं ते केंवुं कऊं, ए अमृत सरखुं मोठुं हे. पीतां पीतां छानें तमोज बती मधी. ते सांभळीनें बकरे पाणीमां भुसको मार्यो, तेनां शिंगडां छोटां हतां, ते उपर शियाळ तरत पन मेहेलीनें कुदीं जें बावनी बाहेर नोकळीनें गयं. पक्षी बकरो उपकां खातो खातो मरींगयो.

सार

लोक जे जे करेहे, तेनां पोताना स्वार्थनें जे एके, विजाना हित सार उद्योग करतारा एका

पुरुष

પુરુષ તો ચોરાજ, માટે જો કોઈ કોઈ સામ
 દેસાડે તે મનુષ્યની સાચાઈ પ્રથમ યોજ ~~તરીકે~~
 મજ્યા વિના તેના બોલવા ઉપર વિશ્વાસ રાખવો
 નહીં.

—૦૦૫૦૦—

પાત્ર ૬

નામડોયો અને સાંપ

એક નામડોયો કળવી ટાહાડના દાહાડામાં બાડા
 માં કામ કરતો હતો. ત્યાંહાં બાડ આગલ પડેલો
 એક સાપ તેણે દીઠો. તે ટાહાડે કરીને ઘણો
 વ્યાકુલ, ચડ્ ઘડીયે, અથવા ઘડીયે મરનાર, એ
 બો જોઈને કળવીને દગ્ગ ચાલી. પછી તે સાપને
 લોઈને ઘરમાં ગળડી આગલ મેલેલ્યો. ત્યાંહાં જો
 કાથો, એટલે દગ્ગ પાંચ પલે ઝંશિયાર ચડીને, ઉ
 થો ચડીને, ફૂફવાડા મારધા લાગ્યો. અને કળ
 વીનાં વાડડી હોકરાંની ઉપર દોડવા લાગ્યો.
 ત્યારે તે મની દોહાદોહ થયો. કળવી બાડામાં

હતો,

हते, ते ते कलवलाट सांभळणांवांत हावमां ए
क कोडोवाडो लोर्डनें आष्यो, तेणे एक वाये-सा
यना वेकडका कर्या. अनें घा मारती बलत
सायनें कही. अरे दुष्ट जेणे तारो जीव उगार्यो,
तेनो उपकार आवो नगळ. हवे तनें मारवो
योग्यहे. पण हे महापापी, तारा अपराधनें ए
कला मरण करतां कांई बन्ती शिक्षा जोईये.

सार

जे पोतानुं सारुं करनारनो घात करे, अथवा
जेनं अन्न खाय के तेना उपर दगो करे, ते कृत
न्न महापापी मुच्यो सारो, तेनं ह्यो जोईये नही.

—*—

प्रात ७

पर्वत वाहाती बसत दुःखी आयहे.

कोई एक पर्वत, ऊं माऊंहुं एवं डोळ घाली
नें, घणो कष्टित यईनें वरका पाडवा लाग्यो.

ते

ते सांभलीने आस पासना सर्व लोक एकठा ब
या. अने पर्वतना घेटमांधी काई सारी छोटी
बस्तु नीकळणे, एवं जाणोने घणोवार सुधी छोटी
आशाये वाट जाता होता. हेलीवारे एक उंदर
कुत्तारो मारीने बाहेर आव्यो.

सार

कोटलाक पुरुष छोटा राज्यना अधिकार उ
पर रहीने, अहो कै प्रकारे लोकोन कल्याण क
रीण, एवं डोळ घालेके, लोक यण तेन डोळ जो
ईने तेना उपर घणो विश्वास राखेके. हेलीवा
रे ते अधिकारी पोतानो स्वार्थ साधीने लोकोनु
काई साहं करता नथी.

वात ५

अरण्य अने लाकडां कापनारे

एक लाकडां कापनारे अरण्यमां गयो. त्यां
हां आस पास जोईने दुःख पामवा लाग्यो. त्यां

२

र झाड़ोये तेनें पुच्छुं, तारे शुं जोर्दये छोये, ते
 ण जत्तिर कर्यो झारा कोहोवाडनें हावो नवी, ते
 जे न्हानो सरखो एक लाकडानो कडको मळे,
 तो सख् बाय, ते बलत सर्व झाडाये मळीनें बि
 चार कर्यो, अनें तेनें एक सारो चीकणो आं
 बलीना लाकडानो कडको आप्यो, लाकडां का
 पनारे ते कोहोवाडनें घालीनें, न्हानां छोटां
 झाड सघळां काप्यां, तयारे साननुं इक्ष बिजां झा
 डनें केहेहे, भाईयो आपणे आपणे हावे आप
 णो माश कर्यो, एमां बिजानो बांक, नवी.

सार

शत्रुनो दया जाणीनें जे तेनें सहाय बाय हे, ते
 हेलीवारे संताप पांमेहे. शत्रु उपर उपकार क
 रवो तो तेना अन्यायनी क्षमा करवो, एमांज छो
 टापण हे. पण जेणे करीनें शत्रु बलवान् बर्दनें
 उसटो आपणनें उपद्रव करे, तेवुं कर्मां आप
 णी मूर्खार् प्रसिद्ध बाय हे.

वात

घोडो अने सावर

एक घोडो अने सावर, एक खेत-रमां नित्य एकठां चरतां. एक दिवस बे जणांनी बोलाचाली बघी. सावरे पोतानां ग्रींगडानें जोरे घोडानें खेतर बाहेर काढाडी मेहेल्हो. त्यारे सावरनें शिक्षा करवी, माटे घोडो माणस पासे गयो. अने पक्ष करे माटे प्रार्थना करी. त्यारे माणसे तेनी पोठ उपर खोगीर घाल्यं, अने ह्योमां लगाम घाली, अने उपर घडानें बेटो. फेरवी जोतां कुला उपर बे चार पाटका पण मार्या. घोडे ते सघळुं सहानें माणसनें हाथे सावरनें हराव्यो. पक्षो माणसनें केहेके, हे भला माणस ह्यार काम यथुं, ऊं तारो घणो उपकारी थयो, हवे आ खोगीर अने लगाम काढाजे ले, अने ह्येने रजा वाप. ते सांभळीने माणस बोलेके, भारीं तुं आ वो कामनो के ए हीं जाण्युं नहोतुं. हवे तुं आ

बंधनथी

बंधनची हुटीस एवं क्षाने सुजतं नथो.

सार

एकने शिक्षा करवा सारु विजानें शरण जवा
मां घणो विचार करवो. एकादि वखत जवरा
ना हाव तळे चाव्या, तो फरीनें हुटा चर्दयुं ए
नो भरुंसें नही.

—*—

वात १०

वाघनो वेश लेनारा मधेडानी

एक मधेडानें वाघनं, चामडुं जडुं. ते तेणे
शरीर उपर जोडुं. पळी ते शरण्यमां चववा
चरवानें ठेकाणे गयो: त्यांहां भयची सर्व जनावर
एनें जोर्डनें नाशी जाय, एक वखत तेनो धणी चा
व्यो. तेनें पण ते बीहिवरावा लाग्यो. त्वारे
तेमा खांबा काम जोर्डनें धणीचे जोळख्यो, जे चा
तो चापणो गधेडो हो. पळी तेणे हाथमां एक सो

टो

(૧૨)

ટો, સેરને ગધેડાની સારી પેટે શિક્ષા કરી, અને તેને કહ્યું કે જો વાઘને ચામડું ઓડ્યું છે, તે પછી કશું સહ જાણું છું, કે તું ગધેડો છે.

સાર

એને યોગ્યતા ન હોય તે સુરાનો, અથવા જાળપણનો, અથવા સાધુ, પણાનો વેગ સ્ત્રી, તે દુર્બલ અજ્ઞાની સ્ત્રીઓને માથે ઠગે, પણ જાણતાની સાથે નાંઠ પડી હોય, તો તે તેના સ્વરૂપને ઓળખીને ઉપહાસ્ય કરે.

—**—

વાત ૧૧

છોટાં શાહ અને મહાનાં શાહ

એક છોટું શાહ નદીનો તેડે હતું તે ઘણા વાનાં સપાટાની ઉણડીને નદીના પ્રવાહમાં તથાક્ર અતાં, તેનાં ઢાળાં નદીને કિનારે મહાનાં શાહ હતાં તેમને ઘસારીને મર્યા, પણ તે શાહોને કારી દુઃખ થયું નહીં. મ્યારે તે છોટું શાહ આશ્ચર્ય પામીને તે મહા

નાં

(૧૬)

માં છાડનેં કેહે છે, ચરે તેમે તે વાના છપાટામાં
જી કદમ જગયા. જે વાળે. દ્વારા સરલાં પેલ
છાડ મૂઠમુધાં ઉલેડી માંણ્યાં. ત્યારે મ્હાનાં
છાડ ઉત્તર કરે છે. બાવા આપણી બેની રીતી જુ
દી જુદી છે, અહો વા આવે છે ત્યારે તેમેં મમી
એ છીયે, જાણીયેછાએ જે વઠવાનનો આગઠ આપ
ણે કાંઈ ચીલશે નહીં. જુનેં તું તો પોતાના વઠ
ઉપર મહંસો રાણીનેં અકડાઈથી, ઉભોત્ર રહે છે.

સાર

જેનો સાથે આપણે ચાલનાર નહીં, તેનો સાથે
નમીનેં ચાલવું, ત્યાંહાં ગર્વ રાણીયે એ માંડાપણું.

—*—

વાત ૧૨

સિંહ અને ચાર વઠદ

ચાર વઠદ માર્દ વંધાર્દ કરીનેં એક ઢેકાળે

રતમ

रता हता. यमें एकमेकानें खिला न मेहेलता.
 एवांमां एक सिंह तेमनें नित्य जोईनें मज्जमं
 विचार करवा लाग्यो. जे आमांघी एकादो ला
 बानें बळे तो सारुं थाय. ते सिंह एक एकनें
 मारवानें समर्थ हतो. यण चारनो एक जोड
 जाणीनें तेमना उपर जवानें तेनी छांम जाले न
 हीं. त्वारे केटलाक द्वाहाडासुधी वेगळेथो ता
 कतो हतो, यण कांई लाग पावे महीं. केली
 वारे तेनें निश्चय यथो, जे जहां सुधी आमनो ए
 कोके. त्यांहां सुधी छारुं कांई चालनार नथो,
 माटे हवे एक एकनों चरडो एक एकनें कहीनें
 एमनामां फूट करवी. पक्की तेणे तेमुं करुं, ए
 टले ते बळद मांहेमांहे द्वेष करवा लाग्या. अ
 नें केलीवारे जडा पड्या. पक्की एक एक बळदनें
 मारवानां सिंहनें कांई अम् मड्यो नहीं.

सार

एक चित्त के, त्यांहां सुधी शत्रुनं कांई चाले न
 हीं, एकानुं एवं माहात्म्य के. माटे ते एको चरडो
 सांभळीनें अववा शत्रुनी वातो उपर मन राखीनें
 मोडवानां लांबो विचार करवा.

भात

(१५)

कात १३

माणस अने सिंह

एक अरण्यना रेहेनारने एक सिंहनी सावे मां
ठ पडी. ते ने जणानुं घणीवारसुधी अरसपर
स बोलवुं थयुं. ते एक एकनुं घणुं करीनेमान
ताज बधा, पण छेलीवारे माणस अछ के सिंह
अछ, ए उपर बात नीकळी. त्यारे बेबडवा ला
ग्या. माणसने पोतानुं बोल्थुं सहं करवाने कां
ई उत्तर सुजे नहीं त्यारे तेणे तेज ठेकाणे बे पु
तळां सिंहने देखायां. ते एक आरस्याहाणना
भोतरा उपर बेसायां हतां. अने तेमां एवं देखा
यां हतुं, जे सिंहनी चोटली झालीने माणस. ते
नाउपर बेटो के. ते जोईने सिंह बोल्थो, थयुं,
तारुं साधन तो एटलुंज के, हवे ह्यारुं सांभळ.
जे सलाटे आ पुतळां कयां के. ते माणस हते,
सलाट जो सिंह होत तो, तुं अहीयां एव उळ
टुं देखत.

सार

स्वर्धी के ते पोतानी पक्षमा लोकोनां वचन
अमाणमां आगळ करीने, पोतपोतानुं छरापणुं दे
साडे

साडे हें. माटे वारि प्रतिघारीनां वचन सांभर्या
विना, एकादि बातना सिद्धांत करवो नही.



बात १४

देव अने गाडोवान ।

एक मूर्ख गाडोवान गाडुं हांकीनें खेई जतो
हतो. ते एक ठेकाणे पर्डडां कचरामां भराई
में बटकां. . . एवं जे दांहेर कांदाडवानें बळदनुं
पण सामर्थ्य चाले नही. ते जोईनें गाडावाळे दे
वनी प्रार्थना करी. हे देव ऊं दीन हूं, छाने या
संकटनां सहाय कर, यटलुं सांभळतांज देवे या
काशमां यावीनें जोयुं. तो गाडावाळो अमथो
ज वेडो हें, अनें दीम बाक्य बोले हें, ते जोईनें
तेमें देव केहेहें. अरे मूर्ख, तूं आळशी सरसो
खस्य वेशी रचीश मही. उठ अनें बळदेनें सा
री पेडे हांक, अनें तारां खभानो. टेको पर्डडांनें

दे

(૧૭)

૧. દે, ઇટલે જ તને સહાય વર્દે. તારે આરી સહાય
૨. તારે જોઈતી હોય તો એવો ઉદ્યોગ કર, પછી તારા
હાવાલે તેવું કર્યું, ઇટલેજ માડું કચરામાંથી તારા
દેરની કચ્છું.

સાર

ઉદ્યોગ કરીને જે દેશપાસે સહાયતા માગે છે,
તે નેજ તે મળે છે, પણ નિરુદ્યોગીને મળતી નથી.

—૦૦*૦૦—

વાત ૧૫

મનુષ્ય અને હંસી

કોઈ એક મનુષ્યની પાસે હંસી હતી, તે નિત્ય
એક એક સોનાનું દંડું મેહેલતી. તે લેઈને તે મા
ળસનો આશા ઓછી વર્દ જોઈયે. તે વત્તીજ વ
તી થયો, અને તેના મનમાં આવ્યું. જે ઝાંઝાંથી

આવે

आवाँ ईँडाँ बीकलेके. ते ठेकाणुं हाथ आपे तो
घणुं द्रव्य एकीवारेज मळे, पछी ते मनुष्ये ते ई
सीमुं पेठ बीरुं, अने जेवा लाग्यो तो मांहेवी कां
ईज नीकल्युं महीं. अने घणो संताप मात्र बयो.

सार

परमेश्वर जेनें लावा बीवा जेटलुं ब्यास्थित
आपेके, तेनें द्रव्यमो संग्रह करवा हाथ, तो ते
मांथीज थोडुं खरच करीनें करवा. अनें एवं न
करीनें जे घणो लोभ राखे के, अनें एकीवारेज
अमंत बवाने एकादुं छोटुं कारस्थान करवा जा
यके, तेनो उद्योग निष्फल घईनें पोतानुं असल
नुं होयके ते यण जायके.

बात १६.

कबुतर अनें कुकडां

कोई एके, एक कबुतर झाल्युं तेनी पांखोमां
तां कांई पीछां उलेडीनें, जेमां कुकडां घाल्यांह

तां,

ती, ते लडामां तेनें मेहेल्य. त्यारे त्यांहां कुकडां
 ये तेनें क्षणे क्षणे चांचो मारवा मांडी, चारा उ
 परयो हाकी मेहेल्ये. एवं तेणें केटलाक दाहाडा
 सुधी सल्यु. एम केटलाक दिवस काहाडीनें म
 नमां निश्चय कर्चो, जे पोतानें घेर आवेला पळ
 णानें सुख मयो देता, जेनें उळटा तेनें पोडा क
 रेळे. माटे ए ग्रहस्थ मयो; छोटा निर्दय शठ
 हे पल्ली तेणे एवं दोठुं. जे ते कुकडां दश पांच
 बार मांहेमांहे लडोनें एक एकनें मारवा ला
 ग्या. त्यारे कवतरे विचार कर्चो. जेनें मनमां
 समाधान पाव्यो. जे चरे जे पोतानी जातीनें उ
 पद्रव करवामां चूकता मयो. ते छानें थारका
 नें करेळे एमां शुं आस्यर्य. :

सार

जे लोक, पोतानी जातीमां कळह करीनें ए
 क एकनें उपद्रव करेळे, ते विजी जातीनामें उ
 पद्रव करे, तेमां तेणे कांई खेर आणवो न्हो.

वात

कस्तूरीया मृग

कोई एक जातीना मृग है, तेनी नामीमां कस्तूरी याय है. माटे ते नजरे पड़ो होय तो, केट लाक लोक तेनी पछवाडे थईनें, तेनें मारीनें कस्तूरी काहाडी लेके. एक बखत एवो एक मृग नासे है, अनें तेनी पछवाडे कुतरां अनें पारधी लाग्याके. ते बखत हरणनें प्राण संकट आव्युं. जीववानो. उपाय सुजे नहीं. एटलामां तेनें विचार सुज्यो, जे आ मारनारा कस्तूरी माटे द्वा नें मारवानें रक्के, बिजुं कोई कारण नथो. माटे तेटली काहाडी नांखु, तो सुखी बाजु. पछो तेणे धैर्य राखनें कस्तूरी काहाडी नाखी, एटले संकट नांथी कुटो.

सार

एकनी पछवाडे एक लागेके, पछ तेनें घणु

करिने



करीमें लोभ बिना बिजु काई कारण नही, ता
 टे जारे एवो प्रसन्न पड़े, अने बिजो काई उपा
 य चाले नहीं. त्वारे एवं करवुं, जे बसूना लो
 भे करीमें दुष्ट आपणमें दुःख देवा इहेके, ते बसू
 में नांखी देवी, अने मोना राखीमें आपखो न
 पाव पाव ते करवुं. मोभारेहे अने सर्व बसू
 नी हानी भयी ते हानी एम मानव नहीं.



• वात • १८ •

माछी अने माछलां

एक माछीये नदीमां बज्ज नांख्यो तेमां एक मा
 छलुं पांयुं. ते बाहेर कांहाडीमें टोपलीमां नां
 खे छे, एटलामां ते माछले तेनी प्रार्थना करमा
 मांछी. छे धर्मात्मा, तु कृपा करीमें छाने पाछो न
 दीमां नांख. माछीये पुछुं, अरे ऊं तारा उप
 र एटलो उपकार कां कर ते केहे, माछलुं के
 हेहे,

(૨૨)

હે છે, ડું મ્હાનું બાલક કું, માટે તેવો આજ તારા
કામમાં નહીં આવે, જેવો છોટો થયા પછી કા
મમાં આવશે. સાચી વેલ્યો હા એ વાત સરી,
પણ ડું મૂલ નથી જો હાથમાં આવેલું નાંહી દેડ
ને આવવના ઉપર આગ્રા રાહીને વેસું.

સાર

જે આમઝને મ્હાસે હાથમાં આવેલી વસ્તુ નાંહી
દે, તેમાં વેડ જાય, નમળેલી વસ્તુની આગ્રા કરી
શે, તેમાં કાંઈ છોટું નથી. પણ તેને મ્હાસે આ
વેલી વસ્તુ નાંહી દેવી એ વળું કરીને સંતાપને અ
ર્થ છે.

—*—

વાત ૧૬

બે દેડકા

કોઈ એક સમયે છોટો ડુંહાળે પંચો. ત્યા
રે તઝાવ, વામ્ય, કુવા, સર્વ સુકાર્દ થયા. ને વસત
બે દેડકા પાણીનો શોધ કરતા કરતા, એક વા

જી

ब्यागळ आव्या. ते घणी उंडी इती, तेना कां
 ठा उपर वेशीनें, चरस्परस विचार करवा ला
 ग्या. जे चासां भुसको मारवो के नहीं, एक के
 हेके मारवो, शमाटे जे पाणी उंडुं हे. माटे
 तळे पाणीनें द्रह हशे, ते पाणी खुटगे नहीं. च
 नें कशी बातनी थडचन नहीं पडे, त्तारे तेनें वि
 जो उत्तर करेके, चरे तुं केहेके एसवळुं खर, तो
 पण चा जीव उपरनी बात हें माटे तारा विचा
 रमां झाराथो हा केहेवाती नथी. शमाटे जे
 चा वाथमां जो पाणी नहीं होय तो केहे, वा
 र पाठा बाहेर कमनीकळीश.

सार

एकादुं दुर्घट काम करता पेहेलांज पेहेलो वि
 चार करी मेहेलवो. जे, जो कदाचित् तेमां फ
 ला तो चा मार्गे आपणो नभाद चशे.

सात

(२४)

बात २०

बळद अमें बकरो

बाघ, पंढवाडे पड्यो हतो, माटे एक बळद जो
ब खेईमें नाडो, ते एक मुफाभां पेसवा मयो. त्यां
हां एक बकरो हतो, ते तेमें मांहे जवादे नहीं.
अमें केहेवा लाग्यो के आ झारु घर हे, एमां तुं
आवीश तो मनें मारीश. बळदे प्रणा काला
वाला कर्यो जे अरे झारी पंढवाडे आ बाघ ला
ग्यो हे, ए समयमां तारी ग्रहस्फार्दमें घटेके जे
झनें आयय आपवो. बकरो कांई तेनुं कछुं सां
भळे नहीं. शींगडा सामां करीनें सामो मारवा
जायहे. त्वारे बळद तेमें केहेके, अरे ऊं तारा
चो अमें तारां शींगडांची बीहितो मची, प्रण शुं
कर. जो आवसत झारी पंढवाडे बाघ ज हो
त तो, बळदनी अमें बकरानी योग्यतामां केठलो
भोर हे, ते ऊं तनें तरतज चमत्कार देखावत.

सार

(२५)

सार

कोई संकटमां होय तेने सहाय न चर्हये, न
मनुष्यने योग्य नबी. पक्षी सहाय न चर्हये, न
ने तेने तिरस्कार करीये, अथवा कोई उपद्रव क
रीये, अथवा तेना दुःख उपर डाव देईये, ए स
रसुं पाओ पणु-मिजुं शुं हे.

—*—

बात २२

बलाही अने उंदर

एक घरमां उंदर घण्ट बस्य होता. ते घर
मां एक बंलाडु आव्यु. तेणे तेमांन कोटालाक उं
दर लार्नेन बोळा कर्था. ते जीर्दने एक दिवस बाको
रहेला उंदर एकटा चर्हने, नेमणे निसव कर्था
जे, आपणे कोईये उपरची हेठे जव नंहीं. ते दा
हाडेची बलाहाने हाथ उंदर आवे नही माटे.
मुझे मरवा लाग्यु. त्यारे तेणे एक खुंटीये पोतामे

पव

वन बलगाडीनें मुएलानों वेश लीधो. ते जोई
में उपरवाँ एक घयडो उंदर ते प्रत्ये बाल्यो. भा
ई तं सुखे टगाई रहे. एतो शुं, पण तारुं पेद चीरी
में मांहे पराल भयुं के, एवं जो तनें देखीये, तो
ये हवे तारो विन्यास करीये नहीं.

सार

पापी, कपटी, ठग, एमनां मोटां बचनोंनें खरां
मानेहें, माछेज लोक ठगायके, पण तेमनं स्वरूप
बोळख्य. अनें ते लुखो एम मनमां जेणे दड नि
अथ कर्यो. तेनें ते बचरो शुं ठग्ये.

—••—

कात २२

शियाळ अनें कांटा

कोई एक शियाळनी पक्वान्ने कुतरां खाण्यां
हतां, माडे ते भाटुं, ते एक बाय कुदतुं हतुं, ते
मां एक कांटानुं झांखतुं हतुं, तेनें बळग्युं. एट

२६

જે હાથ પામાં કાંઠા ભરાઈ ગયા. અને દોડતા
ચટકાં, ત્યારે તે કાંટાનો નિંદા કરીને કહેહે, જ
રે યહસ્ય જ તારો આચર્ય ધારીને ચાલું, તે તું દ્વા
રાં ઉપર ચાલું નિર્દય પળું કરજી. એ તને યો
ગ્ય મળી. કાંટાનું ઘાંસણું ઉત્તર કરેહે, જરે તે
મમમાં ધૂર્યું હતું, જે, જ એને વઢગું, અને જ કાં
ટાં બોલે મછી, અને જે કહ તે સેહે. તો આજ
પછી સહજ સમજજે જે વઢગવું, અને અદ્યારો
ધર્મ છે. માટે હવે કરી કાંટાનાં ઘાંસણાંને રક્ત
ઘર્દજ મછી.

સાર

દુષ્ટ છે તે, વિજાને ઉપદ્રવ કરવાને જાયછે,
પછી તે તેનાકરતાં સચાર્દ હોય, તો તેનેજ ઉઠ
ટો પેશમાં આળે. ત્યારે તે તેનો નિંદા કરે, જ
ને કહે, જે જુઓ આ યહસ્યને જમને ચાલું કર
વું, ઘટે છે. પણ પોતાના મમમાં એવું સમજતા ન
થી. જે વિના અપરાધે, અદ્યો લોકોને ઉપદ્રવ ક
રીયેછીયે, તો એલોક અદ્યારો જોય લેતા મળી,
યજ તેમનું છોટપળું.

વાત.

(૨૫)

વાત ૨૨

પારથી અને પક્ષી

કોઈ એક પારથી પક્ષી જાણવાને જાલ વાંધ
તો હતો. ત્યાંહાં પાસેના જાલ ઉપર એક પક્ષી
બેઠું હતું. તેણે પારથીને પૂછ્યું. શરે શાવા તું શા
મું કરે. પારથી ઉત્તર કરે. આ તમારે જ
હોને રેહેવાને માટે સેહેર કરું છું. આમાં જે પ
ક્ષી પાણીને રેહેશે, તેને કશો વાતનું દુઃખ પડ
નાર નથી. અહોયાં પારો છે, પાણી છે, રેહેવા
ને વાસ્તે સારાં સારાં ટેકાણાં છે, સુવાને માટે સું
દાળાં અને કંપાળાં એવાં વિશાંનાં છે, સારી સા
રી સ્ત્રીઓ છે, પક્ષીએ તે સઘળું જુદું માન્યું. અને
પારથી તે જાલ વાંધીને મરું, ત્યાર પક્ષી તે પક્ષી
તેમાં આવ્યું. તે જાલમાં રંધાયું. અને દુઃખ પડ
મવા સામ્યું. શરે ત્યાંહાં ઘણાં પક્ષી આવ્યાં તેને
તે કહેવા સામ્યું જો, શરે સંભાળજો આ જાલ છે
આમાં જં પડકરો છું. અને પારથી તમને મોહ
માં માંસશે, માટે તમે તેનું જીવન જુદું માંસ્યો ન

હી

हीं चनें बिजां सचळी पक्षीयेनें आ. समाचार ज
रस्परस जणावजो. वे चार बडीये पारधी पाहो
त्यांहां आच्यो. त्वारे तेनें पक्षी केहेहे, चरे ठग
तें झुनें तो ठग्यो. पण हवे मूनमां निखय सम
जजेजे, हवेची तारा आ सुंदर चरमां बिजो कोर्
पक्षी आवमार नथो.

सार.

धूर्तनें चोळख्यो नथो त्यांहां सुधी ते लोको
नें टंगी जायहे, पण एकवार तेना स्वरूपनं झा
न थयं एटले पक्षी लोक तेनें परकांथे पण उ
आ रेहता नथो.

वात १५

सिंह चनें देडकु

एक सिंह सरोवर उपर पाणी पिबानें गयो ह
मो, त्यांहां देडफावो शब्द सांभळीमें जचको, ज

ने

५

में चारे तरफ़ जोड़नें मनमां विचार करवा लाइ
गया, चारे जहोंयां तो कोई नजरे पड़तुं नको. अ
ने शब्द तो रहीरहीनें जाय है, ए भुं हशे, मा
टे भयभी कांपवा लाग्यो. पण त्याहांवी भाशी
न जातां धैर्य राखीनें विचार करेके, एठलासां जे
नोखतो हतो, ते देडको सरोवर मांवी बाहेर नो
कव्यो. तेनें जोतांमांज सिंहनें रीसु चढी, जे खा
नहानो जीव घईनें एणे मज सरखीनें जावो नभ
राव्यो. वशी तेवोज ते देडकापासे भयो. अने
तेनें पगेवती चांपीमें मारी नांख्यो.

सार

भयमां कारण घण करीनें खोटां होयके. ते
जे अविवेकी अने मूर्ख है, तेमनें उपद्रव करे
के. पण जे विवेकी है अने धैर्य राखेके, ते ते
मूं मूळ खोली काहाके है, एठले जाण्यामां जा
वे है, जे आपणा मनविना विजुं कांई भयम
कारण भयो.

सिंह अपने बकरो

एक सिंहे एक बकरो डुंगर उपर चरतां दो।
 डो. त्वारे त्यांहां पोतानी मती नथी एवं जा
 एनें तेनें केहेके, अरे तू आवे बसमे ठेकाणे
 चाखो दादाडो चरके. एसां तनें म सुख के. गो
 चां खातो खातो एकाद बार पडोश, तो जीव
 खोईश, माटे अपने तो आ सार लागेके जे, तू हे
 ठे आव. अपने आ मेदानंमां कुंजी कुंजी घास
 के अपने मीठां मीठां झाडनां पांदडां के, तेखा ब
 करो उम्बर करे के, बापा तू केहे के ए बात
 खरी, पण तू भुख्या सरखो जणाय के. माटे तू
 हे ते ठेकाणे ऊ आवीने द्वारा जीवनें दुःखमां
 नहीं नांखे.

सुर

जे पुरुष बुभक्षित हे. अपने जेन लोकमां प्रा
 न्नाजिक पण नथी. एवे, कान्ह आपणा हितनी

बात कही तें आपणमें खरी सरखी लागी, तो व
ण तेमा उपर विश्वास राखीये नहीं. तेमां कां
ई पण कपड हवे एवं, जाणवु.

—००००—

बात २६

गिद्याळ अनें सहर

कोई एक सहर झाडना बड उबर पोतानी दा
ड घसतुं हतुं, त्यांहां एक गिद्याळ आव्युं. ते ते
में पुढेके, अरे तारा उपर कोई शत्रु बढातें आ
व्यो हे, एवं तो कांई आसपास नजरमां आ
वतुं, नघी. अनें अगवो दाड घसक. एनुं कारण
अं हे ते केहे. सहर उत्तर करे हे, भाई तें
खरी बात कही. पण तं जाणवु, नवरी ब्रेळा पो
तानां हवीयार घयो राखीये, शमाटे जे संकट
बलत नवराज मळये एमो शो भसो.

सार

घरमां आग लागे त्यारे कुवो लोदवा मोकळे,
ए मूर्खगुं काम हे. ज्यांहां सुधी बाल पणुं हे,

अनें

અંતે માયા ઉપર પિતા છે, સંસારનો હટલો ના
 ને પછો નથી. ત્યાંહાં સુધોનાં વિદ્યાભ્યાસ કા
 રવો, જેને કરીને યુવાવસ્થાનાં સુખ જાય. તેન
 જ યુવાવસ્થાનાં તે વિદ્યાનો અનુભવ લેવો, દ
 રીયો સ્વાધીન રાહસીનો, દુઃખ અસન ન રાહવું,
 દ્રવ્યનો સંયત્ન કરવો, જે, જેને કરીને હતાવસ્થા
 ના રાહાડા સુખનાં જાય. એવો વિચાર જે પ્રથ
 મથી કરે છે, તેનેજ સાવધાન કહેવો, તેજ રાહા
 ધો, તેજ માણસ, અને તેનેજ ચક્રલનું, સાર્વજનિક
 કાર્ય એમ જાણવું.

માત્ર ૨૭

ને 'કર્ચલાં'

કર્ચલું એ નામે જમાવર હોય છે. તેનો સ
 ભાવ એવો છે, જે તે વાંકું પાલે. કોઈ એક દિ
 વસે એક કર્ચલી પોતાની છોડીને રોસ પરાણી

મેં કહેકે. એ તું જા જગતની ચાલથી જુદી ચાલ
 ઢોલી દે. ઢોડી કહેકે. મા ચારી બુદ્ધી પ્રમા
 યે જાને સરી દીધેકે, તેવી જાં ચાલ ચાલું છે.
 મારી મજરમાં તે જો સોટી લાગતી હોય, તે જાં કેવ
 ચાલું. તેને જાને જાલમ રાખે તે પ્રમાણે જાં ચાલું.

સાર

એ વાતમાં વિજાને દૂષણ એહેલી છે, તેજ પોતે
 કરે છે. એવી વિજા શું આશ્ચર્ય. વિજાને શિષ્ટ
 મળ દેતાં સર્વને આવડે છે. પણ એ, તે ઉપદેશ
 પ્રમાણે પોતે ચાલે છે, તેને શાહાણો કહેવો.

—૩૩—

વાત ૨૮

ચોર અને દોકરો

શક દોકરો ચોરને ચોરને કુવા ઉપર રોવા
 બેઠો. ચોરે તેને પુછ્યું. શામાટે રાખે, ત્યારે તે
 દોકરો ઉપલાં સાતો સાતો કહેકે, એ ચારો

• પાનો

मानो लोटो दोरी तुटो तैची कुवानां पयो. ह
 ने ऊं गुं कर, छाने घेर छारां नावाप मारये.
 ए सांभळीने घेरे ते कलत पोतामो मांसही चने
 पेहेरवानां लुगडां कुवा उपर मेहेल्यां. चने कुवा
 मां 'उतरीनें घणी वार सुधी लोटो खोव्यो. पण
 अखो महीं पक्षी खाशा मेहेलीनें उपर आव्यो.
 चनें जुएहे तो होकरो देखातो नथो. चनें गां
 सडी, लुगडां एपण नथो. ते, ते होकरो लोईनें
 माथी मयो.

सार

घोर विजाने लुटे हे, माटे तेणे एबु जाणवुं न
 हीं जे छाने लुटमार कोई नथो.

वार्ता २६

घोर चनें कुतरो

कोई एक मनुष्यना घरनां सातर पाडवाने रा
 ते घोर आव्यो. तेने जोईने वारणा खानळ कुत

रो

देा हतो, ते चोरनें सांभो मसवा लाग्यो. त्वारे
 चोरे. तेना चागळ रोट लागो कडको नाख्यो. ते
 कुतरे खाधो नहीं. खने केहेहे जे, चरे पेहेलां
 तो छाने संदेह हतो जे चाटली राने खसीयां आ
 यो हे, माटे कोर्द भलो नहीं होय. पण हवे
 तो ते छाने खांच आगी एटले निखय यथो. जे
 तुं चोर हे माटे ऊं कारणे चागळ रुखीनें चा
 रा धणीनं घर राखीश. बासो चा घरनें बास
 पास तूं हे, त्यांची सुधो ऊं बावोज भगीश, एता
 संदेह नहीं. माटे तूं तारे मर्गि चाल्यो जा.

सार

काम करणारा होय हे, ते मूर्ख खपवा ला
 भीनें खांच आपोनें नम करेहे. यत् जे छोटां मा
 णस, प्रामाणिक, खनें खानिभक्त हे, ते खांच ले
 ईनें नम पता नवी.

बात २०

बकरी અને કુતરી

एक समये बकरी અને कुतरी एसनो जेळाय
चयो. त्यांहां वेहेलं कोण व्हायके, ए बातनो मां
होमांहे वाद चयो. त्यारे कुतरी केहेके, अं ए
क एक लेपे घणां बघां व्हाजं हूं. અને छाने
व्हावामां घणा महीना पण चता नथी. बकरी
बोली ते खरं, पण तुं व्हावामां दर लेपे घणी उ
तावळी घायके. माटेज तारां बघां आंघळां वे
दां घायके. तेवां छारे चतां नथी.

सार

उतावळमां जे काम करीये, ते कायुरेहेके.

बात २१

शियाळ અને नामडीयो

एक शियाळनो पक्वाडे पारथी पड्यो, त्याहां
ते

ते शियाळ दोडतां दोडतां पाक्यं. त्वारे रस्तामां
 एक नामडीयो उभो हतो, तेनें जोरनें ते शियाळे
 तेनी प्रार्थना करी, जे दानें तारा झुपडामां संता
 वादे, नामडीयो केहे संता, पक्षी शियाळ तेनां झुप
 डामा खुणामां संतायं, एडलामां पारधी पळवाडेयो
 आयो, तेणे ते नामडीयानें पळ्युं, तें चहोंयां ये
 नें एक शियाळ जतां दीवुं. कसुडामो बोल्हो, मा.
 एम ह्योडे बोल्हो मान पण शियाळ संतायं. हतुं. ते
 डेकाणं आंगळीवतो सानें करीनें देखाड्युं पण पार
 धी तेनी सान न समजतां चाल्यो गयो, ते मयां प
 क्षी, शियाळ हळुवे रचीनें मोकळीनें जवा लाग्युं. ते
 वखत नामडीयो शियाळनें केहंके, अरे आवीज ता
 री रीत, जे जेणे तारो प्राण बंचायो, तेनें पुच्छा
 विना जायके. शियाळे तेनं कथ दीवुं हतुं. ते
 मनमां धारीनें ते जवाप करेके. भार तारा बो
 लवा प्रमाणे जो तारी कति होत, तो तारो उप
 कार घालवानें ऊं चुकत नही.

सार

कूटलाक नीच एवा होयके, जे उपरची बोलवा

मां

नां आस सरखा जणाय, अने मनमां नाश करवा
नो उद्योग करे. उघाडो शत्रु होय, ते सारो पण
घोसानो बर्दनें मांहेयो शत्रुनं काम करे, ते हित
शत्रु जाणवो. बिन्यास घाती, महापापी, नीच,
तेनं ह्यो जोवुं ए योग्य नहीं.



वात ३२

माणस जेनें कुतरे करखो हतो

एक माणसनें कुतरे करखो. तेनें एक डो
शीये उपाय बतायो जे रोटलानो कडको लेईनें
या उपर बांध. पंखो ते कडको ते कुतराने खव
राव. एटले झेर उतरये. पंखो ते माणस-ते
प्रमाणे करेके, एटलामां एक डाहायो पुरुष ते
मार्गे जतो हतो, तेणे तेनें पुछ्यं. चरे तं या शं क
रक. तयारे घायेले ते वर्तमान कहां ते सांभळी
नें डाहायो केहेके. जो एवं के तो ऊं तारी पा

से चाटलुं मागी लेजुं हूं. जे चा तुं वणुं क्षानुं
कर, शमाटे जे जो चा बात सेहेरनां कुतरां आ
णसे, तो एक साणसनें करखावना रहेवा-देवे नहीं.

सार

चोरनें शिक्षा करवी ए योग्यछे. खनें ते न
करतां तेनी उळटी सेवा करे, तो ते क्षानी कर
वी. नहीतो शाऊकारनी शोभा रहे नहीं खनें
चोरमुंज माहात्म्य बधये.

—*—

बात २३

दैव खनें छोकरो

एक छोकरो कुवाना कांठा उपर सुतोहतो,
तेनें जोईनें दैवे अगाडो, खनें कहा. अरे तुं चा
कुवाना कांठाउपर सुतो छे. खनें कदापि कुवा
मां पहीथ, तो लोक तारो अन्याय नहीं केहे.
तो द्धाराउपर दोष मेहेलये.

सार

(૪૧)

સાર

સર્વ લોકોનો એજ રીત છે. જે એકાદિ વાત
સારી થયી તો કહેશે, જે ખત્તો કરી. અને લો
ટી થયી, તો દેવે કરી. એવો દેવના ઉપર દો
ષ મેહેલો, પણ પોતાનો કતીને દોષ મેહેલતા નથી.

વાત ૨૪

લોભીયો માણસ

કોઈ એક લોભીયે માણસે પૈસા પેદા કરીને છે
તરમાં દાટી મેહેલ્યા, ત્યાંસાં નિત્યે એક બે વાર
જતો રહે. અને પૈસા પુરેલું ઢેકાણું જોઈને મન
ન સંતોષ પામે. તે તેનું કાલ્ય ચાકરે તરમાં આ
ળીને, તે ઉપરથી તર્ક બાંધ્યા. જે આપણો ધગો
આ ઢેકાણે નિઘ નિઘ જુએ, માટે અહીંયાં કાં
ઈ છે. પછી તેણે, રાતે આવેને તે ઢેકાણું હાથને

જાયું.

जायं. तो मांहेची द्रव्य हाथमां आव्यं. ते से
ईनें नाशी गयो. बिजे दाहाडे सोभायेो नित्य प्र
माणे त्यांहां आवीनें जोवा लाग्यो, तो माहे दा
टेलुं द्रव्य हनुं ते गयं. ते जाणीनें तेणे माथामां
थूळ घाली, छाती कुटी, माथं कुट्यं, अनें हाथ हा
थ करीनें रोवा वेठो. ते कपडे घेर जाय नहीं.
हेली वारे तेना पाडोशी तेना पैसे आव्यो. ते
णे समाचार पुछ्या. त्यारे सोभायेे सर्व समाचा
र तेनें कह्या, ते सांभळीनें पाडोशी केहेके, अरे
भाई ऊं एम जाणुं कुं जे, तारुं कांई गयं नघी,
कां जे तुं तारा मनमां एम आणिश नहीं. जे
झारीपासे पैसो हतो ते गयो. अनें आ ठेकाणे
नित्य जोतो हतो तेम जोतो आ एवं धारजे, जे,
जे दाव्युहे ते हे.

सार

सोभायेो हे तेनें पैसो हे तोपण दरित्री जाण
वो. ग्रामाटे तेनाची हनें पैसे उपभोग चतो न
वो, अनें वल्ली बिअं मेळववानें मरता सुधी के

प्रकारनां

प्रकारनां अनेक पाप निरंतर करे है. देखोवा
 रे तेना पैसो चोर छेई जाय. तेना कपाळमां दुः
 ख, शोक, संताप, अने मुखा पछी अते नरक प्रा
 प्ति जाय.

—*—

बात ३५

कडकड़ता पयडानी

कोई एक गाडोवान् रथ हाकतो रहतो, ते र
 थमं एक पयडं घणं कडकड़वा लाग्यं. ते जोई
 ने गाडोवान् विसय पाग्यो. अने पयडाने पुकेछे,
 अरे बिजां पयडां कडकड़तां नथी. अने तुंज कां
 कडकडे छे. ते बोल्यं छाने घणं दुःख पायछे. ते
 द्वाराधी संहेवातुं नथी, माटे रडवूं आवेछे.

बार

जे दुःख सहीने लोकोने दीनपसं देखाइता न
 थी, तेने धीरजवान् जाणीने लोक ते उपर च

भी

બી પ્રીતિ રાલેહે. અને જે હાય હાય કરીને લો
કો આગળ દીન વચન બોલેહે, તેને લોકોપાસે
બી કાંદે મળતું નથી. અને પોતાનું હસકાપણું
માત્ર તેમને દેલાડે છે.

વાત ૨૬

હાહાયો સિંહ

કોઈ એક સિંહે જનાવર માર્યું, અને તેને લા
નારો છે, એટલામાં તે રસ્તે એક ચોર જતો હતો,
તે સિંહના હોા આગળ આવીને સિંહને કહેહે, અ
રે સિંહ, તારે મારે અર્ધા અર્ધ, સિંહ બોલ્યો, અ
રે મફટ અહીંયાં તારું કાંદે નથી, અને નિર્ભય ચ
ઈને ખાન માગવા આવ્યોહે, તો જાનો માનો તા
રે માર્ગે ચાલ્યો જા, મહીતો માર્ધા ઝડપ. પછી
તે ચોર ચોથીવાળો ચઈને ગયો, તેટલામાં તેજ
માર્ગે કોઈ એક મલો માળસ જતો હતો, તેણે સિ
ંહને દીઠો એટલે વિહાને તે માર્ગે મુકીને બિજે

માર્ગે

मार्गे जवा लाग्यो. त्वारे सिद्ध तेनें आदरे करीनें
हाक मारीनें केहेके, अरे विहीन महीरे, विही
न नहीं; तूं भलो माणस हे, माटे आमांवी भा
ग तारे जोईतो होय तो आव. हमणां या ज
मावर आपण बे बेहेची खार्च्ये; एवं कहोनें ते
सिद्धे जनावरचा बे आग कंर्या. तेमांने एक भा
ग ते भला माणसनें माटे राख्यो; अनें बिजो भा
ग पोते खार्चनें अरण्यमां गयो.

सार

डाहाया पुरुषनें ए योग्यके, के जे भलो, जे
गुणी, तेनें पासे राखवो; अनें जे गळे पडोनें मा
नगारा, मोठं, मोठं बोलनारा, बड बोलो, दांड,
एवं मनुष्यनें आशय आपवो नहीं. जे मनुष्य
अधिकार उपरं हे, तेणे तो गुणी मनुष्य मेळव
वा माटे प्रयोग अम करवो.

जात

૧ ૪૬ ૧

વાત ૩૭

દીપડું અને માંદી મધેડી

એક મધેડી માંદી પડી હતી, તે મરણે ઈશી વા
ત પડી, તે સાંભળીને બે ચાર દીપડાં તેનો સ્વર
ર જોવા આવ્યાં. તે તેના વારણામાં હોંકાં ઘા
ણીને હલવે રહીને પૂછે છે, જે વાર્ડની શી સ્વર છે.
તે સાંભળીને તેના હોંકરો ઘરમાંથી બાહર આ
વીને ઉત્તર દેહે, જે તમે જેવી વાર્ડની સ્વર રહ્યો
હો, તેવી નથી.

સાર

માંદાના સમાચાર જોવાને જે આવે છે તેમાં કે
વલ મમતાયે આવનારાનો થોડા, પણ પોત પો
તાને અર્થે આવનારા સવા ઘણા.

—૦૦૪૦૦—

વાત ૩૮

દીપડું અને વકરીનું વણું

એક વકરી વારણે ધરવા જતી હતી, તે વણ
ત તેણીયે પોતાનાં મચાને કહ્યું; અને માંહેથી ક
માડને

माडने सांकळ उडकाव, ते ऊं संध्याकाले पांही
 आवं त्यांहां सुधी कोरने उघाडीश महीं त्यांहां
 पासे एक दीपडं हतुं, ते तेवात सांमळोनें बकरी
 ग्या पक्षी केटलीक बारे कमाड ठोकवा लाग्युं.
 अने बकरीना सरखो घांटो काहाडीनें, होकरा
 कमाडनी सांकळ उघाड, एम बोल्ह्युं. बच्चुं मा
 ना कह्या उपर नजर राखोनें खडकी मांधी जे
 वा लाग्युं त्यारे ते तेनें केहेके चरे तुं तारे मांग
 जा; तुं बकरीना शब्द सरखो शब्द काहाडक स
 रो, पण तारे आकार दोपडा सरखोके, माटे ऊं
 तनें कमाड उघाडनार नथी.

सार

जे होकरां मायापना कह्याउपर नजर राखेके,
 अने तेमना कह्या प्रमाणे चालेके, तेनें दुःख पड
 नुं नथी. घरडांना कह्या उपर विश्वास राखवो
 एमांछोटुं कारण एके, जे आपणां होकरानुं खो
 टुं कोर कदापी इकतुं नथी. शमाटे जे होकरानुं
 खोटुं ते येतानुंज खोटुं. विजुं बळोएजे ते बरे हो

डां

डां माटे ते सारा लोटायां होकरां करतां घणं
समजे. एवां जे मा बाप, तेमनु कहुं जे मठारां
होकरां सांभळतां मंत्री, ते होकरां नुं साहं पण
बसं नवी.

—**—

वात ३८ -

कीडीयो अने तीड

उन्हाळ्यामां कोर एक बसते कीडीयो पोता
ना दर आगळ दाणानो ढगलो करीने ते दाणा
में तडकामां सुखवमानो उद्योग करतो हतीयो.
एटल्यामां त्यांचां भूखे. व्याकुळ एवं एक तीड आ
बु, ते रांकडुं झां करीने बोख्युं, जे बेहेनो एक
बोखानो दाणो आपीने झापो. जीव बचावो, तज
जे घणं पुण्य बरो. ते बसते तेमांनो एक कीडी
केचेहे, अरे सुगार्डमां अहो दाणानो संघड कर्यो,
तेवो ते कां न कर्यो. ते बोख्यो सुगार्डमां झा
रा दादाडा खातां, पीतां, नाचतां, अने आनंद

करतां

करता गया. ते बहुतमां आगऊनी चिंता ह्यारा मनमां एकेवार आवी नहीं. ते सांभळीने की ही बोली. भाई एवं हे त्वारे जे आगऊनी तज बीज न करतां लायके, पोयेके, आनंद करेके, ते केलीवारे भूखे मरेके, तेमां कोई शुं करे.

सार

जवानोनां जे सारवंध यईने पैसो एकटो करे के, ते आगऊ घयडपणमां दुःख पामता नथो. एवं प्रत्यक्ष जोईने कोटलाक पुरा के ते तरुण आवस्थातां पेदा करेके, तेठलुं उडावी देके. त्वारे ते पोताना संनमां शुं समजता ह्यो, जे आ पणा हावण अटकणे त्वारे जे वस्तुओ जोईये त आकाशमांथो पडये शुं? ओ कोंकरां, भाई, के बिजां सुगां, एमले आवणने घयड पणमां पाव्यां ता एण ते भर्म दाखल. तेमांहे ते कोंकरां या रि लईने आपणो पास रेहेये, जने. सातापिता आपणने भक्ताये करीने आपणी सेवा करणे, तेने

पण

पण मरुंसे शो. चाटे आवणी पासे इव्ह हरे-
तो, ते हडावस्थामां काममां आवसे. एडला मां
टे ते जवानांमां पेश करीने एकडु करी राखु.

—*—

बात ४०

होकरो अने मा

कोई एक होकरो निसालमां साखवा जतो ह-
तो, तेणे एक दाहाडो कोई होकरानी अनस चो-
री, अने ते पोतानी माने आवी. तेणे ये होक-
राने शोधा करी जोईये ते न करी, अने उळटां
होकरांमां बलाण करीने तेनें काई साबुं आव्युं.
ते उपरची पळो ते होकरो छोटा बतो गयो,
अम छोटी छोटी चोरीये करवा लाग्यो. को-
ई एक बळत ते चोरीमां पकडाये, तारे तेनें
सुळीउपर घालवाने खेद गया. ते जेवामे जो-
कोनी बट मळी. त्याहां तेनी मा पण आवीने ये

पळी

बड़ी रहीने रोती હતો. તેને જોઈને હોકરે રા
 જાના ઘાકરોને કહ્યું. માર્દયો એક વાર આ વ
 સત તે દ્ધારી માનો અને દ્ધારો મેળાપ કરો.
 તે સાંભળીને તેમને દયા આવી, અને તેમને તેને
 માફે બોલાવી. તે વસત હોકરે રીસ ઘડાવોને
 માના કાંનને વધકું મર્યું. તે જોઈને લોક કેહે
 વા લામ્યા જે શો આ દુષ્ટ હોકરો. જુઓ, જુ
 યો, જે છૂલોયે ઘાલતી વસત પણ મહા પાપ કરતાં
 ઘુકતો નથી. તે સાંભળીને હોકરે ઉત્તર કર્યો,
 મજનો દ્ધારી વિનંતિ સાંભળો. આ દ્ધારી મા
 નો આ વસત હું પ્રાણ લેજું, તો પણ દ્ધાને દોષ
 લાગનાર નહી. એવું શામાટે કેહેમો, તો હું જા
 રે મ્હમો હતો ત્યારે મિસાલના હોકરાની એક
 અમલ પોરીને આદ્ધારી માને આપી; તે વસતજ
 મો ણીયે દ્ધાને મિદ્યાં કરી હોત, અને પાવાનું
 આપ્યું ન હોત, તો આજ આ દશા માણે આવત.

સાર

જે છોકરાં મૂર્ખ થાય છે, અથવા સુચાં થાય છે, તેમાં ઘણ કરીને માવાપન લાડ કારણ છે, કા જે માટલે કાંઠો જેવો પોટાડીયે તેવો ચોટે, તે સજ વાઝકનો વદિ ત્યાં પળમાં એ માર્ગે વઝવા હાય તે માર્ગને તે સહેલો નહીં, એ માટે માવાપ થયા છોકરાંનાં એ દુહાં હોય, તેમજે છોકરો મ્હાનો હોય ત્યારે તેને સારે માર્ગે વઝવાડવામાં આવડત કરવું નહીં. જામાટે જે છોટો થયા પછી લાલો રૂપેયા ભરત કરે, તો ઘણ તેના દુર્ગુણ આવે નહીં. પછી તે એટલું પાપ કરશે તેનો અશ્વ પરમેશ્વર આગળ તેનાં માવાપ, દુહાં, થયોને દેવો પડશે.



વાત ૪૧.

મધપૂડો અને રીંછ

રૂઠ રીંછ એક વાડ પોઢીને માંહે ગયું. જા જે ત્યાંનાં મધપૂડા થયા હતા, તેમાનું મધ લાવા

मा लाग्युं ते बलत तेन, बेर खेवा माटे सघज्जी
 माखीये ते उपर तुझे महीये. बल तेना मरीर
 मुचामहुं जाहुं, जने कठण, माटे तेने खगार दुः
 ख भयुं नहीं. त्वारे माखीये तेना नाक कांन
 उपर चटका भयी. ते बेदमाये रोंछ घेलुं बर्द
 ने, तेणे पोताने जले करीने पोताना मक. का
 नमं चामहुं उलेडी मांस्थु. एवा अपराधने पो
 ताने द्वायेज शिक्षा भयी.

सार

विजाने जे दुःखदे तेने कोई प्रकारे शिक्षा का
 यज.

—•—•—•—

पात ४९

बलाडे जने कुकडा

एक बलत-बलाडामा मलमां लाग्युं के कुकडा
 जे मारीने खज. पछी. एक दिवस कतारिने

मोडाम

ઘેરોઠમાં તેને યોચિતો પકડ્યો. તે વચ્ચે કુકડો
 ડો તેને કેહેલે, અરે અરે તું છાને મારીશ નહીં.
 બલાડે પુછું, યામાટે? તે તેને કેહેલે, અરે લોકોને
 દ્વાર કાન ઘણું છે. જાં સવારમાં બોલુંકું તેથી સ
 ર્વ લોક સાવધાન થઈને પોત પોતાને ધધે વઢ
 નેલે. બલાડો બોલ્યો અરે ઘટલા માટેજ દ્વારે
 તને મારવોલે; જે તું કટોર ઝબ્ડ બોલીને નિત્ય
 માણસોની જંઘ મેંહેલાવલ. તે તેને મારવો એ
 જ યોગ્યલે. ધિજ, વઢીતુ એવો દુષ્ટ છે, જે પોતા
 ની મા બેહનની સાથે સંગ કરવામાં આવું પાકું
 જાતો નથી. કુકડો કેહેલે, અરે દ્વારા ધણી
 ને રૂંઠાં અને વચાં જોઈયે શીયે માટે. જાં તે ક
 ર્મ કરુંકું, અને તે ચદ્વારો સમાવ પળ છે. તે
 વચ્ચે બલાડો રીસ ખરાબીને કેહેલે, અરે દુષ્ટ
 હવે બોલવું પુરું કરીને શીખ વંધ કર, તારા સ
 રસા દુષ્કર્મને જીવાડવો. એ યોગ્ય નથી, એજ સહ.

सार

दुष्ट मनुष्य अधिकार उपर है, तो ते प्योताना मननं भायुं करेज. तेनी आगळ आपणुं गुणी पणं अथवा निरपराधी पणं आपणनें राखी सकतुं नथो; एवा पुरुषनें पापनुं भय देखाडवानां पण काई फळनथो. तेनुं मन पाप करतां करमां कडण थयुं होय हे. ते फरीषो पाप करवानां बिहोतुं नथो; माटेप्रयत्न चाले तो एवा दुष्टनें अधिकार उपरची काहाडवाना उपाय करवो.

—*—

वात ४३

घासनी गंजी उपरनो कुतरो

एक कुतरो घासनी गंजी उपर बेठो हतो, त्यां हां एक भुल्लो बळद घास खावानें आयो, ते कुतराची सहेवायुं नही. माटे कुतरो बळदनें भसवा लाग्यो. त्यारे बळद तेनें तिरस्कार करी

नें

મેં કહેલે, ચરે ગીચ આ ઘાસ તું જાતો નથી, આ
મેં વિજાને જાણા દેતોય નથી. ઇશો જે તું ઠુક
શે તમે સદા ત્રિપતિ રજો.

સાર

મત્સર દટલે ચરેહારી સંસરણો વિજો દોષ ન
થી. કામ, ક્રોધ, લોભ, ઇત્યાદિક જે મનના દો
ષ છે, તે કારીક ચાર રહીને જોણા જાયલે, પણ
મત્સર ક્યારે પણ જોઈએ જાતે નથી. વત્તો વત્તો
જ્યોતો જાયલે. જ્યેં જ્યેં જ્યેં વધેલે તેમ તેમ વત્તો
સંતાપેલે. જાનાટે જે વિજાનો વિદ્યા, ધર્મ, પ્રતિષ્ઠા,
જોરને આ સઘળું જ્ઞાને હોય તો સારું, જ્યેં જ્યેં
ન હોય જ્યોતના જાયલે, તે કોઈ દાહાડો
કરી જાય જ્યેં મત્સરીને સુષ યાંય દિવસ આવે
જહીં. માટે મત્સરી નિરંતર દુઃખી રહે છે.

कुतरो अने गाडरां

एक कुतरे गाडराउपर फर्दाद करी, तेनो इ
मसाक करवाने चितरो. अने गोध पक्षि ए पंच
बया. तेथोये कुतरानी. तर्फनी साक्षि काईज न
लिधी अने गाडराने अपराधी ठराव्युं. एवो इमसा
फ चतावेतज कुतरे गाडराने मारी नाख्युं. अ
ने तेनुं मास ते अधर्मि पंचे मळीने वेंहेचीं खाधुं.

सार

चोर, लुच्चा, ठग, अने घातकी, एमनाची दुः
ख पामे. त्यारे लोक पंचमी पासे आवे. ते प
च जारे लांच बात्ते अथवा वादीनी घरने तेने
घात करे, एचणुं घणुं पाप बाय. जे पापोबच
एका दुःखीने निवासो से, तेनुं कोर्द दिवसे सा
हं नबाय. लांच सेईने विजानो घात करे, ते

से,

એ, તે સાંચ ન સાધી, તો વિષ સાધું; તે તેનું મસંતા
ન કરે. અને જે રાજ્યમાં એવા દુષ્ટોને શિક્ષા થ
તી નથી. તે રાજ્ય નિષ્કાંટક છે તો ધણ વહેલું
જાય, વ્યાય હોય તોજ અવતમાં રાજ્ય રહે, તે વ્યા
ય નોંજ એ નાશ કરે તે મૂર્ખ પોતે નાશ પાને.

—૦૮*૦૦—

વાત ૪૫

બકરાનું વચું અને ચિતરો વાઘ

એક બકરાનું વચું એક ઝૂંપડા ઉપર ચડાં હતું.
તે ઝૂંપડા તલે એક ચિતરો વાઘ ઉભો હતો, તે
જેં જોઈનેં વચે માલો દેવા માંડો, ત્યારે તે ચિત
રો તેને કહેલું. અરે મીઠ તારા આ બોલવાથી
આને દુઃખ લાગતું હશે, એમ તું મનમાં આમોશ
નહીં. હું આણું છું એ તું આ અધોગ્ય બોલતો ન
થી, તો જે ઝૂંપડે તને ઉભો રહેવાને આશય આ
પ્યોલે, તે ઝૂંપડું બોલેલું.

સાર

गालो देके, खपवा निंदा करेके, ते माणस पो
 तानु हलका पणु मान देखाडेके. आश्रयना बळबो
 एकादि बलत गालो देनारनें, खपवा कांई दुर्भाषण
 करनारनें, प्रत्यक्ष शिक्षा कराती नवी. माटे तेणे जं
 छोटा एम मनमां आणवुं नही. तेना शरीरनें प्र
 त्यक्ष दंड थथा नही खरो. पण प्रतिष्ठानें बढो
 लाग्यो. ते शुं शिक्षा नही? माटे जे कांई एवा
 हलका मनम्यवी अपमान पाग्यो, तेणे पोताना
 जीवमां खेद आणवो नही, विचार करवो जे आ
 सामर्थ्य अपमान करनारनें नवी, तो जेणे एनें
 आश्रय पावोके ते आश्रयन सामर्थ्यके. तेन जे
 कोई आपणो, पछवाडे आपणो निंदा करे, ते सनि
 लोनेपण संतापकरवो नही. जाणवुं जे ते नीच
 छोडे बोलवावां विहीयेके, आडे पछवाडे सोलेके.

(૬૦)

વાત ૪૬

શિયાળ અને સિંહ

એક શિયાળે પ્રયમજ સિંહને દીઠો, ત્યારે મ
જ પામીને તેને પળે પહોં. અને કોવડ દીન વાળો
એ બોલવા લાગ્યો. ત્રિજી વણત મેળામ થયો.
ત્યારે ધૈર્ય રાણીને તેના સામું જાઈને બોલવા લા
ગ્યો. અને ત્રિજી વણત સમાપ્ત થયો, ત્યારે પા
સે જાઈને તેની સાથે બરોબરીશવે. મશકરી કર
વા લાગ્યો.

સાર

આપણી જે છોટો છે, તેની સાથે ચર્તવવામાં
શિયાળના ગુણમાં જે બે ગુણ દીઠા, તે ન લેવા. એ
ક મધ્યમીત જાઈને દીન વણી બોલવો, અને ત્રિજી
મર્યાદા મુકીને બરોબરીએ ચાલવું. તે આશ્ચર્ય
જાદુ રાણીને મર્યાદાથી છોટા સાથે ચર્તવું.

અવધ

(६९)

बात ४७

हंस अपने बगलां

एक खेतरमां हंस अपने बगलां नित्य उपद्रव
करतां हतां, ते जोरनें एक दिवस ते खेतरमा
भणी सुतार्ई रहीं पोताना चाकरो सुद्धां जोचि
तो तेसो उपर तुटो पड्यो। ते वखत हंस शरी
रे भारे अपने जड गांठे वणाक हंस मार्या गया,
अने बगलां शरीरे हलकां भाटे झटोझट उडी
गयां.

सार

शत्रु पकवाडे लाग्यो होय त्वारे दहित्री करतां
धनवान् घणं दुःख पामे. लंगकरमां लटलो जे
सो पडाव उपर मुख दायक हे, तेसो बिजो वखत
नधी. तेम द्रव्यपण, सुकट वखत सांभाळवुं ए
घणं कठिण हे.

बात

સવતર અને કિડી

એક તરશી કિડી બેહેલા ઉપર પાળીં પિવાને મચી હતી, તે ઘણા પાળીમાં પડીને તળાતો તળાતી જવા લાગી. તે એક સવતરે દાઢી. અને તેને દયા આવી. માટે તેણે પોતાના ઘાંચેવતો એક છાહનું પાંદડું તેડીને પાળીમાં નાંચ્યું. તેને આશ્ચર્યે તે કિડી તેડે આવી. પછી એક દિવસ એવી કાત થયી, જે તેજ સવતર એક ઢેકાળે બેઠું હતું. તે જ જાળે એમ એક પારખી તે ઉપર જાઝ નાંચતો હતો. તે તે કિડીયે જાળું ઇટલે તે જ સતજ તેણીયે જડને સવતરને પળે ચટકો મર્યા, તે પીડાયે તે અકસ્માત હાથ પગ પછાડીને ઉડી નયું.

સાર

ઉપકાર કર્યા હોય તેને પ્રત્યુપકાર કરવો એ માણસનો સહજ ધર્મ છે. તે કર્યા માટે કોઈ એ જ જાણે જે લોક દ્વારા પ્રશંસા કરે એ રીતે જો, તેણે પોતાનાં માણસનો પ્રાણ જ સીધો, અને

પાડોશીનું

વાહોશીનું ઘર ન વાચ્યું, તેમાટે પણ પ્રશંસા કઈ ન રહે? ઉપકાર કર્યો હોય તેને પ્રત્યુપકાર ન કર્યો તેમાં કાંઈ વસ્તુ કર્યું નહીં. પક્ષી જે પ્રત્યુપકાર ન કરે અને ત્રિજે ઉપકાર કર્યો હોય તે મનમાં ન ગાળીને તેને દુઃસદેવા પ્રવર્તેલે, તેનું મોં ચપણું કેટલું વર્ણીયે. આ કિહી અને સ્વતરનો વાતમાં મુલ્યત્વે કરીને આ મોતિ સુષ્કી, જે પ્રત્યુપકારની રૂઢા ન કરતાં ઉપકાર કરવો, જે ન સ્વતરે કિહીઉપર કર્યો, એવો ઉપકાર કરવાનું જેને મન તે કેવળ દેશ્વરનો પુરુષ જાણવો. કહ્યુંલે. વિજા પાસેથી લેવું એ માણસનો રીતિ અને ફલનો રૂઢા ન રાસતાં વિજાને આપવું એ દેવની રિતિ હોય.

—*—

વાત ૪૯

પારથી અને પક્ષી

એક પારથીયે જાલમાં પક્ષી પકડ્યો. ત્યારે પક્ષી પારથીને કહેલે, તારે જે તું જાને આ વલ

त जीवत दान चापे, तो ऊँ तने बिजां घणां पछी
 येने खेतरीने तारी जालमां चाणी आपुं. सार
 धीये उत्तर करीया, चरे दुष्ट तने होडवो नहीं, ए
 टलुंज ओ पुर्वे धार्युं हतुं. पण हवे आ तारा
 भाषणची तने जीवथी मारवो, ए ने निश्चय क
 रीया, जे, जेतुं तारा एकलाना जीवने वास्ते भाई
 बंध, नात, सगां, एमने घात करनारो, ते तने
 मारवो एज योग्यके.

सार

राजद्रोही होयके, ते आपणा भाई बंध, ना
 त, सगां, एमने घात करीने शत्रूने मळीने पोते
 सुखी थवाने दळेके. पण तेज शत्रु पोतानुं का
 म ययं, एटले पछी तेने जीवतो मेहेलता नथी.
 कदापिक मेहेले तो जनमां ते द्वेष पण करेके.

—**—

वात ५०

गड धने कागडो

एक पर्वतने हेठे गांडरांनुं टोळुं चरतुं हतुं, ते
 पर्वतना

पर्वतना शिखर उपर एक गरुड पक्षी बेठोहतो.
 तेणे ते उपर झडप मारीने, तेमांना एक गाडं
 राना वांसा उपर वेशीने, तेनें पोताना पगना बं
 धमां लोडने, आकाश मार्गे लोड गयो; तेनुं संधा
 न ओढने एक कागडो झाड उपर बेठोहतो, ते
 पण तेम करवा गयो. ते वलत तेना पगमाड
 राना वाळमां भरार्ई रह्या, अनें तेणे बरका पा
 डवा मांड्या, ते शब्द सांभळीनें गाडरां चारनारो
 पासोहतो तेणे धासीनें तेनें पकडो, अनें तेनें प
 ने दोरी बांधीनें पोताना होकराने रमवा आ
 प्यो.

सार

विज्ञाना गुणनी बरोबरी करवी, तेमां पोतानी
 शक्ति अने स्थिति एवोने प्रथम विचार करीने क
 रवी, नहीतो तेज दुःखदायक वायके.

सात

लोभी अने मत्सरी

एक बख्त लोभी अने मत्सरी ए बेजग देवी
 मा मंदिरमां तप करता हता. तेमने देवी प्र
 सन्न बर्हने बोली. अरे तमे जे मागशे ते बरदा
 न आपोश, पण ते एवं आपोश के प्रथम जे जैट
 लुं मागशे ते करतां बमणुं विजाने मळशे; ते सां
 मळीने लोभीये विचार कर्यो. जे द्वारे पेहेलुं मा
 गवुं मही, घामाटे जे, द्वारे जेवा लोभ के, तेवा
 एने पण के, माटे ए घणुं द्रव्य मागशेज, एटले ए
 ही छाने एना करतां बमणुं सहजज मळशे. ए
 वो निश्चय करीने ते बेव्ह्योज नहीं; ते जाणीने म.
 त्सरीये देवीनी प्रार्थना करी. हे देवी जो तू का
 जे प्रसन्न के, तो द्वारी एक जाल फोड पकी दे
 वीये तबुं हो एम केहेतांमाज मत्सरीनी एक
 अने लोभीनी बे थालो फुटीयो.

(६७)

सार

लोभ अने मत्सर ए केवा खोटा वे, ते या वा
तमां स्पष्ट आचके, लोभी वत्ता द्रव्यमी आशा मा
टे पेतानुं ईच्छुं देवीपासे सांगनें सुखी थयो न
हीं, अने मत्सरीचे विजानें सुख नथाय माटे पो
तानो एक आंख फेडोनें पेताना जीवनें दुःख
करी लिधुं.

भाग पृश्

घोडो अने गधेडो

एक सिलेदारनो घोडो कसवी जीन लेईनें,
लगाम चाबतो, फरफराट करतो, रस्तामां जतो
हतो. तेणे त्यांहां रस्तामां भारे चपाएलो हळ
बे हळुवे चाली के एवो एक गधेडो दोडो. ते
नें घोडो धमकी देईनें केहेके, अरे पोईस पोईस.
पोईस नहीं थाय तो ऊं तनें हमणाज द्वारा

पगतळे

પગલે કચરી નાંહીશ, ગધેડો વચારો નવલો તે
 જે વિચાર્યું, જે વદ્યામાં ચાપણું સારું નથી, એવું
 સમજીને ઉતાવલો ઉતાવલો એક કોરે ગયો; કે
 ટલાક દિવસ પછી એવી વાત થયી, જે તેજ ઘો
 ઢામે લડાઈમાં ગોઠી વાગી; એટલે સલેદારને ન
 કામો થયો. ત્યારે સલેદારે ઘોઢાને માઢાં ક
 રનારાને ઘેર વેચ્યો. પછી તેપણ માર વેદેવા
 લાગ્યો, એક ઘણત તે પીઠઉપર છોટી કંઠાઠ
 લેઈને જતો હતો. તેને તે ગધેડે દીડો, ગધેડા તેને વો
 લાવીને કેહેલું, જે ગોપાલ શેઠજી, જે ગોપાલ તે દા
 હાડે હાને પગલે ચાંપતા હતા, તે તમેજ નહીં? હો
 ત્યારેજ અવિધ્ય જાણ્યું હતું, જે એકાદે દિવસે ત
 મારો ગર્વ ઉતરશે.

સાર

જે પુરુષ અહંકારે કરીને છોટા પળું મેઢવવા
 જાયલું, તે વઢવાન થયવા છોટાનો અશ્વિત છે,
 ત્યાંહાં સુધી લોક તેને બાહિરથી નમેલું. પણ તે
 મનો આત્મા તેના ઉપર દેવ કરેલું. તેજ પછી
 જારે

जारे दैव फरेके, त्वारे नवलो बायके, एटले छो
क तेनाउपर दया न आगतां चेष्टा करेके, वा
स्ते छोटापणुं मेळववानो ए रस्तो नही, ते रस्तो
एके जे. जेनें छोटापणुं मनषीं मधी जोईतुं त्वा
रे तेनी पडवाडे ते बळात्कारे बाय के, अमे जेनें छो
टापणुं जोईये छीये तेनाची ते बेगळुं नासे के. जे
पुरुष मान मागे के, तेनें ते मळतुं मधी, अनें जे
स्तुतीनी दृष्टां करेके, तेनें निंदा मळेके; अनें
जे नस अनें जेनें अभिमान नही तेनेंज छोटाप
णुं मळे के.

—००*००—

बात ५३

शाऊडी अनें साप

एक शाऊडीये सापनी प्रार्थना करी, जे तुं हा
में तारा दरमां रेहेवानो जग्या आप, सां कां

ઈં વિચાર કર્યા વિનાજ તેને આવં કહ્યું, તેથી તે સાપના દરમાં પેઠો. ત્યારે તે બલત તેનાં કાં ટા સરલાં પિંકાં સાપના શરીરમાં ભરાયાં, તેથી સાપને ઘણું દુઃખ થયું. ત્યારે સાપે તેને કહ્યું; શા ઝડી વાડ, હવે તમે અહીંયાંથી જાઓ, અહારા થી તમારો ઉપદ્રવ સેહેવાતો નથી. તેણીએ ઉત્તર કર્યો, ઝં શામાટે જાઝં; છાને. તો અહીંયાં સારું મમેલે, જેને અહીંયાં ન ગમતું હોય તે જાય.

સાર

કોટલાક પુરુષ સ્વભાવથીજ એવા હોટા હોય છે, જે તેના સગથી દુઃખજ થાય, માટે કોઈની સાથે માર્દવધાર્દ, અથવા રોજગાર, અથવા સગાર્દ, કરવી હોય, તો પ્રથમ તેની જાત, ગુણ, રહેણી, રીત, ય ઘણી ચોક્કશીથી જોવાં, શામાટે જે, સંબંધ કર્યા પછી જો તેને અને આપણને બને નહીં, તો યશી ઘણો પક્તાવેર થાય છે.

पारधी अनें खबुतर

एक पारधी बंधुक छेईनें अरण्यमां मृगया रम
वा गयो हतो, ते एक झाडउपर खबुतर बेठुं ह
तुं, ते उपर तकाव करीनें बंधुकनी जामगरी दा
वतो हतो; एडलासां तेनें पगे सापे दंश कयो,
ते पीडाये ते ध्याकुळ यतामांज हाथमांथी बंधुक
हैठो पडो, अनें सघळे शरीरे झेर व्यापी गयुं. ते
नो जीव जवां लाग्यो, ते बल्लत पारधी पोतानें
केहेके, जे छाने जे आ शिक्षा यथी ते योग्यज य
थी. शामाटे जे, जेजुं विजानो जीव लेनार हतो,
ते छाने प्राणांत ययो, ते न्यायज ययो.

सार

विजानें पीडा करनारो पोते पीडा पामेके, जुओ
आश्चर्य, जे परपीडा करनारो पोतानुं मन कठण
करीनें लोकोनें हजारो उपद्रव करेके; तेमांनो
एक उपद्रव जो तेनें थाय तो एवं लागे जे, हाय
हाय, हवे शुं करुं! कम करुं! ऊं सुकुमार आ दुःख

कम

कर्म सहोश, पण जे म आपणथी सेहेवातुं नथी, तेम
ज विजाथी पण सेहेवातुं नहों होय, एम ते मूर्खना
मनसां आवतुं नथी. लोकोनी साथे सेहेवार क
रती बखत पोताना मननें विचार पुख्खा; एटले
ते जे नाति ह्ये ते प्रमाणेज केहेये, ते प्रमाणे चा
लेथी कांई धोको नथी, पण आपण ते न करी
ये, अनें आंख्या मोचीनें काम कोथादिकमें बग
यईनें, दुष्ट कर्म जो करवा मांडीशुं, तो पाप
नो घटो भराये एटले एकादे दिवसे परमेश्वरनो
कोप यईनें, हरकोई हलका मनुष्यनें हाथे आ
पणनें शिक्षा थये. एमाटे आपणुं सारं पाप ए
वी जो इका होय तो, आपणे लोकोनुं सारं करतां
जवुं, तेथी आपणुं सारं थये.

—**—

वात . ५४

कणवी अनें शाहामृतम

एक कणवीये खेतर बाय्यं हुतुं, तेमां बगलां त
था हंस एमनो उपद्रव घणा थयो. त्यारे कण

वीये.

બીયે. હેતરમાં જાળ નાંખીને ઘગા હસ તથા વગ
 લાં પકડ્યાં. તેમાં તેસાથે એક શાહામૃગ પળ સહજ
 આથો હતો, તેણે પકડાવો, ત્યારે તે શાહામૃ
 ગ કળત્રીની પ્રાર્થના કરીને કહેકે, ભાર્દરે તું હાને
 મારીશ નહીં, જો જં હસ નથી, અને વગલોપળ
 જં નથી, ગરીબ શાહામૃગ કું, જં હારા ધર્મ પ્રમા
 એ ચાલુંકું, અહો માવાપને દુઢાવસ્યામાં અહારા લ
 મા ઉપર બેસારીને પોષણ કરીયે કીયે, કળત્રી કો
 હેકે, ભાર્દરે એ સઘલું લઈ, પળ તું છોટાનો સંગતો
 માં હારે હાથ આવ્યોકે, માટે તને પળ તેમના
 કોટલી શિક્ષા કરવો જોઈયે.

સાર

દુર્જનનો સંગતીયે સજ્જન અપ્રતિષ્ઠા યામેકે, અ
 ને જો સંકટમાં તે પડેકે. તેમાં સજ્જન પળ
 પડેકે.

સાત

भुंडणी अने दीपडुं

एक भुंडणी तरत व्हायी हती. तेनां कुंठां कुं
 ठां बऱ्यां देखीने एक दीपडाने घणी काग्या थयी,
 जे, कामांथी एकादुं जो ह्मने खावाने मले, तो
 सारुं घाय, पळी ते दीपडुं घणा दाहाडा सुयी ला
 ण जातुं हतुं, पण कांई लाग फायो नही. त्या
 र पोताना उपर भुंडणीने विश्वास जात्रे माटे
 दीपडुं भुंडणी पास जईने मोठी मोठी बातो क
 रवा लाग्युं, अने भुंडणीने केहेके बाई तसे सारां
 को, एक ठेकाणे घणी वार सुधी बेशी रहीने त
 जे घणां अकळायां हशो, माटे मज सरखुं कां
 ई काम काज होय तो केहेजो, मनमां कांई श
 का आणशो नही, तमारा मनमां होय जे लगा
 र बाहेर फरी आवुं, तो सुखे फरी आवो का धा
 वणा बऱ्यांमी कांई फकर करशो मही, जं एम
 ने ह्मारा प्राण करतां वत्तां सभाळीश. भुंडणी ते

सबळ सांभळीनें उत्तर करेके, दीपडा भार्द तने
 छाराउपर घणो उपकार कर्यो, हवे छारे तम
 ने केहेवान काम एटलज के, जे हवे आपण छ
 पा करीने अहीयांघो जायो; अने हवे तने जो
 भलाहो तो फरीबी छाने तमार छो देखाउशो
 नही.

सार

केवल पारको वाले उद्योग करमारा आ स
 टीमां कोईकज हरे, माटे जे कोई वगर कही
 विज्ञान साह करवाने उपयोग करे त्यारे तेमां कां
 ई शंका आणवी. जे दुष्ट हे, अथवा आपणो
 शत्रू के, ते आपणी पासे आबीनें घलो जोर देखा
 डे, त्यारे घणो खबरदारो राखवी, एमां मुं केहेबुं.

—**—

बात ५७

भरवाडनो होकरो

एक भरवाडनो होकरो नाडरां चराबतो हुतो,
 ते होकरो एक दिवस बारे बारे चीतरो बाव

साथोरो

आश्चरे! चीतरो वाघ आश्चरे! एन रमतमां घा
 टो काहाडीनें बोलवा लाग्यो, ते सांभळीनें पा
 सेनां खेतरोमांघो कणवो दोडतां आया. अनें
 जायुं तो त्यांहां चीतरो नथो, एत वे चार बार
 ते ठगाया. त्यारे तेमणे निश्चय कर्यो जे, केक
 रो जुटो हे; एजी हाक फरीघो आपणे समगां आ
 णवो नही. पकी केटलीक वारे तरेन चीतरो आ
 यो, त्यारे ते केकरो घाबरो थडनें हातो गार
 वा लाग्यो, त्यारे ते पण जुठ जाणीनें कोई आ
 थुं नही. एटले तेनां ते गाडरां चीतरे निश्चि
 त मायां.

सार

जे पुरुष जुटो एवं एक बार प्रसिद्ध थयुं एट
 ले तेना बोलवा उपर लोक पकी विश्वास राखता न
 थो. ते खरा संकटमां होय, तो पण तेनी बात
 छोटी माननें तेनें सहाय्य यता नथो.

बात

(७७)

बात ५८

साप अने माणस

एक कोकरो वीडमां रमतो હતો, त्यांहां ते
नें सापे करड्यो; तेनूं दोर चढी गयूं, तेथी ते को
करो ते बलत मरी गयो; ते जोईनें कोकरामो
बाप घणो रोसे भरायो, अनें हाथमां शस्त्र लोई
नें सापनी पळवाडे थयो. तणे ते साप दरमां पे
से पेसे एटला मां तेना उपर घा कर्हो. तेथी ते
मो पंहुडी मात्र लगारेक कपाई; बिजे दाहाडे, सा
पनें बोलावीनें मारूं, अनें वेर पूरूं वाळूं, एवं मनमां
आणीनें कोकराना बापे दूध, साकर, मध, एवं द
रना ह्यो आगळ मेहेल्यं, अनें सापनें हाको मार
वा लाग्यो; अनें केहेके; भाई, अरे भाई, बाहेर
आव, तं हवे काई मनमां संदेह आणोश महीं, जे
बात थबानी, हतो ते थयो, हवे तने अनें अच्छो मि
त्रता करीये. ते सांभळीनें सापे मांढयो उतर
कर्हो, भाई हवे मित्रता करवाने तूं फोकाट मेहे

मत

मत करीश नहीं. शमाटे जे जांहां सुधी तनें न
 एलो होकरो सांभरेके, अने छाने तूटेलां पुंछडुं सां
 भरेके, त्यांहां सुधी आपण बेजगना मनमां एक ए
 कनुं कल्याण घाय एवं आवनार नहीं.

सार

जेणे बिजाने अपकार कर्यो के, ते पोताना म
 ननां बिहातो रेहेके, जे, ते कोई दाहाडे पण वे
 र लेशे, अने जेने अपकार कर्योके तपण ते अप
 कारनें कोई दाहाडे विसरतो मथो. माटे ते बे
 जगनें फरीशी छेत यवुं घणुं कठीण के. पण छो
 टा माणसनें ए योग्यके, जे शत्रु उपरे दया कर
 बी. पण तेनी साथे मित्रता करीनें तेनी विश्वा
 स करवो ए योग्य नथो.

—*—

वात ५८

रणशींगुं वगडनारो

एकरणशींगुं वगडनारो. लडार्दमां शत्रूओये
 प्रकडो, अने तेनें सारी नांखवा सांडो, त्यारे ते
 घणुं

अणु करगरीने बोल्हो. जे छानें मारशो न्ह्यो,
 छारो कांई अपराध नथो, छारा हाथमां हथी
 यार नथो, एथी तमे जाणो जे छो कोईने मा
 र्यो नथो; अमें आमजे मारी सकनार नथो. एक
 रणशीगावगर बिजा कशानें जं अब्बो नथो एवं
 हे. माटे भाईयो छानें कां हकनाहक मारोहो.
 ते सांभलीनें शपु बोल्या खरे एटला माटेअ अ
 छो तमें मारमार, जे तुं तारे हाथे कोईनें मार
 तुत्तो नथो; पण तुं आ रणशींगं फुंकीनें लोकोना
 अंतःकरणमां तैर प्रकट करह, एवं के जेणे करी
 नें रुधिरनो प्रवाह चालेहे.

मार.

जेणे कदी हाथमां तंरवार झाली नथो, अथवा
 बंधुक छोडी नथो, अथवा बिजां पण कांई जीव
 लेमारां एवां हथीयार हाथमां झाल्यां नथो; ए
 वो पुरुष पण बिजानो जीव लेईं सकेहे. आ क
 ळह उत्पन्न करनारी न्हानीशी वस्तु, जेनें शीभ के

हेके,

हेके, एमां जे झेरके, ते, झेरपायेला बाण करितां
 वत्तुं मारनार हे; एनुं सामर्थ्य शुं कहोये. एना
 सगार हाल्याथी लोकोना प्राण जाय, अनें ह्यो
 टां ह्योटां राज्य उयल पायल थाय, अनें लोको
 मां अरस्परस बेर पेदा थाय, एवं के एकएक
 ना प्राण जना सुधी तेनो अंत आवे नहीं. माटे
 झोभ हलावीनें जे अनर्थ करेके, ते सामान्य पा
 यो नहीं. माटे तेनें शिक्षा पण तेवोज करी जा
 ईये.

—**—

वात ६०

ससलो अनें काचवो

एक ससलो गर्वयो. काचवानें निरस्तार करीनें
 केहेके, अरे. झारी बागळं दोडनारे, एवो कोण
 हे? काचवा केहेके, अरे जो तारा मनमां एवं
 अभिमान हे, तो, आव, आपण सरत करीये. जो

ज

ઝં તારાથી આગઢ તે પર્વત આગઢ પોહોતું, તો
 રૂપેયા પાંચ તારે છાને આપવા. નહીંતો ઝં તને
 આપું. એ આપણી સરતમાં આ શિયાળ સાક્ષી,
 સસલે તે માન્ય કરી. પછી તે વે સંઘાતે નીક
 સ્થા, ત્યારે સસલો જાતે ધ્રુવ યમં થી દોડ્યો
 તેથી કાચવો ઘણોજ પંકવાડે રહ્યો; તે જોઈને સ
 સલે મનમાં વિચાર કર્યો, જે ઝં હમણાં વાક્યો
 કું. માટે સગાર આજ્ઞા આગઢ ઝંધ લેજ, ક
 દાશ કાચવો આગઢ નીકળી જશે, તો તેને પોહો
 વવામાં આપણે કૈટલીવાર છે, એવું વિચારીને તે
 જાડ આગઢ ઝંધવા ગયો. પંકવાડેથી કાચવો હ
 લુવે હલુવે. વિસામો લિધાવિના એક ચાલે ચાલ
 નો હતો તે સરતને ઢેકાણે જઈ પોહોયો, અને સ
 સલો પોતાના સામર્થ્યે ઉપર વિશ્વાસ રાલીને સુતો
 તે સુતોજ રહ્યો.

સાર

અપલ અને તીક્ષ્ણ બુદ્ધીનો છે, પણ જે કામનાં
 ઉતાવળો થતો નથી, તેનું તે કામ સિદ્ધ થતું નથી,
 અને મંદ બુદ્ધીનો છે, પણ જે કામનાં લાગે છે, તે
 તેનું તે કામ સિદ્ધ થાય છે; ઘણું કરીને જે બુદ્ધીના
 ન છે, તે આલ્સી, અભિમાની, નિશ્ચિંત. એવા હોય
 છે. તે કામનાં થમ કરતા નથી. કહે છે જે અ
 ઘારે શું અશક્ત છે, અછો જારે भारीશું, ત્યારે જા
 ર રાહાડાનું કામ ચાર ઘડીમાં કરીશું, એવા મ
 રુમા ઉપર રહીને વર્ષનાં વર્ષ જાય છે, પણ તેમના
 હાથથી કાંઈ કામ થતું નથી. અને જે મંદ બુદ્ધિ
 માલો છે, તે જ બુદ્ધિમાન નથી એવું જાણીને ઉદ્યો
 ગ કરે છે, માટે જે કામ તે હાથમાં ફાલે છે, તે સિ
 દ્ધ થાય છે.

(८३)

पात ६३

बेषधारी दीपडुं

एक दीपडुं गाडरानुं चामडुं झोडोनें गाडरांमा
टोळामां जईनें पेठुं. तेणे ऊं गाडरुं कुं एम कही
में घणां गाडरां मारी नांख्यां. एक दाहाडो ते
गाडरां चारनारानां जाण्यांमां आवुं त्यारे तेणे यु
क्तीची ते दीपडाना गळामां दोरी बांधीनें, तेनें झा
डनें उाळे टांगीनें, फांशी दीधी, ते रस्ते बिजा को
ई गाडरां चारनारा जता हता तेमांशी एके ते
फांशी देनारामे पुखुं चरे तें आ शुं कथुं तुं कां
ई गांडो बयोके, त्यारे तेणे ते सांभळीनें, दीपडा
ना शरीर उपरची ते गाडरानुं चामडुं उतारी ले
ईनें, तेनो सदेह भटाडो. पकी तेणे ते कथुं,
तेन तेणे बखाण कथुं.

सार

बाहेरना आचारची कोईना स्वरूपनी परीक्षा
यती नथी, बाहेर भलो दिसके; माटे मांहे तेनो

ज हूँ, एवं जानीये तो आवण ठगार्ये एगोटे
डाहाय्य पुरुष के ते पेहेलो मांहेतो शोध कर
के, पछो मांहे अने बाहेर सरखो पारख्यावां आ
घो नहों, तो ते विश्वास घाती, बेषधारी, एवा
तेनें जानीने तेना उपर द्वेष करेके.

—**—

वात ६२

दीपडां अने गाडरां

दीपडांने अने गाडरांने घणा दाहाडां सुधी ल
डाई चाली हनी, त्यांहां कुतरांनी सहायतायो गा
डरां दीपडांयो हार्यां नहों. पछो तेमन अर
सरस सल्ला करवा सार बोलव वयं. तेमां ए
वुं ठयुं जे अरसरस एक एकनें बोला आपबी,
दीपडांये गाडरांने कह्युं जे अच्छे अच्छारां होकरां
तमारे स्वाधीन करीये कीये, अने तमे तमारां कु
तरां अच्छारे स्वाधीन करो, ते वात गाडरांये कब
स करीने ते प्रमाणे कर्युं. पछो दीपडांनां होफ

रां

रां गाडरां पासे आवतांकांतज पोतानी माओ
 पासे एकीवारे रोवा लाग्या. ते सांभळीने दीप
 डां दोडतां खायां, अने गाडरांने केहेवा लाग्या.
 जे अरे दुष्टा तने अक्षारां होकरांने मारोने स
 ल्हा भागी. एवं कहोने ते सचळां दीपडां गाड
 रां उपर तुटी पडां त्यांहां कुतरां पासे न होतां
 एटले ते सेहेज मायीं गयां.

सार

श्रवणी साथे सल्ला करती वस्तुत घणी सामधा
 नाई राखवी. जे वस्तुने आपणने भरसे हे, ते
 वस्तुविना आपण नवळा, एवी वस्तु सोत्यमां श्र
 वणे लाधीन करवी नहीं. आपी एटले पछी ते
 मने बढवानु निमित्त काहाडीने बढवुं कठण पड
 तुं नयी.

वात

बात ६२

वे बटे मार्ग

वे बटे मार्ग संधाने चाख्या जना हुना, तेमना
ना एकने रस्तामां पडेलो रुपैयानो वाटवो जडो।
ते हाथमां लोर्डने ते बिजाने केहेके, चरे जा जो
छाने रुपैयानो वाटवो जडो, बिजो तेमने केहे
के एम कम केहेके, आपणने जडो एम केहे, आ
पण वे संधाने छीये, माटे लाभ के हानी जे था
य ते बेउनी, ते सांभळीने वाटवो बाळो केहेके,
हा, ते खर, छाने जडेली वस्तुमां जं तने भा
ग कम आपोश? बिजो केहेके, वारु तयारे न दा
पोश, पछी ते बेजणा कांईक आणऊ गया एटला
मां वाटवानो धणी शोध कोछाडीने, सरकारमा
शिपाई लोर्डने तेमनी पछवाडे आव्यो, तेने जोई
ते वाटवो बाळो केहेके, अल्पा, आपणे खोटु का
म कर्यु, तेने बिजो केहेके, हवे आपणे खोटु
काम कर्यु एम कां केहेके? ह्यो खोटु कर्यु एम
केहे, जो ते छाने तारा सुखमां भाग आप्यो छी
स, तो जं तारा दुःखमां पण भाग लेत।

सार

સાર

જે પુરુષ એવું રહે, જે જ્ઞાને સંકટમાં વિજો સં
હાય થાય, તે તેણે પ્રથમ મિત્ર કરી રાખવા. મિ
ત્ર કરવાનો રીત એવો છે જે, પ્રથમ આપણ કાંઈ
તેને ઉપયોગમાં આવીયે, અને તેનો સાથે મન મો
કળું રાખીયે, કપણતા ન કરીયે, તે તે આપણા
સંકટમાં સહાય થાય.

—૦૮*૦૦—

વાત ૬૪

વાચ્યમાં પડેલું શિયાળ

શક શિયાળ વાચ્ય ઉપર પાણિ પીવાને મથુ ર
તું તે માંહે પથું. પટલામાં ત્યાંહાં એક દોપડું
આવું. તેને તેણે વિનંતી કરી, ખાઈ જં બુડુંકું, હા
ને સહાય થા, સકવાર દોરડું અથવા વિજો કાંઈ
તણું માંહે માંહ, જે જેણે કરીને જં ઉપર મોકલી
આવું, તે શિયાળની દયા જોઈને, દોપડાને દયા
આવી, અને તેને કહેલું, શરે વચારા જં તને જો

૬૫

દેને ઘણો દુઃખ પામું. અરે તારા ઉપર પરમેશ્વર
આવો કમ કોપ્યો; હાય! હાય! છોટી વાત થયી.
શિયાળ ઉત્તર દેહે, અરે તું જેવું બોલુ છે તેવું જો
મારા મમમાં હોય તો દ્વારા સારુ અમથો અહીં
માં ઉભો થઈ રહીને, દુઃખો થઈ શકે. તો, જો
મેં બાહરે કાદાડવાનો ઉપાય ઉતાવળો કર, અ
રે જેણે મઠકાં લાધા માંડ્યાં અને તે દશ પાંચ
પઠમાં હુવી મરશે, તે ઉપર વિજાને અમથો દયા
આવી તે શા કામની?

સાર

અમથો મરી દયા આવી તે શા કામની, જેથી
વિજાને દુઃખ લગારે એવું થાતું મથી, જે વિજાને
દુઃખ જોઈને પોતે અમથો દુઃખિયો થાય છે, તે દુઃ
ખીના મનને વત્તું દુઃખ માત્ર કરે છે. માટે જે આ
પણને ઘણા દુઃખમાં, કામમાં, આવે છે, અને હાથ
હાય કરીને અમથા કષ્ટી થતા મથી, તેને આશ
ર્જા દુઃખ લાગે છે એમ જાણવું. અને તેજ આપણો
સરો મિત્ર, અને તેજ સારું કરનારો, એવું જાણવું.

વાત

(८६)

बात ६५

माछी

कौई एक माछी हुतो, तेणे नदीमां एक तेड
था ते थिजा तेडसुधी जाळ प्राचरी; अने हाथमां
लाकडानो दंडोको लोईने, पाणीमां झापटवा ला
ग्यो, मनमां एवं जे माछलां गाभरां बर्ने चारे त
रफथी जाळमां पडे, ते बखत ते नदीनी तेडे रे
हेनारी एक जण त्याहां हुतो ते माछीनो आ
चार जोईने तेने केहेवा लाग्यो; अरे या तुं शुं
करछ, तुं तारा मनमां शुं समज्यो हे, तुं या
कुदी कुदीने पाणी डोहोळी मांखछ, एवं पाणी च
ही भरीये अने तने कांई कहोये नहीं, या तारा
उपद्रवमां अमथी केम रेहेवाये? बोलतो कम न
थोरे? एम ते रीस चडावीने चडफडोने बोल्हो,
त्यारे तेने माछी हुळुवे उत्तर करेहे, अरे, तारा
थी चहीयां कम रेहेवाये? ए विचार करवानी झा
रे कांई गरज मथो, एण जं तने सहज कळंकुं,
जे आवं कथा बिना झाराथी रेहेवातुं नवी.

सार

सार

केटलाक पुरुष एवा होयके जे तेमनाथी लो कोनें जोइये एठलो उपद्रव थायो, पण तेनो ते विचारज करता नथी. लगारेक जेठलो पो तानो स्वार्थ थयो एठले थयुं. एक घर लुटवुं होय, माटे सघळां घरोनी थोळनी थोळ बाळतां चोर थावुं पाछुं जोतो नथी. कळह उत्पन्न करनाराके ते विचार करता नथी, जे, अज्ञाना साचा जुवाथी केटलाकनी भाई बंधाई लुटथे, केटलांक कुटुंबमां विरोध थथे, राज कारभारी पुरुषोमां केटलाक एवा होयके, जे, ते राज कारभारमां चार जणांनं एक चिन्त थवा देता नथी, अनें फुटफाट थाय, लडाईयो थईनें रुधिरना प्रवाह चाले, एवं करेके, सर्व राज्यनो नाश थाय, अनें पोताने कांई द्रव्य मळे तो तेवुं करवामां ते अन्नमान करता नथी, रांडीरांडीनां चांसु, कोकरांनो रडारड, दुखी लोकोनो हायहाय, ए, ते पुरुषना मननें हलावी सकतां नथी, ते पुरुष आ

वातमानक

जातमांमा माछीनी पेढे मममा कठह चर्ने, पो
तामं काम करता आयछे, यमं कोर्द पुछे तो के.
हेछे, जे एम कर्या बिना चमोची रेछेवातुं नवी,
हरि हरि मां एमनां दुष्ट कर्म! श्री एमनो सम
अण! जेना च्छदयमां नीतोना खेचं नही, जे सो
कोनं साई करनारा छे, तेमछे पोतामं सामर्थ्य
माले, त्यांहां सुधी एवा दुछेने मारी मांखवा.



कात ६६

कांटा खानारा उटनी

कापणीना दाहाडांमां कोर्द एक खेतार बाळे,
माणस खेर्दनें खेतार मांहेना च्छमनी कापणी कर
तो हतो; माटे तेमं उठ गाना प्रकारनां च्छम पी
ठ उपर खेर्दनें खेतार चानळधी जतुं हतुं. ते र
खामां एक बावळीयो जेर्दनें तेना कांटा खा
वा वळग्युं. तेना खाद खेर्दनें ते पोतांमा मम
मां केछेछे, या ऊं उचकी जाज्जुं एवां च्छम ख
ईनें

(૫૨)

દેને માણસ અસહ્ય થાઓ, પણ આં વાંચકીયાના
કાંટાનાં જે લાદશે, તે છોટાં સારાં અગ્રમાં પણ
નથી.

સાર

સાહ મરતું, અથવા સુખ દુઃખ, તે પાલાળુંજ શું
મ કહેવાતું નથી, જેણે જેવું માન્યું તેવું તેને લા
ગે; એમાટે જે પુરુષ એવું જાણે જે છાને જે સાહ લા
ગે, તે સર્વને સાહ લાગે અને ઝડ જેને લાટું ક
હું, તેને સર્વ લોટું કહે. તે પુરુષ આ વા
ત માંનાં હંડ સરલો મૂલ્ય જાણવો.

—**—

ગાત ૬૭

સાંચરી ધાળીમાં જોતી હતી

કોઈ એક સાર્સરી યદીમાં ધાળી પીતી હતી, તે
ધાળીમાં ધોતાનું પ્રતિબિંબ પડ્યું હતું, તે જોઈને ધ
ણું સંતોષ પામી. પંક્ષી યનથી તે માથા સુધી જુ

દા

दा जुदा अबयव जोरने केहेके, दा:हा! छारा मा
 था उपरनां ग्रीनडानो भराव मो सुंदर के, जे जे
 णे करीने छारा छोनो मोमा घणी यथी, छारां
 विगाल मेच, कमळमें लजबेके, छारं शरीर को
 मळ फल सरलु के, एवाज जो छारा था पण सा
 रा होत तो जं कोरने नजत नहीं. पण शुं क
 हं था पण छाने लजवी, था नहाना खोजी गये
 ला देखाय के, तेथी जुळगाज न होत ते सारं.
 एम ते विचार करेके, एटलासां पकवाडे पारधी
 थाया. ते जाणतांमांज त्यांहांथी नाठी, तेमें प
 कवाडे पारधी पण नया. त्यारे तेणीचे विचारुं जे
 थानमा हाथभांघी उतावळी नाथी जाज, माटे
 खाडो बाटे जवा लागी, तो त्यांहां झाडमां ग्री
 नडां भरायां तेथी चटको पडी, एटले पकवाडे पा
 रधी हताज तेमणे पकडी, ते बलत ते मनमां
 केहेवा लागी, के जे पण छाने खोटा लागता ह
 मा तेमणे तो छाने संकटमांघी बाहेर काहाडी
 हती, पण जे ग्रीनडाने छाने गर्ब हतो, तेलेज
 छाने बंधनमां नांखी.

सार

सार

इस सघला व्यवहारों करीने सारी बशी, एम
 प्रीयोसे समसा खेद आणवो नहीं. घासाटे जे
 होखीला व्यवहार से, ते जेवा बखत उपर प्रति
 बताना भर्मासा काससा आवेके, सेवा सारा अब
 सब से, ते आवसा मथी. प्रतिबतायणु खीचोने
 जीवके, ते जमने नहोय ते खीचो सडरा सरखो
 साणवोये.

बात १८

शियाळ अने कागडो

एक कामले छोपां आसने काडको खेईमें च
 हो, ते एक उचा साडजपर अईने सेठो, तेने ओ
 ईने एक शियाळ ते काडकले पय. अने कपटकी
 कागडानु सुंदरपण वर्णन लोणुं कहिके, अरे अ
 की ऊं तने खूज कऊकुं, के तन सरखो देसाड

हो बिजो पक्षी द्वारा जोयमां जात्र सुधी कही
 थायो नथो. तारां पीछां शां सारां अने कुळां
 हे, आःहा! तारा शरीरमो, श्रीकान्ति केटली वर्ण
 न करूं, तारा अवयवमो लटकमाने तो जाता
 न रहीये, पण हसो थय नहीं. तारे हटलुं स
 मल्लं अमकूळ हे. नाटे तारो खरपण करोज इ
 शे एवं जणायहे, अने खर जो मोठो होव तो प
 क्षी तारी बरोबरी कीण करनार हे. कानडो ते
 लुति सांभळीनें, ऊं कोण? ए विसरी नयो, अने
 पोतानं शरीर भरडीनें विचार करेहे, के अने
 द्वारा खरनी आंती हे, तेटली मटाडुं. एव न
 नसां थाणीनें, तेहे बाबानो आरंभ कर्को. ते क
 रतांज होमां बासना कडको हसो, ते हेठळ प
 खो. ते खीरनें शिर्षाळ तेमो मूर्खताने हसतो
 हसतो मार्गे सांग्यो.

सार

सुतीमां लेवायां ते फसेज, एवं जाणीनें तेमां
 लेवाता नथी, एवा पुरुष मोडा. अमनें लुति

जारी

सारी करता आवडती नथी, तेमनी करेली स्तुति
 एकादी बखत फोणट जाय. पण जो करनारा ख
 मजदार हे, तो ते छोटा सावध मनष्यानां पण म
 ननें हरीलेहे, एवी रीते के जे स्तुतीना सेपमां आ
 वना नथी. तेनो तेज गुण बखान करतारो धर्त
 न करे एठले ते लिवायो, माटे आं स्तुतियंच
 ना छोटे सार चुकाववानें आवना विजो उपा
 य गथी, शो जे आपणा गुणनां परीक्षक आपणे
 ववु, विजाना कल्याउपर अवु नही. जे शप
 से आपणी परीक्षा खरी करी, तो आपणी योग्य
 ता विजो शं केहेगे? अरे प्राणि मावनें पोता उ
 पर प्रीति एठली हे, जे पोता करता विजानें
 छोटे केहेवो ए कोर्द इच्छतुं नथी; तेमज एक
 नी योग्यता विजानें खरेखरी समजणमां आवना
 नथी. माटे जे स्तुति करेहे तेना पेठमां कांई
 पण स्वार्थ हे एम आगवु.

बात

(६७)

बात ६६

वे कुतरीयोनी

एक कुतरी आवाणी बयो, त्तारे तेणीये विजी
कुतरीनी आर्बनी करी. जे बार्द एक महिना सु
धी तमोह घर छाने रहेवाने आपो, छारी सु
बाबड पुरी बये एठले ऊ तमोह घर तमारे स्ता
धीन करीये. विजीये बार्द कह्युं, अने तरतज ब
र खाली करीने, तेने स्ताधीन कबुं. बळती ब
क महिना पक्षी घर बणीबाणी आयेखी कुतरीने
मळवाने नई, अने मर्बादावी केहेके. बार्द तने
साजां ताजां मोहार्द धोर्दने उद्यां, रजोर्दने आ
ने घरो आनंद बयो. हवे ऊ एवु जाणहुं जे त
मने बसां सुदां घर बाहेर हींउतां देखुं, तेनो ब
मिप्राय समजने सुबाबडी कुतरी तेने केहेके, ब
रेज बार्द छाने पण संकोच आवेके जे हो तमारी
अग्या घणा दाहाडा बया अटकावी के, माटे त
मने भीड पडती हये, पण शु कल छारां बसां

महाना

મહામાં નવઝાં, હજુ દ્વારીસાથે ફરવા જૈવાં થયાં નથી. માટે જો કપા કરીનેં વિજા પંદર દાહાડા રહેવાયો તો ઝૂં તમારો ઘણો ઉપકાર મામીય. ઘરવાઝી ઘણો સંકોચ વાઝી હતો, તેણાયે વિજા પંદર દાહાડા રહેવાની રજા આપી. તોપણ તેણાયે ઘરવાઝી કયું મહીં. પછી તે જોઈનેં ઘરવાઝી વ્હાંયેલી કુતરીનેં કહેકે, અરે તું હજુ ઘરમાંથી નાં કઢતી મયો, તે તારા મનમાં શું ક? ઝૂં તનેં હવેં વઝાત્કારે બાહર કાહાડોય, દ્વારેતો હમણાં દ્વારી જમ્યાં જોડ્યે, તે સાંભળીનેં વ્હાંયેલો કુતરી તેનેં કહેકે, શું તું દ્વાનેં વઝાત્કારે કાહાડના રીકે? તો હવેં કાહાડ વાહ જોઝં, કેવી કાહાડક, હવેં ઝૂં તનેં હવેં કઝંકં, એ તું દ્વાનેં વઝાત્કારે કાહાડોય, ત્યાંહાં સુધી આ ઘર તારે હાથ આવતું નથી.

સાર

જેનાં હાથમાંં સસલો તે પારથીં. તેમ જેનાં હાથમાંં વસ્તુ તે તેનો ધણો માટે આપણી વસ્તુ વિજાનેં હા

મ વધી હશે તો ફરીને આપણે હાથ આવશે, એવો
 સ્વો મહત્ત્વે આવ્યા બના, હાથમાંની વસ્તુ આપ
 વી નહીં. એટલામાટેજ એ પુરુષ શાળા, ઉદાર
 છે, તે વિજાને કાંઈ વસ્તુ આપવી પડેતો થલત ઉ
 પર આપોદેહે, પણ એ સાધન માણસ મધી, અથ
 વા જુટ વોલશે એવી એના ઉપર શંકા આવેહે,
 તો તેને ઉઠીતું પણ આપશું એ મૂર્છતા.

—**—

વાત ૭.

શિયાળ અને શાહામૃત

એક દાહાડો શિયાળે શાહામૃતને પોતાને ઘેર
 જમવાને બોલાવ્યો. અને તેનો મજકરી કરવા
 સાર એક દિટ્ટી ચાલીનાં સીર ઘાલીને, તેનો જાગલ
 ભેજેલી. પછી એમર ને જણા સાવા વેઠા. ત્યારે
 શાહામૃતનો ચાંચ સાંચી તેણે કરીને સીર લેવા
 સાર તેણે માના પ્રકાર કર્યા, પણ લેવાથી
 નહીં. એટલામાં શિયાળ તે સીર સારને ચાલી

ઘાટવા

બાઢવા લાગ્યો. શાહામૃગ પોતાના મનનાં સંકો
 ચ પામીને તેવોજ મુશ્કો ઘેર ગયો. તે દાઢ મ
 મનાં ખારીને કોટલાક દાહાડા ગયા, પછી તે શા
 હામૃગે શિયાળાને જમવા તેડ્યો. અને એક સુર
 ચીનાં સાંવાનો રસ મેરીને શિયાળાનો સાગલ મેહે
 ર્યો. તે સુરચીને પેટ, છોટું, અને મલું સાંવું, એ
 મેં સાંકડું હતું; તેનાં શિયાળાને છો પેસે નહીં, તે
 મલત શાહામૃગે સુરચીનાં સાંચ ચાલીને કમ લા
 વું, તે તેને દેલાણું. સારાંચ એ જ, શાહામૃગે એ
 યાચિત પેટ મર્યું. અને તે રસ લાતા વાહેર સાં
 એ કાહાહે ત્યારે એ રસનાં ટીપાં સુરાચી ઉપર
 વહે તે ટીપાં પાટીને શિયાળાને સમય કાહાડ્યો. પણ
 મનનાં મળો સહેા ગયો. પછી પોતાને ઘેર જતો
 મલત, શિયાળા શાહામૃગને કોહેશે. મારી તે એ
 કર્યું તે યોગ્યજ કર્યું છે. છો એવ તને કર્યું, તે
 વું તે જાને કર્યું. શાહે એનાં જાને લોટું સાં
 માનું કારણ નથી.

(૧૦૧)

સાર

વિજાનો મશકરી કરીને રાજી થવું, એ બલા માણસનું કામ નહીં, જે એવું કરેલે, તેની પક્ષે વિજો જારે પાકો ઉલટો મશકરી કરે, ત્યારે તે નેં ઘોડવું નહીં, ચાપળો લોટો રૂપેથી ચાપળને પા કો ચાપે, તેા લોલામાં લેલો. જેમ શિયાળે પો તાને અપરાધ સ્વીકાર કર્યો. તેવું, ન કરે અને વિજે ચાપળી મશકરી કરી, એટલે તેનાં ઉપર દો વ માત્ર મેહેલે. પણ ચાપળને એવું માઠું લાગ્યું તેવંજ વિજાને લાગ્યું હશે, એનો વિચાર કરતાં નથી.

— ○ —

વાત ૭૧

ગરુડ પક્ષીની અને શિયાળીની

એક ગરુડ પક્ષી હતો, તે પોતાના વચાને મા ટે કાંઈ લાભાનું સોધતો હતો, તેનીયે એક શિયાળીનું વચું ઉઘાડામાં પજી દીધું. તેને પત્તામાં પા

લીને

लीनें उड़ी, एटलामां तेनी मा पासेज हती, ते
 दोडती खांवी. अनें छोटे दीन खरे करीने थां
 खोमां खांसु खांजिनें, तेनें वरपरना खांगो. अ
 रे बार्द मज गीब उपर दया कर, ह्यारा एक
 माएक लाडकवाथा बखाने लोई अर्दनें, ह्यनें
 एकली करीष नहीं. था ह्यारुं बाळक ह्यनें पा
 रुं आगेथ तो, ते ह्यनें बाळकनी भाख आगा;
 एवं ऊं जाणीष. गरुडपक्षणी निर्दय हती, त
 पीये ए मनमां खाण्यं, जे ह्यारुं घर ऊंच झाड
 उपर के, त्यांहां था शियाळणी गो उपद्रव करी
 सकनार के? एवं विचारिने तेणीये तेनुं कह्युं न सां
 भळतां, ते बखुं पोताना बखानी आगळ लोईनें
 भेहल्युं. ते वखत शियाळणी रीसेकरीनें गांडी स
 रली यथो. अनें बेर कयग बाळु, माटे आगळ पा
 छळ जेती हती. एटलामां ते दाहाडे पासना
 खेतर्मां, मामना लोपोथे ग्राम देवना निमित्त
 हाम कथो हतो; त्यांहां अर्दनें एक देवनामा अं
 नारो लोईनें, गरुडपक्षणीना माळा जे झाडउथ
 र हतो, ते झाड तळ आचनें खास पासथा कां

टा घास इत्यादिक खाणेन, ते झाडनें बाळवानो
उद्योग आरंभ्यो. ते जोर्डनें गरुडपक्षणी भयभीत
थयी. हवे वऱ्हां सुड्हां आपणी राख वऱ्हे एवं
विचारीनें अनें उळटी शियाळणीमो प्रार्थना कर
वा लागी. केहेके जे बार्ड कृपाकरीनें बेर सुकी
द्या ऊंचुकी, एवं कहींनें तेणांथे शियाळणीनं वऱ्हुं
जीवतं पावूं आप्णं.

सार

पसे अथवा अधिकारे ऊं वळियो कूं. ए भ
हसे कोर्डनो घात करीये नहीं. आपणे छोटी
आश्रय के, अनें जेनो घात करीयेकीये ते केवळ
दुबळ के, माटे ते आपणनें कांई उपद्रव करी स
कशे नहीं, एवं सर्वथा मनमां खाणवूं नहीं, ते
केवोपण गरीब होय, तोये ते कोर्ड वसत किये
ठेकासे केथी सुक्तीये बेर बाळये, ए केहेवातं न
थी. एकवार बेर थयूं म्हाले, ते म्हावूं कठण
पडेके, छोटी जवरों राजा होय, तेनें पण मार
मारा मारी सकेके. जे बेर सेवानें पोताना

जीव

(૧૦૪)

જીવ ઉપર જે આદરે તે હજાર ચુક્તીએ પોતાનું વે
ર છે. હરકોઈ ડોશી રાજાના ઘરમાં પણ આ
મ ઘાલી સકે. હરકોઈ એક મરીવ છોટા બઝ
વાના કોકરાનો જીવ લેઈસકે. એટલા માટે
હવું કઠણ કરીને, જે લોકોને દુઃખ દેશે, પણ તે
એ સાંચી મજરે જોવું.



વાત ૭૨

સુહર અને મધેડો

એક મધેડો અને સુહર, એમનો ચરણમાં અચા
નક મેળાપ થયો. તે બંને મધેડો ઘટ્ટામાં તે
ને કહેશે. ઝંગોપાલ હો થેઠજી, તે તેનું ડોઝ
જોઈને સુહરને આશ્ચર્ય લાગ્યું. અને ક્રોધના આ
વેશે તેના મનમાં આવ્યું જે, હમણાં એનાં આંતર
ડાં બાહેર કાઢાડી માંલું, પણ એટલામાં તેના મ
નને વિવેક થયો, અને મધેડાને કહેશે, ચરે હલ
કા જીવ તું તારે માર્ગે જા, ઝં મધેડાને લોહીયે

ચારી

(१०५)

झारी डाहाड बटाळतो नथी, नहीतो तारे ओ
स लेवाने ज्ञाने एक क्षणनी बार नथी.

सार

मूर्ख होयके ते ऊं डाहायो कुं, एवं जाणोनें
होटातो यडो करवा जाय के, पण ते त्यांहांथी
पोतानो जीव लेईने पाळो आवे, एठले घणी क
री, एम जाणवुं. मूर्ख मूर्ख साथे, चाकरे चाक
रनी साथे, मोचे मोचनी साथे बोलवुं. एवं जाणो
नें होटा के ते रीस न बडावतां, मोच मनय्या
एक बे अपराध सहन करे के, माटे मूर्खादिके निः
शंक चर्दने वारे वारे तेमनी साथे तेवो प्रसन्न आ
णवो मर्ही.

—०*०—

वात . ७३

बे बायडीयोना धणीनी

एक पुरुषमें बे बायडीयो हतीयो, पेहेली तेनें
बरोबरीनो खरूपे साधारण हती, अनें विजी जवा

२७

म

न सौंठ बर्षनी धणी रूपवनी हती, तेणीये रोता
 ने स्वरूपे खने गुणे करीने धणीने घणो सुखो क
 र्यो; पण ते पचास बर्षनी अवस्थाने पाव्या हते,
 माटे तेवी ते तेवी सुखी नोहता. ते पुरुषना के
 य काई काळा खने काई धोळा यया हता, ते
 ची तेनं दृढपणं जणतं हतं. ते, तेखाने घणं
 खोटं खानतं, माटे तेखी जाहारे पुरुषनाचे विचा
 र करची वेस, त्यारे ने न जाणे एम हळुवे रहो
 जे चुकीची नित्य तेमांना काई धोळा काळ उखे
 ली नांखे; ते एम जाणे जे मांहेली वात जे होय
 ने हो, पण बाहेरची लोकोने छारा बरनां बर
 दपणमां जेटलां चिन्ह न देखाय, तेटलांज स्व.
 जे छोटी ली हती, ते एम जाणे, जे चा धोळा
 काळ छारा धणीने दृढावस्थानं भूषण हे, माटे
 जाहारे जाहारे तेना बारी आवे, त्यारे त्यारे ते
 यण तेमांना काळा काळ तोडी नांखे, ए प्रमाणे
 वेजणीयेनो उद्योग चाख्यो. तेची ह महीना न ब
 था, एटलांनी ते वचारानो माधानो काळ एक
 सरलो रह्यो नहीं.

सार

सार

जैन साहं खोटुं ए व्यवस्थानी समजण नवी ते
भी कृपाची पण तोटो आवेहे, जे खोयो पोतामी
धणीनं साहं दळतौ होय जे धणीनो कृपा उपर
मजर होय, तो तेजीये जे बात करची ते धणीने
पुछा बना करची नहीं, कोई बात खोने पोता
नी बढीये सारी लागी, पण ते बात धणीमें पुछी
ने करी होय, तो तेमां बेनं वळं साहं थाय, जे
ने ते खोयोनो धर्म पण हे.

—००*००—

बात ७४

देडका जेने बे वळद

बे वळद एक तळावना उपली तरफ लडता
हता; ते तळावनामे एक देडके दीडा; ते विजामे
केहेके, जरे जो जो ते सामे मुं जायके, ते हा
य हाय हवे आपणी भी गत जाये, विजो बोखो
जरे मुं खाटलो कां विहक. तेमनी खाटारमे

के

में आपणें री संबंध है, तेमनी जात जुदी, जनें आपणी जात जुदी, रीत जुदी, खावुं जुदु, ते आपणें दुःख देखानें लड़ता नथी. एतेक एक त्रि जानें काहाडी मेहेलीनें पोते घरनो धणी यवा माटे लडेहे; त्यारे आपण आपणे ठेकाले मूर्ख स रखा अमला कां बिहीये. तेमें पेहेलो केहेके अरे ते खरुं, पण हवे एवं यशे, जे ते बेमांथी एक हा रूशे ते नाशोनें आ तळावमां आवशे, त्यारे आपणामांथी केटलाकनें पण तळे कचरी नांखशे, माटे तुं विचार, जे तेमनी लडार्नें जनें आपणें केटलो पासे संबंध है.

सार

छोटा छोटानो लडार्नें पासेनां गरीब सह ज मायां जाय, तो जे छोटानो पक्ष करीनें लडार्नें आगळ जाय तेना नाश जाय एमांशुं के हेवुं, जेमां सर्वनुं साहं वतुं होय, एवी एकादी जातमां छोटा साथे न्हाने जावुं; पण केवळ लो

कोना

कोना कल्याण सार उद्योग करनारा, एवा छोटा थोडाके. जे घणा लोकोना सारा सार लडाई उभा करे, तेमां तेमनं लक्ष घणुं करीमें पोमानो सार्य साधवा उपर होयके, यण ते लोकोवाले लडता नथो. तो आपणे हाथ राज्य आवे, आपण राज्य सुख भोगवीये, आपणी आप्तामां सर्व लोक रेहे, माटे लडेके, पक्षी ते अधिकार उपर आव्या एटले प्रथम प्रजामें पोडवानो आरंभ करे, माटे एवा जे लडनारा के, तेची डाहायो होय तेणे दूर रेहेवं; आपणुं घालेतो वे लडनाराओनी लडाई बंध करावीनें लोकोनी पीडा निवारण करीये.

—**—

वात ७५

पराळ. मांनुं सावर

कोई एक सावर पारधीनां कुतरांये झाडोर्मा
भी काहाची मेहेल्युं, तें नाटुं नाटुं एक गामडानां

डोरांना

डोरांना बाडामां पेशीने पराळना ढगलामां संता
 ई रहुं. ते जोईने बाडामांने एक बळदे तेने पु
 षुं. खरे ते अहीयां आवीने शुं भायुं हे? अ ए
 न जाणुं, के जेयकी बिहीने तं संतायुं हे, ते म
 रण तने अहीयां रोकहुं मळगे. सावर तेने के
 हेहे, भाईयो जो तने सर्व कृपा करीने हांगा रे
 हेष्टो, तो ह्यारो नभाव थगे. लान जोईने अ
 अहीयांची उतावळुंज अईस. पकी ते सावर सां
 ज घतासुधी हतुं, ते संध्याकाळ घतांज पेहेलो क
 हवना पुळा लेईने गोवाळीयो बाडामां आव्यो, ते
 नी मजरे ते पळुं नही. पकी बाडामो कारभा
 री आव्यो, तेणे पण तेने दीवुं नही. ते बखत
 सावरना हईयांमां हर्ष माघ नही. पकी ते ब
 ल्ढेने केहेवा लाग्युं. जे भाईयो तमने धन्य
 हे, आज अं जगयुं ते तमारे पुण्ये, तमारा सर
 खा परोपकारी कही नही होय. ते सांभळीने
 नेमांनो एक बळद तेने केहेहे, खरे तं अहीयांची
 कुमळ क्षेम तारे ठेकाणे जा. एवं अक्षारा न
 मयीहे. माटे परमेश्वर करे अने सा बाडामो

धणी अहींयां न आवे तो सारुं, जोते आवये तो तेनें सो आस्थोके. तेनी नजर आगळ तअयी आ पराळमां सुतार्द रेहेवाये नही. एवं बोलेहे, ए टळामां वाडानो धणी बाहेर गयो हतो, ते घेर आयो. आवतां वांतज प्रथम वाडामां गयो, अ में चाकरो उपर तरफडोनें केहेहे, अरे रामा, आ बळदेनो आगळ कडव कम मघोरे, ऊं रो ज आटलं कळहुं पण तंमनें लाज कम मघी आ वती. हीरा, ते बळदनी आगळ विजा चोरना पु ला आणिनें मांख, मां रांडमां माणस दुःख देनां रांहे. एम तरफडतो तरफडतो आणि मर तेणी मर फरेहे, अनें सघळे डेकाणे नजर घालीनें जु एहे, एठळामां पराळमांची सावरनां शींगडां ते मो नजरे पड्यां. ते जोतावेतअ चाकरोनें केहे ना लाग्यो. अरे आ गुं हेरे, आ पराळमां? अ ह्यायो सावररे सावररे भाजोरे भाजो. ते सां भळतां वांत चाकर कुतकां सोर्दनें आव्या तेमणे तत्काळ तेनी जीव सिधो.

સાર

આપણ, જેટલી આપણા ઘરના કામની ચિંતા રાણીએ લીધે, તેટલી ચાકર રાણતા નથી. થાય તે થાય જાયતે જાયો. એવું જાણીને તે નિશ્ચિત રહેલે. પણ જેનું અન્ન લાઈયે તેનું હિત થાય તે કાવું. એ જે સેવકોનો ધર્મલે, તે તેમને સ્વપ્નમાં પળ નથી હોતો. તેમનું મન સર્વદા પોતાના સ્વાર્થ ઉપર હોયલે, તે સ્વાર્થ જેમાં જતો હોય તે કામ તે કરે, તે અગત્ય ધણીનું હિત તેમને હોઠામાં આવતું નથી. વિચાર કર્યાથી, પોતાના છઠ્ઠા પળાથી ભાગ્યા, એવા અહમ્મ્ય મોરારજી ની કલમે, પણ ચાકરોના વગાડાથી ધૂઝ અથવા એવા જગા. ઇટલા માટે ધણીએ પોતે સાવધાનાઈ રાખી, કેવળ ચાકરો ઉપર ગહસો રાણીને રહેલું નહીં.

(१९६)

बात ७६

कुतरो चने दीपडुं

कोई एक दीपडुं घणा दाहाडा मुखीं रहीने
सुकाई मयिलुं हतुं, ते एक दिवस चांदणी राते
वा लावा सार फरतुं फरतुं कोई एक कण्डीना वा
वा आगळ आयुं. मांहे पेटुं तो त्याहां तेणे प
क पाळेलो कुतरों दोढो. तेमनुं अरस्परस
आगत स्वागत यवा यही दीपडुं कुतराने केहेके,
अरे तूं घणो सारो दीसेके, ऊं खांज कऊं जे
मारा सुरखो ताजो, चने देखाउडो, ह्ये कोई दो
डो नथी. तो केहे बाह, एनुं कारण शुं! अरे ऊं
मारा करतां सो तरफथी उद्योग घनो करुंकुं, तो
घण ह्येने पेट भरीने लावा मुळतुं नथी. कुतरो
केहेके अरे ऊं करुंकुं तेवुं तूं करीश, तो तूं प
ण ह्यारा सुरखो ताजो चरुं. दीपडुं पळेके, तूं
जुं करक? कुतरो केहेके बिजुं काई नही, भगी
ना वारणा घाबळ रातनी बोकी करीने ऊं सो

रने

रने खाववा देतो नथी. दीपडुं केहेके, ते ऊं पण
मनची कोम, अरे ऊं अरण्यमां भटकतो फरी
नें टाहाड तडको सऊंऊं. ते छाने घरना छां
घडामां वेगीनें पेट भरीनें अह मळे तो भिजं मुं
ओदेये, ए प्रमाणे ते वेजणा वानो करेके, एटला
मां कुतराना गळामां दोरीने पटो छतो ते उप
र दीपडानो मजर गयो. त्यारे दीपडुं कुतराने प
केके, भाई आ तारा गळामां. पं के. कुतरो वो
ख्यो अं, एतो. काई नही दीपडुं बोख्यं काई न
ही पण जाणवा तो दे. जे ए गं के, कुतरो के
हेके. अरे ऊं स्वभावे लंगर खोटे कं, ते लोको
नें करडुंकं, अने ऊं दाहाडे जंघं तो राते चोको
सारी कहं; माटे छारो धणो छाने दाहाडे दोरी
ये बांधी मेहेले के, पण जांहां संध्याकाळ थयो.
एटले ते छाने केडे; पछो ऊं राजा बाजं, मन
मां आवे त्यांहां फहं, मारे खावा पीवा जोईये,
ते तो छारो धणी घेताने हाथे मनें एठु खव.
रावेके. त्वसज सघळां घंरनां माणस छाराउप
र माथा राखेके, भांणामां रोटलानो कडको रेहे,

ते मज बना विजा कोईनें नाखे नहीं; नाटे जो
 तं छारी पेठे करीश, तो केटलो सुखी चडश?
 ते सांभळतांज दीपडं पाछे पगले माठ; तेनें कुत
 रो हाकमारीनें केहेके, चरे आवरे चात, नासे
 के कां ते केहे? दीपडं पाछुं फरीनें उत्तर देके,
 नारे भाई नथी जोईतुं, छारे तारुं सुख. ए नारे
 संदा रहो, छारी साथे तो छटो रेहेवानो बात
 होय, तो ते कर.) तारी पेठे बांधी मेहेलोनें छ
 नें कोई राजा करे, तेपण छारे नथी जोईतुं.

सार

छुटा रहोनें नरीवी होय ते सारी, पण परस्ता
 धोन रहोनें छोटी पदवी सारी नहीं. जे पराधी
 न थयो, तेनुं सज्जन पणं, छोटपणं धीरज, अथवा
 विजा सद्गुण, तेनें कामना नहीं. तेणे तो धणीना क
 ह्या प्रमाणे चालवुं जोईये, धनें जे धणी जे काम
 केहे, ते नीच कर्म होय, तोपण करवुं जोईये,

बान

નાડરું જેને વકરીયે પાવ્યું હતું,

એક નાડરાનું વચ્ચું વકરીયે પાવ્યું હતું, તે એક
દાદાજો વકરીનો સામે જનું હતું, તેને એક દીપ
તું રક્ષામાં મળ્યું. તે કહેહે, વચ્ચા તું મજાક; તારી
તારી આ મહોય, તારી છરી માતો યેલા સામાં
નાડરાંના ઢોલામાં ચરેકે. વચ્ચું ઉત્તર કરેકે,
દાદા તું કેહે તે સહું, પણ જેણીયે જ્ઞાને કોટલા
ક નહિના સુધી ઉપાય નહીં માટે પેટમાં રાસ્યું,
જ્ઞાને વ્હાયી ત્યારે આ દુષ્ટી ઉપર નિરાધાર નાં
જ્ઞાને પોતે જતો રહી; તેને જ્ઞારી મા એમ તું ક
હોય તો કહે, પણ જ્ઞ તો આ વકરીને જ્ઞારી
મા એમ કહુંકું. જે જેણીયે જ્ઞાને દીન અમાવ
જાણીને, પેટના ફોકરા પ્રમાણે પાવ્યું, પોવ્યું, જ્ઞને
સુધવ્લી વાતે જ્ઞારી સંભાળ સીધી. દીપતું કહે
હે, ચરે પણ જેણીયે તેને જન્મ આપ્યો તે તારે પૂ
જ્ય હે, જ્ઞને તારી મમતાં તેના ઉપર વક્તો-જો
રૂંધે. વચ્ચું કહેકે, તેણીયે જ્ઞાને જન્મ આપ્યો એ જ્ઞ

કહેનાર

(११७)

कहेनार नहीं. शमाटे जे जेनें ऊं काऊं ते बे
 तं ऊं ए खरज नथो, जेनें जो तेणीये छाने जन्म
 आयो ए बात खरीके, तो तेणीये आ द्वारा उ
 पर उपकार कर्षो, ए बात पण खरीज. जे छ
 नें पुरुषमो जन्म आयो, जेजे करीनें ऊं छाटको
 नें हाये पडोश. त्यारे जो बाहजेनो कोई प्रका
 री द्वाराउपर उपकार नहीं, तेनें ऊं मा फव
 कऊं.

सार

जे आपणुं सारुं करे ते आपणां नावाप. जे
 जे नरो जन्म आयो ते नहीं, नावाप जेनें होक
 रां ए बे. जणांये सरसरस उपयोगी बव जो
 ईये, होकरां अज्ञान के, त्यांहां सुभी नावापे
 तेमनें पाऊन पोषण करव; विद्या भणववो, ज
 णां छाड न लडावीनें तेमनें आपणी आज्ञासां रा
 स्यां; पछी ते छोटां यईनें कमातां बयां, एटो

तेमनें

तेमले मावापने कशीवाते ओकुं पडवा देयुं नही.
 एवो ए परस्परोनो धर्म के. घणुं कौनें होक
 रानोज बांक जणायके, जे ते पोतानी जवानोना
 भरमां मावापन, कहां सांभळतां नथी; तेन कठ
 लांक मोराप पण छोटां हायके, जे ते पोतानां
 होकरांनं म्हान पणमां विद्या शिल्लववा सारु मे
 हनत करतां नथी. पोताना सामर्थ्य प्रमाणे हो
 कराने लावा, पोवा, अने खरचवा आपतां नथी;
 अच्छो छोटां एटला बावा तेमना मन गां ते एम जा
 ए, जे अच्छो जेटलां बाना होकरांनं करोये, ते
 लां बानां एमणे सेहेवां; पक्का होकरापण ते जा
 रने पोतानी सयादा मुकी देके. माटे बाप हो
 कराने, सगांसगाने, धणी धणीयापाने, बरस
 रस एक एकनु सारु करतां जवुं, तोज खेड दे
 वे. जेमां खेड नही ते नाम माव सवा केहे
 बानीज.

(३१६)

बात ७८

मोर जे पोताना खरने खोटो

जाणीने खेद करतो हतो तेनी

एक दिवस मोरने पोताना शब्द कठोर एवं
जाणीने घणो खेद घयो. त्वारे तेणे सरस्वतीनी
प्रार्थना की. हे दीन दयाळे, हे देवी, हे जग
दंब, ॐ नमः साधन, अने छाने खरमां कोल्य
जीते, ए तने योग्य नहीं, जो बार कोल्य बोल
जा मांडे, एटले सर्व लोकाना कान अने मन त्यां
हां जडने वळगेळे. अने ॐ हो उवाडुं बोलवा
ने एटले सर्व लोक छारी मशकी करेळे. एवी
मोरनी प्रार्थना सांभळीने देवाने दया गावी. प
ही देवी तेना मनन सुलधान करेळे. भाई सा
रो शब्द जाणीने जो कोल्य सुखी के. एवं ता
रा भमनां आवतुं हाय तो खरूपे. अने छोटप
ले तुं पण सुखी के. मोर कोडेके, देवी! बाणी जो
मीढी नधी तो एकला खरूपने अने छोटपणा

ने

नें श्रुं करीये? देवी बोली अरे परमेश्वरे एक ए
 कनें एक एक गुण आध्याहे. तनें सौंदर्य, बरह
 नें बल, कोल्यनें सारोस्वर, पोपटनें मनुष्य वा
 णी, खनुतरनें शांति, ए पथी जेम पोत पोताना
 गुण उपर प्रसन्न रेहेके, तेस तारे पण रेहेवुं. न
 हीतो, अमथी आगा वधारिनें पोताना जावनें
 एकलुं दुःख मात्र देईये.

सार

एकनी पाक्षेज सर्व गुण जोईये एकी देवजी द
 शा मथी. एटला माटे जेनें अनेक गुणनी आ
 शा हे तेनी ते पुरी थती मथी, माटे खद पाणी
 नें आपणा गुण छाय ते उपर अनादर करबो न
 हीं. भेहेनत करीनें ते गुणनी वही करवी, सच
 ला गुण पेदा करीनें तेनं फल तो एज, जे मननें
 आनंद पसाडव. ते आनंद जेटलो देईये आपण
 नें अनुकूल कर्या हे. तेदलामांज करी लोईये.
 तो आ मनुष्य लोकसां जे सुख हे ते ते पुरुषनें
 प्राप्त थयां.

पात

(१५९)

ब्रात ७५

किडी अने माख

एक दिवस किडी अने माख एमने पोत पोताना छोटाई माटे घणो कटकट थयो. माख किडीने केहेके, अरे छारी छोटाईनो तो कोई ने आंतोत्र नथो; ओं जे यज्ञ याग इत्यादि कर्म मां जे जे पदार्थ होयके, ते प्रथम ऊं चावुं, पक्षी देवने ते मळे, देवना डेरमां उंचुं देकाणुं ते झां. ऊं डेरामां रजकुं एटलुं कोई रेहेतुं नथो. छाने राजाना सभामां अवाने कांई चटकाव न हो. ऊं राजाना सभाउपर बसुकुं. ए प्रमाणे छारे जे जे जोईये, ते ते ऊं मेहेनत कथी बना खाजकुं, पीजकुं, अने भोगवुं कुं. एवी जे ऊं ते छारीसाथे तुं रांक बरोवरी क्वांदांथी वार क रोखुं किडीचे ते सवळुं सांभळी लिधुं, पक्षी तेने उत्तर करेके, अरे सांभळक. छोटा छोटाओ ने घेर अर्दने असवुं, एमां घोभाके खरी, पण

छारे

क्यारे ज्यारे नेतर होय त्यारे; तने तो लोक हीं
 को मेहेले, तोय तुं लाज वनी यईने अन्न उपरवी
 उठती मधी. ते राजानो सभामां जवानो, अने
 राजाने खभे वेसवानो वातो छोद्यो वनावीने
 कहियो; पण छाने खरी खबर हे, जे एक दाहा
 हो ऊं दाणो लेईने छारा चरभणो जतो हतो,
 त्यांहां रस्तानां तमारामांनो एक यहस्य, एक
 पदार्थ उपर वेशीने छी मटमडावतो हतो. जे
 पदार्थमं नामपण छोडे बोलतां लाज आवे हवे तं
 केहेके के ऊं डेरामां घणं रऊं, तेनं कारण ऊं
 तने कऊं, तारे घर बार कांडे के महीं, माटे तं
 देवना डेरामां रहोने दाहाडांकाडांइ, तं अछा
 री पेटे मेहेनत करीने दाणांनो संयह करती न
 थी. माटेज तारे टाडना दाहाडामां भवेमरव
 पडेके, अने अछो उद्योग करीये कीये; माटे तं दा
 हाडामां सार्द पीईने ऊं फाळा घरमां सुखी रहीये
 कीये,

सार

उद्योग नाना प्रकारना के, केटलाक एवा है जे
 जेमां कांई फलज नथी. जे करीमें छोटी बडार्द
 मान देखाइवी अने विजानें आपणो कंटाळो आ
 णवो विजा केटलाक एवा है जे जेना करनारा
 ज्याहां जाय त्याहां ते सर्वनें गमे. जेनें उद्योगके
 माटे राजानो सभामां जायके, एवं न होय तो,
 कांई उद्योग नथी माटे दाहाडो काहाडवा सा
 ह जायके तेजे राज सभामां जवानो प्रतिष्ठा के
 हेवी नही. दंभ देखाडवा सार जे देवपूजानो
 आडंबर मांडेके तेनो ते भक्ति या कामनी, जेनें
 पोतानें घेर कोदराना रोटला मळता नथी तेनें
 कांई छोटा ग्रहस्थनी पंक्तीमां मिष्टान्न मध्यं मा
 टे तेमां कांई छोटाई आवी. तो तेज छोटा
 माणस जे, जे उद्योगी, अने जे पोते मेळवेली स
 पत्तोनुं, सुख भोगवे, अने. जेनें उद्योगी माणस गमे,
 जेनें आळशी माणसनो कंटाळो आवे, एवा पुरु
 षनें छोटा पदवी न होय तोपण तेनें सर्व लोक
 माने.

(१२४)

बात ८१

घयडो कुतरे

एक कुतरे प्रथम पौनानी जवानीई मां घणाक
अकार मारीने पोना उपर धणानो कूह पेदा
कथो, ते समयमां धणो तेने बचोवो करे, खोळा
मां बेसारे, तेनें साहं साहं खवरावे, पक्षो घयडो य
यो त्यारे ते कुतराथी तेवो चाकरी बाध नहीं
एवुं ययुं तोपण एक दाहाडो ते धणोनी साथे अ
कारनें गयो, त्यांहां साथेमां कुतरांथी शागळ ज
ईनें तेणे एक हरणनो पस पकडो. पण तेना
झोसांना केटलाक दांत पडो मयाहता अने के
टलाक रच्या हता ते हालता हता माटे तेनाथी
सारी पेढे ते झलावो नहीं, अनें हरण खेचाखेव
करीनें कुटीनें माशीं मय, त्यारे धणोनें कुतराउ
पर घणो सीस चडो, अनें तेनें मारवा मंडो, त्या
रे कुतरो केहेक; अरे मोच लगारेक हाव बंधरो
ख, ऊं तागे जुनि चाकर हुं, माटे काई विचार

कर

(१२५)

कर, दो हरणमें एकड़बानां काँई खाळस कयुं
नवी, पण झारो उपाय न बाख्यो त्यांहां ऊं मं
करं. हवे मयड यक्षमां झाराचो तारो चाकरो
बती मची, माटे तनें रोस चडेके पण झारी खा
खळनी चाकरो उपर मजर राखीनें काँई कर.

सारं

घणुं करीनें धणी लोकोनी कृतज्ञता एकीज दी
ठानां आवेके, जांहां सुधी आपण तेना कामनां
आवीये त्यांहां सुधी ते आपणो. पक्षी आपणुं
काम नवी एवं बयं एडले ते आपणो नहीं, एत
अ आपणे जेना उपर उपकार कर्यो ते पुरुषना
पक्षी आपणची उपकार न बाय खबवा बोडो बा
य तो ते पुरुष प्रबनना उपकार न संभारतां उ
ळटो आपणनें अपकार करवा रडे:-

बात

(૧૨૬)

શ્રાવણ ૮૨

માટે સમઢીનો હોકો

એક સમઢીનો હોકરો ઘણા રાહારા સો પ
કોને મરવા સરહો યયો, ત્યાર પોતાનાં પૂર્વનાં
કર્મો કર્મ સંભારીને તને છોટું મય પેદા થયું.
હો તે માને કેહે. મા કાર્દ વા ઉપવાસ દા
ન ધર્મ દેવભક્તિ કરીને દેવનોપાસે જ સાજો થા
જાં એવું માન. મા ઉત્તર કરે. વાપા દેવ ત
ને સાજો કરશે એ મત્સો જ્ઞાને આવતો મળી, જે
તું સવઢો જન્મ દિસા કરતો ચાલ્યો, અને કો
રૂંચે દેવને ચર્પણ કરેલા પદાર્થ તેં ચોરી લાવા
માં તેં ચાણ પાકું જોયું નહીં. અને તેનો તને કો
ઈ દિવસ સંતાપ પગ થયો નહીં, તે તારે માટે જ
દેવપાસે કિયે છોડે પ્રાર્થના કર તે કેહે.

સાર

મગ્રબો ઘણાં દુઃકર્મ થયાં, હવે દ્વારો શીત
અથવા એવા વિચારમાં પડીને મરતી વડા એ હો
તું મય પામનાર, એવું લગ્ન મનનાં ધારીને રા

જગ

(१२७)

जज सावधान कां न चरिये. जे वड वयो जने
जेने आगळ पाप करवानुं सामर्थ्य राखुं नवो, म
टे जे पश्चात्ताप पयो ते पश्चात्ताप खो नही.
अने खरा पश्चात्ताप गिना परमेश्वर क्षमा कर
तो नही. हाताटे जे एवा पाती उपर क्षमा क
रीने देह पापना वडी करा करे. हाताटे जे पो
तानो मरण काळ सुखे करीने ववाते इहे तेणे
प्रथमज सावध चरिने साप उपरची वृद्धि बेवजो
करवी.

—○*○—

वात ८२

सिंह अने उरर

एक सिंह जन्हाळाना दाहाडामां अरण्यमां ए
क आंजानी शीतळ छायामां निश्चिंत सुतो सुतो
त्यांहां तेना शरीरउपर चरिने उररें दोडवा मां
जुं. तेथो ते जाग्यो. तेना पंझाजां एक उरर

दाडो

आँखों तेनें तेणे मारवा माँझो. त्वारे उदरे ते
 भी प्रार्थना करी हे महाराज तने छोटा हो सव
 लों पशूना राजा हो. ऊँ तमारी आगज केव
 ल रंक हूँ छारे रहिरे तमारो हाथ बटाऊयो
 नहीं. अने अने जीव दान आपवुं एतमने द्या
 ग्यहे. ते सांभळीने सिंहने दया आबो अने उद
 रने मेहेली दीधो, पछो एक दादाहो तेज सिंह अ
 रण्यमां फरतो फरतो तेज आँवा तळे पारधोवे
 जाळ माँखी हतो तेमां आबोगयो. तेमां सिंहे
 पोतान बळ हतुं तेठलुं सवळुं सरब कयुं पण
 हुटको बयो नहीं, पछा छोटे शब्दे करीने आर
 हवा माँझुं ते सांभळतांबेतज ते उदर सिंह पा
 से आँयो अने केहेवा लाग्यो, राजा भय पामीज
 नहीं निश्चित रहे एम कहोने तेहे दांते करीने जा
 लनी माँढा कातरी माँखीने सिंहने जाळमाँखी कु
 टो कर्या.

(૧૨૬)

સાર

છોટા હે તેમનું પણ છોટું કામ વણતે મહામાં
ને હાથે વાળે, ઘટલાનાટે જે આપણી સત્તા
માં છે તે ઉપર છેલ્લે કરીને કાગજ રાણવી. મહા
માને હાથે પણ ઉપકાર થઈ સકે. વૈભવ જે
મેં સર્વદા સરસો ચાલતો મળી. એવી વાત જો સ
રીકે, તો પછી આપણ સર્વ લોકો સાથે સારે મા
થે કાં ન ચાલીયે. આપણી ચાલતી વસ્તુમાં જો
આપણે લોકો ઉપર ઉપકાર કરી મેહેલ્યો
હોય, તો લોક પણ આપણો પક્ષતી બેઠામાં
કાનમાં આવે, સવલા ન આવે પણ તેમાંનો કોઈ
ઈ એકાદો પણ ગુણ જાણનારો નીકળે, જે એક
નો સહાયતાથી આપણાં સર્વ સંકટ માને.

—૦૦૦—

વાત ૫૩

ઉદર સાથે સિંહોનું લગ્ન

પરવાડેની વાતમાં કહેલો સિંહ, જાળમાંથી છુ
ટો થયા પછી રાજી વર્દને ઉદરને કહેવા લાગ્યો.

ચરે

सरे तें हानें छोटा उपकार कथी माटे ऊं ता
 रो उपकारी यथोक्त, हवे तारे जे जोरिये ते मा
 न, ऊं जापोय. ते सांभळीनें उरर फुल्लो जने
 पोतानी योग्यता शुं मानवाना के अने शुं मानवाना
 मवी, ए विचार्या विनाय सिद्धने केहेके, विनय
 करुं महाराज. जे माटे तमे प्रसन्न यदने गने
 ते माने एम कहोको, तो ऊं मर्यादा मुकाने मा
 बुंहे, जे तमारी कन्या हाने जापो. ते शब्द का
 ने पडनाय सिद्धने घणुं लाट लाय, पण शुं को न
 यमधी बंधायो एटला माटे कहा, जे जापो, एम
 कहोने तेरो पोतानी कन्या उदरने आपवाने जा
 णी, तेने पोतानी जवानानी धनमां चालतां तेना
 पन उदरउपर पडो. एटले ते तस्काळ मरण
 पाव्यो.

सार.

चारणासां सारा न तानो विचार नहोय तो
 हरथक पक्षुना रक्षा करीने आपण दुःखा मर्दय.

सारा

(१११)

सारामरतानो विचार जेने नवी, ते छोडो राजी
 होय तोपण ते पोताना आत्माने सुखी करीसकतो
 नवी. ते राजा जेने रांकना जेवु दुःख भो
 गवेहे, जेने रांकहे, ते सारामरतानो विचार क
 र्याची, इंदनी संपत्तीना सुखने भोगवेहे. या सारा
 सार विचारने लक्षण एअ, जे जे कोण, झारी हो
 ग्यता श्री, झारो निर्वाह केडलाना बायके, इत्या
 दिक जोरने जे पगला मांडना ते,

—००—

वात ८४

ससलां जेने देहकां

कोई एक बलत, घणो वा कुठ्यो, तेवी सघ
 लां झाड होलवा लाग्यां, जेने भंडुपरनां मांद
 लां उडवा लाग्यां, जेने घूळ उखाडी दग्गेदिशा
 या संघाघंध जर्दयो. ते जोरने, एक चामा
 ससलां हतां ते, विहीने मभरार्दने जातां, ते जे

ये

दो प्रयत्न वाडथी नहरे नीकच्या. आगळ जतां ते
 उमे एक मदी आडी आवो, त्वारे ते दुःखी पदे
 में केहेके चरे, हवे पुनं ययु! जांहां जईये त्यां
 हां आपणी पळवाडे विपत्तीज आवेडे; माटे आ
 वा संकटनां काळ काहाडवी ते करता, नदीमां
 पडीमें जीव आपीये ते सारु. एवो सर्वेचे निश्चय
 करी, अने नदीनी तीरे गयां, त्यांहां देडकां वा
 हेर नीकच्यां हतां तेमणे ससलांने दीठां, एटले
 ते पाणीमां डुबकां मारीनें तळे जईनें वेठां. ते
 जोईनें तेमांनो एक ससलो, देडकां भणो हाथ
 करीनें, बिजां ससलांने केडेके. या, या जुयो!
 भय सर्वनी पळवाडे लाग्युं हे, आपण तेथी बिहो
 में जीव आपीये, तेकरतां धोरज राखीनें जे दुः
 ख आवे ते सदांने संकटनें सांभा कां न रहीये?
 ते सांभळीनें सचळां त्यांहांज उभां रद्यां. पछा
 केटलीक वारे वा मांत ययो.

सार

(१२६)

सार

कैटलाक लोक, नाना प्रकारमां भय कल्पीये,
हाथ हाथ कयन यये? शुं यये? एवी चिंता करो
नेज रात अने दाहाडो काहाडे छे. ते एम जा
जो के जे जेठलां दुःख छे ते सचलां आपणीअ प
हवाडे छे. त्रिअं सचलं बिअ सुखीछे, पण ते जेनें
सुखी केहेछे तेमां दुःख जो ते जुए तो ते एम जा
जे जे आपण छोये ते सारा छोये. परमेश्वरे पो
नानी तरफती सुख दुःख सरलां बेहेची आप्पांछे,
ते आपणनें बत्तां ओकां लागेछे ए आपणं मांड पण.

सात ८५

देउकां अने शियाळ

एक बज्जोलो एवे नामे देउको हतो, ते ए
क बलत तलाबमांओ बाहेर नीकळीने एक उंची
जग्या उपर बेसीने सर्व जनावरोने छोटे सरे क

रीने

રોને સંભળાવેલે. જાં છોટો સારો વૈદ્ય છે, નન
માં આવે તેવો રોગ હોય તો તેને જ મટાડું, એ
વું બોલોને તે પોતાનું જાળવણું દેલાડવા સામ કાં
ઈક શાસ્ત્રનાં વચન વરવડવા લાગ્યો, જનાવરો
એ તેનો અર્થ તો સમજ્યો નહીં પણ એમ જાણ્યું જો.
આ કોઈ છોટો જાળ વૈદ્ય છે. પછા તે જો જો વા
સતો ગયો તે તે સાંભળીને સર્વથે માથાં હલાવ્યાં.
તેમાં એક શિયાળ હતું, તેનાથી તે સહેવાયું નહીં,
ત્યારે તેણે રીસ ઘડાવાને દેડકાને કહ્યું, ગરે તા
હું જડવું ફુલેલું છે, અને તાહું સઘળું અંગ ડાઘે મ
ગાયેલું છે, મારા ઉપર કાંઈ તેજ દીસતું નથી, તે તું
કેહેલે જો જાં વિજાનો રોગ કાઢાડોમ, એનો તને
સાજ વામ નથી આવતા.

સાર

જેથી પોતાના શરીરના રોગ દૂર થતા નથી, તે
ણે વિજાના શરીરના રોગ દૂર કરવાની વાતમાં
પડવું નહીં. જો વિજાને ઉપદેશ કરે તેનું આચર

न एवं आर्हये जे ते बातमां लोकोने सदेह परे
न नहीं, तोज तेनो उपदेश मान्य थाय, जे दोष
जिआ लोकोंये मांछादेको एवो आपण चार मा
णसमां उपदेश करीये, ते दोष आपणमां न होख
तोज ते उपदेश मान्यामां आवे, नहीं तो नशक
री थाय.



बात ८६

कागडो जेणे मोरनां पी

छां शरीरमां खोशां हतां

कोई एक कागडो हतो, तेना मनमां एवं आ
खु के ऊं छोटी याऊं, आपणी जात हलकीछे,
मांटे एमो संन राखवो नहीं. पछी तेणे कांई मो
रनां पीछां एकठां कर्था. ते पोतानो पांखोमां
खोशीने ते मोरनो मंडळीमां घेठो, तेमछो तेनें
जातांमांज झेलख्यो, पछी ते घणा एकठां बर्दनें
प्रथम तेनें पांदोवती मारीमारीनें बदमुखा क

थी

धा, अमें तेनी बासेवी पीछी खंची लिधां, पोता
 जो मंडलीमांथो काहाडी मेहेल्यो, एवी अवस्था
 जया पछी ते खेद पामांन पावो पोतांनो आतमा
 घेसवानें गयो, तें वखत कागडाचोनें एना पर्व
 कर्मनी खबर हतोअ, पछी तेमणे तेनें पासे उमो
 राख्यो नही, अनें तेमांनो एक तेनें होः धुः क
 रीनें केहेवा लाग्यो, अरे मखी तनें परमेश्वरे जे
 जातीमां पेदा कर्छोके, तेनें तें छोडी नहोत तो आ
 अ तनें आ अपमान कां मळत.

सार

ईश्वरे आपणनें जे जानोमां जे ठेकाणे पेदा
 कर्छा, तेनें छोटी मानीनें विजानुं सारापणुं, छो
 ठपणुं, आपणे ठेकाणे खंची लिधां जरये, तो दुःख
 मां पडोये. आपणी बरोवरीवांळाना मनमां आ
 पणाउपर कंटाळो आवे एवं करे, ते पुरुष ते त
 रफती भ्रष्ट वाय. परजातना हे ते तेनें तिर
 स्कार करीनें उपहास करेके. अमें जातनो हेवी
 माटे जातना पण तेमो अंगीकार करता नचो.

बात

(१३०)

बात ८७

सिंह चने पशु

कोई एक बहुत सिंह, चने केटलांक विजो न
शु एमनो एवो करार बयोहि जे, आपणे एक सत्ता
ये एक विचारे चालवुं, जे मळे ते बरोबर भाग
करोने बेहेची लेव. पछी एक दिवस सिंह, शि
याळ, दीपडुं, चने चितरो, ए चार जणे मळीने
एक हरण माधुं. तेना शियाळे चार भाग क
र्या. ते बहुत सिंह आगळ आनीने तेमांना ए
क भागउपर आंगळी धरोने तेमने केहेके, चरे
सांभळोके. या भाग तो ऊं द्वारे कर जाणी
ने खेजक. या विजो भाग तो द्वारेअ लेवो,
आमाटे जे तमे जे पराकांन कर्युं ते सचळ द्वारे
सामर्थ्यची, पछी विजा भाग सामुं जोर्दने माधुं हो
आनीने केहेके, या भाग द्वारे एटला माडे ले
वो जे तमे द्वारी रहीवन चने ऊं तमारो रा
जा, माडे तमे चने मत्तीये करीने आपणोच.

हवे आ केला भागी तने जाणोको? आपणो सम
 य हुसणां भीडनो हे, माटे फौजनं माटे आपणो
 पासे कांई खावानं हे नहीं, वास्तु द्याते आ जन
 न करीनें संपन्न करीनें दोलो छांडवो योग्यद;
 कां जे आनळ जेनी भीड पडे तेनी तजवीज आ
 न करी मेहेलवो एवो नोन हे. कां? ऊं कज्जं
 कं ए नमारा विवारमां आवेके के नहीं. मा के
 केशो तो तेनां द्याहं कांई जन नहीं, पण तज
 रो भाग्य जे ए मनतां समज जा.

सार

दुर्बल जनें बळवान् समनो एको घणा दाह
 का सुधी पांशरो चालतो बघी, बळवान् हे ते प्र
 यमज एक बती बलत बचन आपेके, पण बलत
 पडे तेनें बचन तोडतां बार खानती बघी, माटे
 तेनी साचे घोन कावो ए. प्रथम मूर्खार्, जनें ए
 क बार तेनी साचे घोन कर्था पक्षी कशीनें ते ब
 ने, जनें कांही कहोनें बिजा पासे मयकरी करा
 वे एतो यथंत मूर्खार्.

(१२६)

बात ८८

दीपडुं अने बनलुं

कोई एक दीपडे बाडह मारीनें खाधं, तेनं हा
डकुं दीपडाना गळामां बटवयं, तेनी पोडाये ते घे
लो यईनें बरका पाडतो ते अरण्यमां फरवा ला
ग्यो. तेनें जे जे प्राणी मळे तेनी ते प्रार्थना क
रे जे महाराज छपा करीनें छारा गळ्या मांघो
आटलुं हाडकुं काहाडयो तो ऊं तसनें सारी वि
दाय आपोश. ते सांभळीनें एक बयलो विदाय
मा सोभयो आनळ ययो, अने प्रथम दीपडाना
हायनं वचन लिधं, पछी तेणे दीपडाना गळामां
पोतानो सांबो डोक घाळीनें हाडकुं बाहेर का
हायं, पछी विदाय मानवा लाग्यो ते बलत दो
पडुं बांख्यो काहाडोनें तेनें केहेहे, अरे तारा सर
लो मूर्ख हो पैलोक्कनां दीवो नही. अरे तारी
डोक छारा छोमां हतो अने ते छोन करतो अ
नि-तनें जोवतो मेहेल्यो, तोफण तुं राजी बयो
नही.

बार

(१४०)

सार

कोटलाक नीच एवा होयके. को तेने सहाय
बवानां वे दोव चायके. एक तो ए जे जेने स
हाय बवं योग्य नहीं तेने सहाय बवं. अने बि
जु ह जे जेनी साबे संबध करीने आपण संकट
बामीये. सार करमारने गरतु कववं, ए दुष्टानां
जाति क्षमाय हे. एवाना हायमांभी हांमी न चा
य अने कुट्या एटखे घणु मेळव्यु एन समजवु.

—०*—

वार्ता ८६

वे ठले अने भाजी बेचनारो.

कोई एक भाजी बेचनारानी दुकाने वे ठले
बया. ते मांहेने एके तेनी मजर चोरावीने एक
कोटोळामो कडको चोरीने सोबतीने चाखो. ते
सोबतीये पोतामा जानामां संताखो. भाजी बेच
नारो जोवा खाग्यो, तो कोटोळामो कडको न

हीं त्वारे भागी वेचनारो तेनें केहेके, अरे तमे
 क्षारो कोहोळानो कडको घोर्यो ते झट काहा
 हो, महंतो तमारी शेभा रेहेतें महीं. ते वख
 त जेणे घोर करी हनी ते केहेके, अरे ऊं स
 म खाऊं, जे तारो कोहोळानो कडको क्षारी
 पासे हये तो क्षार नसतान जये. जेथे सनाडो
 हनी ते केहेके, भाई जो ह्यो तमारी कोहोळा
 ना कडको घोर्यो होय, तो सघळा लोकोन पा
 य क्षारे माये. ते सांभळीने भाजी वेचनारो के
 हेके, अरे ऊं तमारा वोलवानो आभिप्राय सम
 ज्यो, तो तमे वे अगमां एक जणो चोखे, अने त
 मे बेजणा लुच्चा हो, एमां कांई क्षाने संशय नथो.

• सार •

माणसनें बचन सम सरल, तेमां भलो जेम स
 मनें माने के. तेच बचननें माने के. अने जुटो
 समनें मानतो नथो, ते बचननें पग मानतो नथो.
 माटे चोर, ठग, जुटो, ए सघळा एक माळाना

मणका

મનકા છે, એમના સમુપર વિશ્વાસ રાખવો નહીં, કેટલાયંક જુઠા એવા હોય છે જે, તે જુઠું વાસ્તાવે પોતાને જુઠામાં મળતા નથી. તે સમય પાશ્વર્યામાં પાપ છે એવું આજીને જો જુઠા સમ હાવા પડે તો એવા હાય છે, કે જેમાં તે અર્થ જે તરફ લગાવીએ તે તરફ લગાવી સકાય, એવો જે હાથ તેને તો મહાપાપી કહેવો. શમાટે જે જેનો દુશ્મન માન્યો બ્રહ્માંડ પેદા થાય છે, અને લીન થાય છે. અને જે મનના સાક્ષી, એવા પરમેશ્વરનો આગળપણ પશ્ચ શબ્દ કહેવામાં જે પુકતો નથી.

—oo*oo—

વાત ૯૦

માલી અને કુતરો

એક માલીનો કુતરો વાડીમાંનો ઘાવને કાંટે કુદતો હતો. તે ઘાવમાં પડ્યો, અને આરડવા લાગ્યો, તે સાંભળીને માલી દોડ્યો આવ્યો, અને

તેને

તેને કાઢાડવાને વાવમાં હાથ ચાલતાંવેતજ કુ
તરે તેનો આંબલીયોથે વચકું ભયું. ત્યારે તેને
માઝી રીસ ચઢાવીને કહેછે. ચરે દુષ્ટ, તને ઝી
વાડવાનો જે હાથ, જે હાથે આજ સુધી તારું ભ
રણ પોષણ કર્યું. તે છારા હાથનેજ તે વચકું
ભયું, ત્યારે હવે તું મર, તજ સરસા અપકારી ઝી
ત વચવા કામના નહીં. એવું કહીને તે કુતરા
ને વાવમાં તેવોજ મુડતો માંછીને ચાલતો ગયો.

સાર

જે કૃતજ્ઞ છે તે કરેલા ઉપકારને વ્યર્થ માની
ને ઉઠટો આપણને અપકાર કરેછે. એ માટે જે
પરોપકારી પુરુષ છે, તેમણે જો કોઈને ઉપકાર
કરવો હોય તો પાત્ર-જોઈને કરવો. દુષ્ટને ક
ર્યો હોય તો તે વ્યર્થ જાય, અને આપણી હાની
અને અનતમાં હાસી માત્ર પાવ.

(१४४)

बात ६९

मेहेताजी अने नीसाळीयो

कोई एक नीसाळमांनो होकरो, नीमळानुं
लाकडं कमरे बांधीने नदीमां तरबं शीखतो हतो,
एक दाहाडो तेमा मनमां एवं आव्युं जे हवे आ
यणने तरतां आवडुं, हवे लाकडानुं शुं काग के,
एवं जाणीने तेणे ते लाकडं नदीने किनारे मेहे
लांने नदीमां तरवा पडो, ते प्रवाहना जोरधी उं
डा पाणीमां गयो, अने गळकां खावा लाग्यो, त्यां
हां दैवयोगधी एक झाडनुं डाळुं नदीमां लटक
तुं हतुं ते ठेकाणे ते तणातो आव्यो, अने ते डा
ळुं लटकरीने हालीने बुडुंकुं रे बुडुंकुं रे एम कहीने ते
जे बुमो पाडवा मांडो के, ते समयमां तेनो मेहेता
जी नदीने कांठे सहज आव्यो हतो, तेने काने ते
दीन शब्द पडो. ते आव्यो जरीने जुएके तो नी
साळीयो महासंकटमां नजरे पडो. त्वारे तेणे
ते लाकडं नीसाळीया भणी मांखुं ते हालीने ते
कांठे आव्यो. ते वसत मेहेताजीचे तेने आ उप

देश

(૧૪૫)

દેશ કર્યો. અરે હજુ તારે આગળ આ સંસાર રૂ-
પી નદીતરથી છે, તું સ્વતંત્ર થવા ઝેવો હજુ થયો
નથી, માટે તારાથી જે છોટાં હોય તેમનાં થય
ન નદીમાં તરવાના લાકડા સંરણાં માગીને તે પ્ર-
સ્થાને જાયતો જા.

સાર

કેટલાક પુરુષ એવા અભિમાની હોય છે જે હ-
જાર તરફથી દુઃખ સેહે પણ વિજ્ઞાની બુદ્ધિ સોદને તે
પ્રમાણે ચાલું એમ તેના મનમાં આવતું નથી. આ સ-
સારસમુદ્રમાં રહેવું ઘણું કઠણ છે, અહીંયાં એવા
કોઈ પુરુષ દેખાતો નથી જો જેને વિજ્ઞાની સહાયતા
ન જોઈયે. તેમાં પણ જે જવાન છે, જેને સૃષ્ટી
નો રીત હજુ સારી પ્રેરે સંમગ્નમાં આવી નથી,
તેમને તો સર્વથા પોતાની બુદ્ધિયે ચાલવું નહીં.

વાત

૩૮

(१४६)

पान ८२

कुकड़ो खने रत

एक जवान कुकड़ो ने कुकड़ोघोने साधे खेदे
ने उकरडो खोतरतो हतो. तेमांघो जे सारी ब
सु मोकळे ते कुकड़ोघोने आपोने तेने रीसबतो ह
तो. तेमांघो खचानक एक रत तेनो नजरे पखुं,
तेनो कांतीघो आ रत हो एवं तेघो जाणुं. पण
एनो उपभोग खन करीघे ते तेने खर नही,
पछी तेघो पोतानी मूर्खार्द हांकवा साह ते रतन
उपहास करवा मांखुं, ते पांख उघाड़ने डोक ह
साधीने हो बांजु करीने तेने केहेके, खरे तं सा
इहे खर, पण तने शं करोये, झारी बुझीये तो तने
खवळां बड़ी सृष्टीनां रत तळीने एक ज्वारना
दाणानी खोवरी करो खककर नहीं एवं आवेहे.

सार

ईश योगवीं विद्या प्राप्त यथी, साहं भर्तुं भी
तो खनीतो ए समजवा साम्या, पण जेने तेनो खनु

भव

मज करती आबखो नहीं, त्वारे ते पुरुषने ते क
 धळुं केव, केहेवाच, जेव कुकडांने रत्त, पक्षी एवा
 जे पठित मूर्ख के ते पोताम, मूर्ख पणुं डांकवा ता
 क विद्यार्थिकन उपहास करीने पोताने मने तेव
 आचरण करवा मांडेहे, कर्मे केहेहे जे तरत फळे
 आवे एही बातो रेहेवा देईने विद्यार्थिक गुणम
 नुं करीये, एवं कहीने ते विद्वान् धईने हुलका
 काम करवा मांडेहे.



पान ६६

दीपडुं खने बकह म्हांन

कोई एक दिवस नरकाने ताडे करीने एक
 बकरीना म्हांने घणी तरफ खापी, त्वारे ते एक
 नेहेळा उपर पाणी पीवाने वव, त्यांहां उपली न
 रफ दीपडुं पाणी पीत वत, तेने जोरने ते ठेठली
 तरफ पीवा लाग्युं, ते दीपडानी अजरे अडतांजे ते
 ना बनमां लाग्युं जे, कोई निमित्तपी कळह क
 रीने ऊं एने मारी लाज, पक्षी ते दीपडुं ने बक

ने

में किहेके, चरे तें आ पाणी डोहोण्यं हवे ऊं हाम
 री तरफ बजल मटाउं, तारे पाणी डोहोळवानं
 मं काम हतं, तें उतावळुं केहे, महीनो जीव ते
 सेलीनें तारे जवुं धड्यो, वचुं बघाहं घमरायुं अने
 ममीनें बोसवा लाग्युं. दीपडा काका तमे को
 हाको ए संभवेज कम, तमारी तरफचो पाणी व
 होनें आवेके ते ऊं पीऊंक, एवंके तोपण झारुं डो
 होळेलुं पाणी तमारी तरफ अवळुं कम चड्युं.
 दीपडुं बोळ्युं, ते हो, पण तूं खुच्चुंके, तूं चाजयो
 क महीनो उपर झारी पुठे छाने गालो देतं हतं
 एवं हो संभव्य के. वचुं बोळ्युं हरि हरि ए वा
 त कम संभवे, छाने जन्म्यांज वंज महीना थया
 मयी, तो ऊं क महीना उपर तमनें गालो कम
 देउ. दीपडुं त्यांहां पण बंध चवुं, पळी घंभी रीस च
 हावीनें आंखो काहाडीनें हाथ पण पछाड तूं बसा
 पासे आव्युं अनें दांत पीपीनें केहेके, चरे रांडना
 गालो तें मही दीपी होय तो तारे बापे दीपी
 हगे पण ते सचळुं एकज, एम कहीनें तेणे ते
 मनाथनो जीव लांचो.

(१४६)

सार

जे दलीयो अमें घातकी छे तेनो आगळ, आ
पणा खरापणानें भहसे दुर्बळनें, रेहेवुं नहीं.

—○*○—

बात २४

कुकडी अमें चकली

एक कुकडीये उकरडे सोतरतां सापनां ईंडां
दीठां, ते उखेरवा माटे दयायेकरीनें कुकडी ईं
डां उपर बेठी, ते जोईनें तेनी पासे एक चकली
आवी ते रीस चडावनें तेमें केहेछे, अरे तनें शु
कहीये, तूं आवा दुष्ट जीव उपर दया करछ पण
ऊ तनें कऊकुं ते सह जाणजे जे आ सापनां व
खां ईंडा मांछेवी बाहेर नीकळये एटले पेहेलां
हारोज प्राण लेशे.

सार

३८

(१५०)

सार

दुष्टनें दंड देवो तेनाउपर दया करवी ए शा
घणो नाश करे, माटे जे जाते दुष्ट होय ते उष
र मने तेडलो उपकार करो पण ते पाताना स्व
भावनें मेहेसनार नहीं.



वात ६५

गोवाळीयो अने खंडेराव

कोई एक गोवाळीयानी बाछडी अरण्यगां खो
बायी, त्वारे गोवाळीये तेना घणो शोध कथो,
पण जडो नहीं; त्वारे तेणे, खंडेरावनें मानता मा
नो, हे देव, जो तूं बाछडीना चारनें च्यारी मज
रे पाडीश, तो ऊं तनें बकर चडावीश. एवुं ना
मीनें लगान्न खावळ मघो एटले, झाडीमां एक वा
घ बाछडीनें मारीनें खातो हतो, तेनें गोवाळीये
दीठो, ते वखत भयघो गोवाळीयाना गाला गरम

यय;

(૧૫૧)

યથા; અને ઘરઘર કોંપવા લાગ્યો. પછી પારીને
 હંડેરાવને માનતા માનવા લાગ્યો, હે મહારાજ,
 તોર નજરે પડે માટે સ્ત્રીતમને વકરું ચડાવવું મા
 મ્યું હતું, તે તો તારું સહી વ્યું; પણ હવે છાને આ
 વાઘના હાથમાંથી જો હોડાવોશ તો ઝં તને એક
 સુરઝી ચડાવોશ.

સાર

જે અજ્ઞાનો છે, તે મનમાં એવું સમજે છે કે, ત્યાં
 વ માટે પરમેશ્વર આપણું કહ્યું કામ કરશે; જે
 મું અજ્ઞાન કોકરાંને છે એ, સાવાસાર મા આ
 યણું કહ્યું કરશે. હાહાયા છે તે એવો માનતાજ
 કરતા મથી, જે પરમેશ્વરે આપણને પેદાકર્યા,
 તે ઉપર વિશ્વાસ રાહીને, તેણે જે ભોગદાનું સ્થળ
 છે તે ભોગવીને સ્થાય રહે છે. સંકટ વખતે દેવની
 પ્રાર્થના કરવી પડે તો, તે એવી કરે છે કે જે પર
 મેશ્વર જ્ઞાત કલ્યાણ અકલ્યાણ સંબંધ તું જાણજ,
 અને ઝં તારો કું તને જે સારું થમેતે કરજે.

પાત

(१५२)

प्रात २६

शियाळ अने मधेडे।

कोई एक मधेडानें सिंहनुं घामडुं जडुं, ते को
डोने ते वनसां होडवा लाग्यो. तेवें देखे एठले
सघळां जमावर विहीनें नाशी जाय, ए प्रमाणे ते
ए केटलाक दाहाडा सुधी घोळ घालीनें वनच
रोनें ठग्यां, एक दाहाडो तेना अने शियाळना स
मागम बघो, त्वारे शियाळनें विहीवरावा माटे न
धेडो तेनी उपर छोटा आवेशेकरीनें चाल्यो, अ
नें सिंहना सुरखो-शब्द काड्हाडवा लाग्यो, पण
तेवा कयम मोकळे? मोकळ्यो तहीं, ते बलत शिया
ळ तेनें केहेळे, अरे मामा हवे एटलुं पुरं करो,
जे। तमे एटली जीभ बध्न राखी होत तो, ऊंपण
मननें सिंह जाणत पण तमारा भुंकवाची तमे को
णहो ते हों मक्कु जाण्युं.

सार

(૧૫૩)

સાર

હાડનો પરિક્ષા જેવી પાંદડા ઉપરથી ચાયકે, ત્ય
મ મનુષ્યની પરિક્ષા બોલવાથી ચાયકે, જે મનુષ્યનો
પરિક્ષા કરવોની હોય તેને બોલાવી જોઈએ એટ
લે તે પોતાના યોગ્યતા પોતાનેજ મુલે કરીને જે
બી કહેકે, તેથી વિજોથી કહેવાતી નથી, માટે જે
પુરુષના મનમાં પોતાનો મૂર્ખતા લોકોને અજા
બી ન હોય તો, તેને જોમ વંચ રાણામાં કેટલું સા
કું કે તે જુઓ, પણ એવી સેહેલી યુક્તો છે તો પણ
મૂર્ખોથી બોલ્યાવિના રહેવાતું નથી. જોતરી નથી
જો સહજાટ ઘણો, અધુરો ઘણો શબ્દ ક
રે, ત્યમ જેમાં સમજણે ચોથી, તે કોઈ વાતનો
સિદ્ધાંત મટ કરીને, મોલી જાયકે, એટલે સુમંગ,
ઘરેળું બાકતી, એ ઉપરથી તેના ક્ષોદ્ર પણાનો સ
દેહ પછો હોયકે, તેનો મટ કરીને નિઃસંશય વર્દ
ને તેનો મૂર્ખતા ઉઘાડી ચાયકે.

શાત

(१५४)

पात २७

देडकांये राजा करवाने

विष्णुनी प्रार्थना करीहतो

एक सरोवरमां सघळां देडकां एकठां यनिं
तेमणे विचार कथो, जे बापप ज्यां हांत्यहां फरतां
फरीये क्षीये, ममलां आवे ते करीये क्षीये, एठोक
मही. आपणा मायाउयर कोई पण धणी जोई
ये, जेना मयघी सर्व पोतपोतानी मर्यादाधी रे
हे. यही ते देडकांये राजा करवा माटे विष्णु
भी प्रार्थना करी, ते सांभळीनें विष्णुनें हसवं या
लुं, वनें आ ल्यो तमारो राजा, सम कक्षीनें तेणे
आकाशमांघी एक लाकडुं नांखुं. ते पाणी उष
र अयडातांज छोटे शब्द यईनें पाणी उकल्लुं,
मिथी देडकां घणां विहीनां वनें ते लाकडा पास
जाय मही. यही केटलीक वारे लाकडुं स्थिर व
युं त्यारे ते हालतुं घालतुं नवी एवं जोईनें हळु
वे हळुवे तेनीपासे मयां, ते उपर घडीनें बेठां व

नें

જે તેનો સાથે રમવા સ્થાન્યાં, પછી તેમના મનમાં
 એવું આવ્યું કે આ રાજામાં કોઈ જીવ નથી મા
 ટે વિજો સારો શોભાવમાન માગવો, પછી તેમ
 ને ફરીથી વિષ્ણુનો પ્રાર્થના કરી ત્યારે વિષ્ણુએ
 શાહામૃગ આણે, તેને આવતાં વેતજ દેડકાંને મા
 રીને છાવાનો શરૂ કર્યો, તે દુઃખ સેહેવાયું ન
 હોં ત્યારે, દેડકાંયે ગરુડનો પ્રાર્થના કરી, જે વિ
 ણુને શરમાવાને વિજો કોઈ સારો રાજા મોક
 લે, નહીં તો પેહેલા જેવા હતા તેવા રાહો. વિ
 ણુ ગરુડનું કહ્યું સાંભળીને ગરુડને કહેકે કે હ
 વે કું એ કરનાર નહીં, પ્રથમ તો જે રાજા આ
 ણ્યો હતો તે એમના વિચારમાં આવ્યો નહીં તો હ
 વે તેમનું કર્મ તેમણે ભોગવવું.

સાર

ઈશ્વરે આપણને જેવી સ્થિતિમાં મેહેલ્યા તેનો
 અમાદર કરીને નવું રક્ષીયે નહીં, અને જો રક્ષ્યું
 તો પછી જેવું આવ્યું તેવું ભોગવવું ઈશ્વરને દોષ દે
 શો નહીં. એક રાજા વિચારમાં ન આવ્યો અને વિ

જાની

(१५६)

जानी इहा करीये, एने खापण तेने खाधीन न
ईये, पछो ते दुष्ट नीकियो तो दोष कोने माये?

—००॥००—

बात ८८

वे कुकडा

वे कुकडा एक उकारडाना धणी पणा सार क
हता हता, तेमांनो एक दार्या, ते मामीने एक खु
णामां दबी रह्यो. एने जे जीत्यो ते एक उंच
ढेकाणे अर्दने बैठो, एने पांखो फडफडावोने क्षो
टे खरे ऊं जीत्योरे ऊं जीत्यो, एम बोसवा सा
ग्यो, एउलामां त्यांहां पासेज झाड उपर गहड प
धो भुख्यो डांपतो हतो, तेणे हल्लुवे रहीं हेडे
झडप मारीने ते कुकडाने उचकीने खेई गयो. ते
जोईने दबी रह्यो हतो ते कुकडो बाहेर नीकियो,
एने बिजां कुकडांपासे अर्दने पोमानं पराक्रम व
साजवा लाग्या.

सार

(१५७)

सार

जय अथवा पराजय क्यों होयता हर्ष अथवा
खेद करवो ए मर्लना. इच्छानी संपत्तीवे करीने उ
क्त यर्देने अभिमानयो फुलव, अथवा विपत्तीमां
धैर्य मुकीने केवल दीन अव, ते पण तेज. माटे वे
अवस्थामां जे बनने समान राखे ते छोटी, तेज
हानी, ते समझे जे, सुख, दुःख, जय पराजय,
ए बागलपाइल मनष्यनी पछवाडे बलग्यांज हे.

—○*○—

बात २६.

शीतलवायु अने सूर्य

एक दिवस शीतल वायु अने सूर्य ए वे ज
णाओने बाद पछो, वायु केहे छार सामर्थ्य ब
त्तु, अने सूर्य केहे छार सामर्थ्य बत्तु, एटलामी
एक बटेमार्न कामलो ओढीने जता हुतो, तेने

शोर्दने

(१५८)

जोर्ने वे जणायेये निसाल काहाडो जे, जे जा
 बदेगार्गना शरीरउपरची कामळो वेगळो करे,
 तेजुं सामर्थ्य वचुं; जेने ते घेउ, ते वखत जीवळ
 वायु आगळ दोडो। जेने कामळो उडाडी नांखवा
 शार कुंटी वेनेकरीने वावा लाग्यो। त्यमत्यम, व
 टेमार्गुये ते कामळो घडो घणो शरीमें लपेट्या;
 केलेवारें वायु वाक्यो। पक्षी सूर्य आगळ घडो,
 तेणे प्रयत्न एवं कथुं जे आकाशमां जेटलां टा
 हाडनां बादळां घनां तेटलां देगळां करीने टाहा
 जेने मसाडी, पक्षी हळुवे रक्षीमें पोताना उन्हा उ
 न्हा किरण ते बदेगार्गना शरीर उपर मुक्ता, ते
 ऐकरीने ते केटलीक वारे वृफारेंची अकळार्द
 ने तेमाथो ते कामळो सेहेवायो नही एवं थयुं,
 त्यारे तेणे ते शरीर उपरना कामळो काहाडीने
 देडे नांख्यो। जेने पासेनां हाडोमां जेर्ने हांयचे
 वेडा।

शार

(१५८)

सार

ईश्वरे मनुष्य भावना स्वावगां एवं काई मे
हेत्युं छे जे, जेहे करीने आपणची विज्ञानो बळा
त्कार सेहेवातो मवी, ते माटेअ आपण विज्ञा
पास एकारी ज्ञान अथवा काम करववा सार
जेटलो जेटलो बलात्कार करीये, तेठलो न करवा
ना आग्रह तेना हेहेतमी दृढ करीये. कंडुवा
शब्द जेमे म्हयने कठण करीने हठीलुं करेहे, ते
ग सीठा शब्द म्हयने कोमळ करीने आपणुं क
हां सांभळवोसोअ अनकुळ करेहे. जेने घणा रा
हाडाना अभ्यासची एकारी बातमी खरो बळोछ अ
ह अयो होय, ते बातने आपण अकस्मात आय
ह करीने. छोटी करवा मांडीये, तो ते प्राण आ
मीने पण ते वात खरो करवानुं अभिमान राखे.
सारांश सेंटलो जे, शीतळ वाय सरखो जे विरोधा
उपचार ते मनुष्यने स्वमत खरो करवा सार यो
जीये. जेने म्हयना तडका सरखो उग्र नही.
जेने जीवाळ एवा उपचार युक्तीची योज्या होय
तो ते आपणुं इकेलुं सिद्ध करे.

वात

(१६०)

बात १००

मा खने दीपड़

एक हठोल होकर रागे रोगों में बगो कंकास
करत हत, तेनें खानुं राखवा साह तेना माये व
णां बानां कथां पण ते खानुं रेखे नहीं. केलीबारे
तेणीये होकराने कहां जे जो नु खानुं नहीं रेखे
तो तनें दारणे दीपड़ बायुं के तेनें बायो, ते व
खन वारणे दीपड़ खेज बायुं हन तेणे ते शब्द
सांभव्या, अने तेणीये कहां ते करी, एवो वि
श्वास राखने बाट जेत घणोवार सुधी उभं र
ह्य. केलीबारे होकर रोगों यावुं एहले उंची न
युं अने दीपड़ाने वचाराने मुख्यां अरण्यनां जवुं
पड़्य. त्याहां तनें माखनां, एक शिवाळ सानुं म
य्युं तेणे पुछ्युं, भाई तनारी गी खबर के, यात्र त
नारा पन उधडता कम नवी, दीपड़ उत्तर करे
के. भाई यात्रनी बात तो कांई पुछीशज नहीं, ऊं
एवो घेलो जे एक खोनां केहेवा उपर विश्वास
राखनें भुखे नुथो.

सार

(૧૬૧)

સાર

આ વાતનો સાર મરા બોલવા ઉપર વિશ્વાસ રાખવો નહીં, એમો છે પણ કોટલાક તે મેહેલો દે રૂને કોણ સ્ત્રીઓના બોલવા ઉપર લગાવે છે, પણ તે ઠાંક દોસનો મઘી ઘણક કરીને સ્ત્રીઓ ધંધલ હોયકે, જે જેના બોલવામાં દગ નહીં પણ કોટલી ક શ્વોયો હોયકે, જે બોલેલું વચન મિથ્યા નજ ક રે અને સ્ત્રીઓમાં એવા એકે દુર્ગુણ દેલાનો નથી, જે તે પુરુષમાં ન હોય, માટે આ વાતનું તાત્પર્ય શટ સંજ દોસેકે, જે સ્ત્રી હો અથવા પુરુષ હો પણ તે ના મરા વચન ઉપર વિશ્વાસ રાખવો નહીં, જે તે બોલેકે તે તેમનાથી ચર્દસકશે. કે નહીં એનો પણ વિચાર રાખવો.

—*—

પોત ૧૦૧

કાચવો અને મહાપદ્ધિ

એક કાચવાને મરું ઉપર ચાલતાં ચાલતાં કંટાળો આવ્યો, અને તેના મનમાં એવો વિચાર આવ્યો, જે આ કાચમાં

काशमां जईनें सृष्टीना चमत्कार केवो दोसेके ते
 जाऊ, पक्षी तेणे पक्षीयेनें कर्हा के जे क्षमें आका
 श माने करेवे अनें सृष्टीना कौतुक देखाडे तेनें
 ऊ जे क्षमें पृथ्वीमां रत्ननी लाण्यो मालनके, ते दे
 खाऊ, गरुड पक्षीये ते हा कहीनें काशमाने आका
 शमां लोई जईनें सृष्टीना चमत्कार सचळा देखा
 ण्या, पक्षी काशमाने केहेवा लाग्वा, जे हवे तारी
 रत्ननी लाण्यो कवांहां के ते क्षमें देखाऊ, ते वखन
 काचवो पैलानो वेश लोईनें बढो, ते ओईनें गरु
 डनें रोस चढी अनें तेनें तेजे कुंछ ठेकाणे पोताना
 मल देईनें तत्काळ मारी गस्थो।

सार

प्रतिज्ञा प्रमाणे करीये नहों तो तेमां हानी
 के, छोटा होय तेमनी प्रतिष्ठा जाय अनें जे मध्य
 मके तेमनी तां प्रतिष्ठा जाय, अनें दुःख पण
 जाय, अनें मरल जुठा बिजाने ठगवनि दूके, तेमनुं तो
 सर्वस्र जाय, अनें समय पडे प्राणनें पण धक्को लाने।

भाव

(१६२)

प्रातः १०२

वननो देव खने मार्ग

कोई एक वननो देव हतो, ते टाहाडना दिव
समां अरण्यसां फरतो हतो, तनें एक बटेमार्ग
मथ्यो, ते टाहाडे बटेमथ्यो ययोके एवो जोईने व
नदेवने दया आवी, अने तेने वेणे कह्युं जे बाबा या
पासेना पर्वतमां झारी गुफा के, त्याहां आवे तो ऊं
तारी टाहाडने काहाड, पक्षी ते बेजणा मुफामा
जईने वेठा, त्याहां शनडी शळगावी हती तेना या
गयो घणी ऊंक बई हती, तो पण मार्गनी आंगळी
या टाहाडे ठरी गयो हतीयो ते फुकवा लाग्यो,
वनदेवे तेने पुछ्युं, तूं आम शामाडे करक, ते बो
ह्यो हाथ टाहाडा ययाके तेने ऊंक बळवा सारु,
वनदेव मनुष्यसां फरनारो नही, तेणे मार्गना टा
हाडाने उन्हा करवानो गुण जोईने आसुर्य पा
य्यो, अने तेने गुणी जाणीने तेनी आगळ कांदें कं
द मूळ फळ इत्यादि शेकीने फराळ करवा साडे
मेहेण्यां, ते घजां जंन्हां हती माडे मार्ग तेने पण

फुकवा

(१६४)

फुंकवा लाग्यो, तारे बनदेवे तेनें फरी पुखी चरे
तुं खाने पण शामाडे फुंकक, ते बोल्हो ऊंकांछे
ते डाहाडां करवा सार, ते सांभळीनें बनदेवनें
रीस चरी, चनें तेनें केहेवा लाग्यो, चरे तारा स
रखो दुर्गणी कोई नही, जे तुं एकज होवती ज
म्हाने डाहाडुं चनें डाहाडाने ऊंहुंकक, एवा दा
री साये द्वारे संबंध जोईये नही, एम कहानी ते
मार्गमां पांखोटां झालीने तेनें गुफाने बाहेर नां
खी दीधो.

सार

जे पुरुष एक मुखे निंदा चनें कृति ए विरह
भाषण करेछे, तेनो सज्जने त्याग करवा ए योग्य
छे, बिजा केटलाक ई ते मोतानु काम करवा सा
र जे सारु हागे, चनें जे सांभळपी सांभळमारा
नी खाशा बधे एवं बोले, पक्षी काम चय एटखे ते
ज मुखे तेने निराश कराने मेहेछे ए सारु नही,
ए दुर्गुये छोटां छोटां माणस हल्लावणुं यामी

३

(१६५)

जें पीकां पछांहे, माटे जे एवं पण बोले ज्वे
तेन पण बोले एवा पुर्व सावे जेन पोडो सह
बास होव ते सार.



बात १०३

ठास पडेजो शिलेदार

कोद एक शिलेदारने नाचे ठास पडीहती, ते पो
तामी सोड डांकवासार टोपी घाले, एक दिवस
ते जमया रमवामें बघो हतो, त्याहां चकसान्
बायना सपाटाची मावाउपरची टोपी उडानें
छेटी पडी, ते बसत संवाचे बरोबरीना विजा पुद्
ब केटलाक हता, ते तेनी मश्करी करवा ला
व्या. ते जोईनें शिलेदार पण छोटे शब्दे हास
करवा लाग्यो. ज्वे केडेवे जे अरे झारा जन्मना
हता ते झारे नाचे न रझा, पही चालेलो डो
पीये कम रेडेवाये.

सार

लडार लार माणस विजाने अने पोताने सुख

दायक बना मधी, खोड बनाने कोई माणस नथी,
पण सर्वदा लडारने कारण खोले, कथवा लोको
नां छिद्र जोरने विजाने दुखण दे, एवी जेने खोड
छे ते माणस कोईने नमे नहीं, ए एक दुर्गुण या
तेना सघळा विजा गुण लोपायके, ए माटे जे प
रुख-पोताने चित्त स्वस्थ राखवाने रक्के, अने जे
मा मनमां एवके जे लोकोये आपणाउपर छे
ह राखवो, तो तेने कळह करवाने कारण खो
छवें नहीं, अने तेने मजरे पछां तो तेने ढाकवें, अ
थवा ढंकाय एव न होय ते हथामां काहाडी नां
सुख, केटलाकनी एवी टेव, होयके, जे विजानो
खोड होय ते कहेंवी, पक्षी जे जेम जेम स
ताप पावे, तेम तेम ते कहेंवारे आमंद पावे, अ
ने तेने वत्त वत्त कहेंतो जाय जे जेणे करीने ते
ने धर्मा संताप पाये, एवा दुख अंतःकरण वाला
पुरुषोनां लो भागवानो उपाय एज के जे आपण

सीजीये

(૧૬૭)

લોજીયે મહીં અને તેનું બોલવું કોતુક માં મળીને
—સવામાં કાહાડો માંલોયે, અને વહત ઉપર એવું
પણ કરીયે જે વિજો આપણનું ઉપહાસ કરે તે પે
હેલાં/આપણજ આપણું કરીયે. .

—*—

પાત ૧૦૪

મોર અને વમલો

એક વહત મોરે વમલાને જોઈને પોતાનાં શી
છાંં ઉંચાંં કર્યાં; અને આ કોઈ તુલ્લ જીવહે, એ
વું મનમાં આળીને, તિનો આગઝ પોતાનાં સોનેરી રં
ગનાં પોછાંની શોમા દેલાડવા માંડી. વમલો તે જો
ઈને તેનો ગર્વ ઉતારવાસાજ કહેહે, અરે, જો સા
રાં પોછાં ઉપરથીજ છોટાપણું પ્રમાણ છે, તો તારી
મોરનો જાત છોટી સરી; પણ ઝં એમ જાણું
કું જે, મુંદે ઉપર પાલીને હોકારાની રમત રમી
યે, તે કરતાં, આકાશમાં ફરવાને જે સમર્થ પા
વ, તેમાં છોટાપણું વસ્તું છે.

સાર

સાર

આપણમાં એકાદો ગુણ હોય, તે વિજામાં ન હોય માટે આપણ તેને તુલ્ય ગણીએ જો, તો વિજામાં જે ગુણ છે તે આપણમાં નથી માટે, તે પણ આપણને તુલ્ય ક્યાં ન ગણે? સર્વ ગુણ સંપન્ન કોઈ હોતા નથી; માટે કોઈ કોઈને હલકા હેલામાં ગણે એ મૂર્ખની સમજણ. ઉપર કહેલી વાતમાં મોટે પોતાને બાહરની શોભા ઉપરથી છોટાપણ માન્યું, પણ હાથાયા છે તે બાહરની શોભાને જોવામાં જણતા નથી. જે છોકરાં, જે સજ્જાનો લોક છે, તેમને માથે બાહરનો રંગ મોહ પમાડી સકે છે; પણ હાથાયા છે તે માંહેના ગુણઉપરથી પુરુષને મૂલ્ય કરે છે. જે પુરુષમાં ચંત્ર:કરણમાં સદા સના, મેઝાપ પણ છે; યવા પુરુષોને તે છોટા કહે છે. શાલજોડી, જરીનાં લુગડાં, રત્નનાં ઘડેળાં, યમાં જો કાંઈ છોટારૂં હોય તો, તેમાં તે વસ્તુના કરનારાને શોભા છે. પણ શરીર ઉપર પેહેરનારને શું છે? કહેવાનું તાત્પર્ય યટલુંજ કે,

જે,

(१६६)

जे पुरुष शालजोडो चादि खेईनें सहसुना बोमपी
पोतानो तरफ छोटाजणुं खेची लेखे ते आपण
नें जगेहे एम समजवुं.

— ० * ० —

बात १०४

वे बटे तार्गु चनें रींछे

कोई वे पुरुष परदेश जवानें नोकिया, तेमणे
परस्परस वचन लिधां के, मारगमां जो काई दुः
ख अथवा संकट पडे तो, एक एकनें मेहेलीनें अ
वुं महीं. बकी, ते एक वनमां यईनें अता हता
एटलामां, एक रींछे तेमना उपर दोडतुं थावुं,
ते बसत तेमांनो एक अण, पातळा शरीरनो चप
ळ हतो, ते झट करीनें नाशनें झाड उपर चढी
मयो: विजे भारे शरीरनो हतो, तेनाची मसावुं
महीं, त्यारे ते पोतानो आस बंध करीनें भुईं उप
र आवेमन यईनें सुतो. रींछे तेनीपांसे आनीनें

तेनां

तेना काव चागळ सुधीनें जोयूं, अनें या मरेलुं
मडकुं हे एवं जाणीनें, कांई उपद्रव कर्था बिना
ते पाहुं नयूं. रीक गया पक्षी, झाडउपरना हे
हे उतरनें तेनो पासे हसतो हसतो आवीनें पु
छेछे, भाई, ते रीक तनें थं कहां? कां झाडउपर
जी जोतो हतो जे, ते तारा कानमां पेशीनें कांई को
हेतो हतो. तेणें उत्तर कर्था जे, रीक छनें ए
कहां जे तजसरखा लुचाना वचनउपर आज व
ही विन्यास राखीय नही.

सरि

आपणनें अनम न होय त्वारे लोक चणी समता
देखाडेके, अनें भत्सानां वचन बोलेके, पण तेमां
आपडीनो वस्तुमां काममां आवनार एवो तो म
ळवो घणो कठण के. मांटे जे लोकनो रीतीनें
जाणेके ते पुरुष, एता बोलवाउपर विश्वास रा
खता नथी. बोलनारे मिथ्या बोलवु नही, अनें
सांभळनारे ते उपर विश्वास राखवो नही; कांके
तेमां बेजणाचेनें दुःख के.

बात

(१७१)

पात १०६

करडकणो कुतरो

कोई एक मनुष्यनी पासे कुत्तो इतो, ते लो
कोना उपर दोडो दोडोनें जेनें तेमें करडतो इ
तो, मांटे तेना धगीये तेना गळामां एक डेहेरो
बांधो. तेथो ते कुतरो छोटी प्रतिष्ठा जाणीनें,
पासेनां जिजां कुतरांनो तिरस्कार करवा लाग्यो;
अनें तेमनें पोतानी पासे उभा रेहेवादे महीं ए
वो थयो; त्वारे ते मांहेनो एक दह कुतरो इतो,
तेणे तेनें कछां, चरे भार्द, तुं या गळामांनो न
सु पांथोळे ए उपरथो, तारा आत्माने छोटी गण
मा होय, तो गण, पण, जेणे या वस्तु तारा न
ळामां बांधोळे, तेणे या प्रतिष्ठानी निशानी एवं
जाणीनें बांधो नथो, तो अप्रतिष्ठानी निशानी जा
णीनें बांधोळे.

सार

सार

कोटलाक सोडीला लोक एवा अभिमानी, जे
 में बोली समजणना होयके. जे, तेमनी जागे
 लो एकादी टेव तेमनामां ईश्वरे मेहेली होयके,
 तेमो ते पोतामा मनमां आवे एवा अर्थ करीने,
 पोताने अच्छे सोदा एवु मानेके. जेने चार म
 मुख्यमां सारुं बोलतां आवडतुं नथी, जेनुं बोलतुं
 सांगळीने लोक हसेके, तेमो अभिप्राय ते एवा
 आणेके जे, छारी बूढो घणोके, एको वारेज रुमे
 क कल्पनायां सुजेके, माटे आवं वायके. बळी
 मूर्ख जाणीने अथवा सारी शिक्षा नही माटे कंठ
 लो आणीने लोक तेमो मेळय करत नथी, ता
 ई तेमो अभिप्राय ते एवा आणेके जे, छार तेज
 मेहेवानुं नथी माटे, छारी पास कोर्द आवतुं न
 थि. तेमाटे गता जे के ते लवार विचार करीने
 जासे तो तेथी तेमनुं घलुंज काम यत्ने.

(२०३)

काव २००

नवाम बोकडो

एक नवाम बोकडो लहर करतो हतो. एक दाहाडा ते बळदमें हले जोडेलो देहांमें, तेमें को हके, बर, तु तारा धनीनेवाले बांधउपर धुल ह सोईमें, बाडे पोहोर हल लेउह, हउपरबी धीने एवं सुजेहे जे, तु कोई अपराधी हलको प्रा णी हे. तमें पराधीनपणुंज साह लागेहे; महीं तो तु एवं करे महीं. जो लं केवो दाहाडा काहा हुंहुं ते; लं चारा मनमां आवे त्यांहां जाजहुं, मी नळ हाथामां वेसुंहुं; कुडुंहुं; माचुंहुं; बराहुंहुं; तर ह जानेहे त्यावे निर्मळ झरणमां पाणी पीजहुं; ह जे तमें काहं पाणीपण मळवानो वंदेह. बळद ते हांभळीमें जीचे डोले हानोमानो पोताने काम करवा लाग्यो. मही बोडा दाहाडामांज, ते ना मनी देखोनी बावा आवी, ते दाहाडे, बोकडाने थ पीये बोकडाना बळामां कुलना हार पाकीने तेने

अण्णारीने

अण्णारीनें देवीनें कळीदान आग्रवा सार आण्यो,
 अने तेना गळाउपर पाळी मेहेकोहे; तेवलत, त्या
 हा ते वळद आवीनें तेना कांनमां केहेके, जे
 मूर्ख, तारा खळद यणागे अंत बोवा बयो ते दी
 ठोनां? तनें आग्रगुधो जीवतो मेहेक्यो एको मे
 एटला सार हो. तो तं हवे अने केहे, जे ता
 रो खबस्या सारी के झारी.

सार

कोई विपत्तीमां होय तेनें मेहेणां देवां, ए जे
 नीच, मूर्ख उन्मत्त, तेनुं काम. या कालघक स
 दा करतुं हे; कोई बलत आनी विपत्ती तेनें
 जे, अने तेना सपत्ती आनें आय. अने विज्रंयण या वा
 तमां जणावुं जे, जे खळद करेके, मनमां आवे
 ते करेके, तेमना परिणाम खोटिअ पायडे. अने जे
 उद्योगी हे, ते पोताना उद्योगनं फळ भोगीनें सु
 खी पायडे. जे निरुद्योगी, निरंकुश पुरुषके, तेजो
 मो निर्बाह बतो मवी; पछा ते खोकोने ठगवा मां
 केहे; बळाकार करेके; चोरीयो करेके. एवां एवां

कर्म

(૧૭૫)

કર્મ કરીને અક્ષી રેખા ભાવવીએલીએ એમ કહી
મેં; તે યજ્ઞસ્થ લોકોને હસેકે તો હસો, તે તેમના સ
રસ કરતા નથી, અને પોતાનો મેહેનતનું એ મળે
તેટલી ઉપરજ પ્રસન્ન થઈને રહેકે; પણ ચોર, લુ
ચા, દુષ્ટ, જઢા, હમના કપાળમાં ફેલી પારે વધી
જાન, અધરા હઝી. જાટે એવા તેમનો પરિણામ
જોઈને, ઉયોગી પુરુષને પોતાનો સ્થિતી સારી જા
નેજ, વિજ્ઞ એ સતત છે તે, મકામાં જાટે અસન ક
રે એટલે તેમના સાધનામાં પીવામાં વિજ્ઞા અવહા
રમાં કાંઈ વધ રહેતો નથી; તેને કરીને તેમનું
અકાલ મૃત્યુપણ થાયકે.

—**—

જ્ઞાન ૧૦૮

ચિત્તો અને શિયાલ

એક વસ્તુ જોવાના મનમાં રહ્યા વાળું એ, જ્ઞા
રા ગરીબ ઉપરનાં વિવિધ અને સુંદર ટપકાં જો
તાંમાં, દેશાઉઠાનાં જ્ઞારી ગરીબરી સિંહ યજ્ઞ ક

૨૧

(१०६)

ही सकनार नहीं, तो बिजानी भी बात? वही ते
 भ्रम भावने तिरकार करवा लाग्यो. तेने मि
 थाल केहेहे, नार्द, तं घणं बुकई, तो अं कछुई
 ते सृज मान जे, जे साहेला सङ्गणरूपी भूषण व
 ना, बाहेरमा भूषणने सृजके ते, भूषण केहेला नवी.

सार

जे सुंदर है, ते, ऊ सुंदर हू एवो नर्व न करे,
 तो तेनु सुंदरपण तेने घणी शोभाने आपे, भूषण
 नी जने सुंदर एवीज सीनी कीर्ति बधेके.

पात १०६

बलाहो जने मियाळ

एक वलत बलाहो जने मियाळ ए ने जणा,
 करपणं बल साहने तले, राज कारस्थानमो वा
 मो करता बेका इता, त्यांहां मियाळ बोखुं, बला

हाजी,

(१७७)

हाजी, कदाचित् अहीयां थापणाउपर काई छो
टं कष्ट आवे तो, ऊं तो द्वारा देहमें हजार प्रका
रे कक्षमें मभावी लेऊं, पण ताहं छानें घणुं कठण
दोरेके. बलाडो बोल्हो, भाई, ऊं एक युक्तीमात्र प
क्षी जाणुं, तेटली जो बुकुं तो पक्षी छारी गती
नंही. शियाळ बोल्हं, तो भाई, तारी छानें घणी चीं
ताहे, तमें एक वे युक्तीये ऊंपण शीखवत, पण
जाणुं थापना काळ एवाळे जे जेमें माथे पक्षुं
ते तेनुं भोगवे. बार तो हवे राम राम, ऊं तो
जाऊं, एटलुं कहोनें ते जवानें नीकच्युं एट
लामां, पक्षवाडेची हांहां केहेतो पारधी कुतरां
नें लेईनें आव्यो. ते बखत बलाडानें झाडउपर
बडोजवानो युक्ति सारी आवडतो हतो, तेकरी
जे तेणे पोतानो जीव वंचाव्यो. अने शियाळनें
हजार युक्तीयेमांवी ते बखत एके काममां न
आवी. अने ते चवरार्दनें ते चारपांच उमलां
देखुं एटलामां भाईनें कुतरांचे तेनें पकळुं.

सार

सार

विजा करता हार हाहापण बतने, एव जा
हीने ओ गेहो करे, ते घणु करीने जातनो, मूर्ख
होय. बुद्धीमाने पोतानी बुद्धीनो प्रसन पडे त्या
रे समभव होवो, पण लोको धानठ बढाई हाकबो
कहीं. एकज बद्धि पण ते ओने समय पडे सुजे तो ते
के तेणे करीने ओ तरबानो उपाय धाय ते हज
र बुद्धीमा धणीने बनार नहीं, ते विचार करतां
करतां बंध बर्दने, केलीवारे फसे, तेम एकज वि
द्या पण ते सारी आवडती होय अने समय पडे
सांभरती होय तो, ते कामनो; घणो विद्यायो चा
बडतीयो होय पण समय पडे ते मानो एके उपधान
मां आवती मची, त्यारे तेयो दुःखभाव जाय.

—०००००—

वात ११०

वाज अने बुलबुल

एक बुलबुल एवे नामे पक्षी तमालना वृक्ष
पर बेसीने, सुखरे वान करतो हतो; तेणे करी
ने सघळु चरण्य नादयुक्त जय. ते शब्द सांभ

लीने,

लीने, त्यांहां पासेज एक मुख्या वाज करतो ह
 तो, तेणे ते पक्षीउपर झडप मारीने तेने पक्ता
 सलोनां भरावोनें खेई नथो, पक्षी तेनें खावानो उद्यो
 न करेहे, एटलामां ते पक्षी तेनें केहेहे, रेरे, झारा
 उपर दयाकर, आ दुष्ट कर्म करवुं तनें योग्य न
 थो; जो झीं काई तारेो अन्याय कर्यो नथो; अ
 नें झानें खाईनें तारा पेटमां एक कोळीयो पण
 परो खावना नथो. माटे कोई एकादा छोटा
 पक्षीनें मार, जे, तेमां तारुं पेटपण भराणे, अ
 नें कीर्तिपण वणे. झानें मरीजे जवादे. वाज ते
 नें केहेहे, हा हा बापा, तारे मने तेडलुं केहे;
 पण ऊं वाज सघळा दिवसनो मुख्याकुं, अनें तुं
 देव योग्यो झारा हावमां बायोके, ते तुं केहे
 के जे झानें मेहेलीदे, अनें विजा कोई छोटा प
 क्षीनें मार! पण जो तेवुं कह तो लोक मूर्ख को
 नें केहेये वाद?

(૧૮૦)

ધાર

ઉદયગી પુરુષકે તે વત્તા ઘોઠા લાભ સામું જો
તા મયો; એ ઘપાટામાં આયું તેનો અંગીકાર ક
રેકે. કાલનો મતી અળાયામાં આવતો મયો; હ
જાર પ્રકારનાં વિપ્ન શાનોને મચે પડેકે; મનુષ્યો
નો મુદ્દિ ચંચલ; દેહ છળભંગુર; એવું જોરને હાથ
માં આવ્યો લાભ મુકોને અપ્રસૂત ઉપર મહસો રા
હેકે તે મૂર્છા અંતે પચાત્તાપ પામેકે.

—**—

વાત ૧૧૧

માંડો શિયાળ

એક શિયાળ લોહોડાના પાંચરામાં પુંકુંડ મરા
ઈને અટક્યો, તે તે તોડોને માટે; અને મમમાં મ
ણો રાજી થયો એ, જીવ અવાનો સમય હતો તે
પુંકુંડ મયેથી મર્યો. પછી તે પોતાના મંડલમાં જ
ના લાગ્યો, તે વસત, તે માંડાપણાનો કોટો લેદ

મનમાં

मनमां आणीनें विचार करेके जे, ऊं मुञ्चो हो
त तो साहं थान, पण आ अप्रतिष्ठा घणी खोटी.
हसे, जे थयं तेना उपाय नहीं; पण हवे आ सो
भीनं कम आय. एवो विचार करेके एटलामां,
तेने एक युक्ति सुजो, के, ऊं सर्व शियाळ मंडळी
नें ऐकठा करीनें कऊं जे, ह्यो द्धारं पंखडुं तोडो
मांखीनें आ शोभातो नवो तन्हा काहाडोके आ
घणी प्रतिष्ठितके, माटे तमनें सर्वनें आ लेवा यो
ग्यके. एवो विचार धारीनें पको शियाळनी म
ंडळी मेळवीनें तेमनी आगळ नवो तन्हानुं घणुं व
खाण करवा लाग्यो; केहेके अरे, आ पंखडुं आ
पगनें कशा कामनं नथी; तेमां वळी शियाळ
नुं पंखडुं एटले केवळ भारज; ए माटे पंखडावना
हईये, तेमां एकतो शोभा, अनें विजुं नासवुं प
डुं तो उतावळुं नसाय. ह्यो पेहेलुं एसघळुं म
नमां धारीनें, पको अनुभवमां पण आयुं, तो ख
रेज. पंखडुं तोडो मांखी, ते दाहाडेथो ऊं घणो सु
खो थयोऊं; एवं सुख ऊं कोई दिवस पाम्यो न
होतो.

होना. एवं बोलोनें सर्वना छो सामुं जोवा सा
ग्यो, जे आमांथी द्वारा चेला केटलां यायके; ए
टलाभां तेमांनो एक हइ शियाळ, चोरोना का
ममां घणो डाहायो हतो, ते तेनी ठर विद्या जा
णीनें, डोकुं बांकुं करीनें, तेनें उत्तर करेके; पंडि
तजी, हवे तमारुं पांडित्य पुरुं करो; तमनें पुं
डुं काप्यामां सारुं ययं हणे, एमां संदेह नश, ते
म अहो पण काशीशुं, जारे तेनी बखत अद्वारा
उपर आवी पडणे.

सार

सर्व लोक जो शियाळ सरला सावधान होत
तो, कोई कोईनी काहाडेली तहा लैत नहीं.
घणीक तन्हयो लुगड़ां, घरेणां, एमांके; अनें खा
वाना प्रकारमां केटलीक दोढाभां आवेके, तेनुं
खरुं कारण जोवा मांडीये तो, माणसेये ऊं प
णं मेळववा सारुं अथवा पोतामां कांई एकाशी
खंड होय ते ठांकवा सारुं करीयेके.

(१८३)

वात ११२

डोसो अने मृत्यु

एक घण्टो डोसो लाकडां आणवाने यरण
मां गयो हतो; त्याहां काई कांटा, झांखरां, ला
कडां, एकठां करीने तेणे तेनी एक भारी बांधी,
ते माथाउपर लोईने घणे कष्टे करीने पगलां मां
डतो मांडतो घेर आवेके, पण वाट लांबी, अने
माथाउपर भार घणा, तेणे करीने ते थाकीने भा
र हेठळ नांखीने वेढो. ते बलत ते मृत्युने कोठेके;
हे प्राणिमात्रना विसांमां, तु आव, अने छाने ए
कवार या दुःखमांथी काहाड. मृत्यु ते सांभळतां
घांतज, ते डोसानो आगळ आवीने उभो रह्यो; अ
ने तेने पुकेके भाई, ते छाने ग्रामाटे संभार्यो हतो?
ते बचारा डोसाने खबर न्होती जे, मृत्यु आटले
पासेके: तेनु ते विकाल स्वरूप जोईनेज, डोसा
नी शुद्धि गयो; पक्षी कोटलीक वारे सावध यईने,
परथर दूजतो उत्तर करेके; मृत्यु बापजी, ऊं अ

शत

शक्त हैं, छारा मायाउपरणी भारी औचंतो पडी
 गयी; ते उचकोने छारे साथे मेहेलवासार तने
 छे सभार्या हतो; बिजे काई काम नयो; खे खा
 त. एटलुंज बापजी काम हत; अने एगां ह्ये तने
 मेहेनत दीधी, माटे तने रीस चढी होयतो; ऊ ब
 ने पगे लागुंज जे, छारा उपर क्षमा कर; अने जे
 बो आबो तेबो पावो जा.

सार

लोकोनी एवी रीतज पेली जे, मृत्युनो सा
 थे पण मशकरी करवी; काई लगार दुख पडुं
 के मृत्यु आवे तो सारुं था; एव बोले पण ते,
 सघळुं मृत्यु वेगळुं के त्याहां सुधी केहेवांयके. जो
 पासे आव्यु होय तो, ते केहेनाराज पाछा संसारना
 भार साथे लेवाने तैयार थायके; अने काई विजा
 दाहाडा जीकय तो सारुं एम आशा बधारके.
 हाडकांनु पांजह मात्र रहुंके, अने हजारो विष
 चीथो भोगवेके, एवा डोसाने पण जीववा सारुं

एटलो

(૧૮૫)

ફટલો હર્ષદે; તો પછી, જવાનીનાં ભરનાં હોય, તેને
કોટલો જોઈએ? સારાંશ, મૃત્યુ નિશ્ચય ચનારદે એવું
જાણીને, તે પ્રાપ્ત થયું હોય અને જે તેથી વિદીએ
મહીં અને તેને ચમુસરે; તેને જાણતો પુરુષ કહેવો.

— ૦૬૦ —

વર્ષ ૧૧૩

સુકામ સિંહ

કોઈ એક અરણ્ય વાસીની છોકરી ઘણી સુંદર
હતી, તેને જોઈને એક સિંહ મોહ પામ્યો; અને તે
ને એવો દારૂણ કામ પ્રત્યક્ષ થયો જે, તે પછી તે
ને મલે તોજ તે જીવે; મહીં તો મરે. પછી તેણે
બાર મ અનાડતાં મન જોકલું કરીને તે વાત તે
પીતા વાપને કહી. અને કહ્યાં જે, તું જાને તારો
જમાર કર; એવું તેનું માંહું બોલવું સાંભળીને,
તેણે મનમાં વિચાર કર્યો જે, જો હું જાને તારો

અંક

ऊँह, तो आ आने हमणां मारीनांखये; माटे, हा
 कहीमें एने पत्नीची फांसामां गांखोये पकी तेणे सिं
 हने कहुं, सिंदजी, तने सारी बात कहो; ऊँ त
 मने छोडो परणावुं; पण छारे तमने काँई केहे
 वुंहे. छारी छोडो घणी नाजूक, अने तमारा दां
 त, अने नख, घणो तोखाके; तेथो तेने घणी पोडा
 आये, माटे तेमं गुं करवुं? तने केहेथो जेऊँ स
 भालीने चाखीश, पण ते तने तमारीतरफची क
 र्छुं, पण तेना मननो भय जनार कहीं; तेना मनमां भ
 य होय तेथी तमने वे जणांने विलासने सुख यनार
 महीं; माटे एना काँई विचार को. छारा मन
 मां केहेवानुं एटलुंगके के, तने तेटला दांत अने
 नख आने काहाडीने आये, एटले ऊँ तमने दी
 करी आपुं. सिंद कामे कुरीने घेलो यया हतो,
 तेणे कहुं हा काहाडो; पकी, तेणे तरतज तेना
 दांत अने नख उखेडी लांभा मंतर एक छोटी भा
 को आणीने. सिंदना कपाळनां मार्यो; तेथी सिंद
 तत्काळ मृत्यु पाव्यो.

સાર

જે કામને સ્વાધીન થયો, તે પુરુષ છોટો હ
રોહો, વઢીયો હો, પણ તે નાશ પામેજ. તેમજ
જે શત્રુનાં મિટાં વચને કરોને સોદ પામીને પો
તાનો ઓવાર્ડની વસ્તુઓ તેને સ્વાધીન કરેછે તે પ
ણી સર્વસ્વ હારેછે.

—**—

ગાત ૧૧૪

સિંહણ અને ચિયાલળી

એક દિવસ સિંહણ અને ચિયાલળી એ બે એકઠાં
થયાં. તે વખત ચોપાનાંનાં કોઈ ખાત વત્તીવાર
વધાં જણે, એડપર વાત બીકઢી. તે વખત ચિ
યાલળીયે સિંહણને સંભળાવ્યું જે, વધાં જણવામાં
તો ચિયાલળી વરોવરી કોણ કરો સકનારકે? એ
હો વરસમાં વધું નહીં તો પણ, એક વાર તો જ
ણીયેજ, અને એક એક વારે ઘણાં વધાં મેંદેસીયે.

पण केटलीक जातीयो एबीयो होयके जे, सघळा
जन्ममां एकवार जणे; तेपण एकज वस्तु; एवं हो
येके तोपण, तेनें अभिमान केटलु होयके जे, ते
तेठलाउपर नाक चढावीनें, विजा कोर्नें मणेज
नहीं. सिंघण मनमां समजो जे, शियाळणी छा
राउपर नौखी. पछी ते सिंघण शियाळणीनें के
हेहे, चरे, सांभळके? तमे वत्ता वद्दां जणोलेन ह
जोतांमां खरुंके, पण ते कोण? शियाळ, अनें अत्तो
एकज जणोयेकीये; मण मनमां समज के ते वक्षानें
सर्व जनावरोनो राजा; एवं सघळा लोक केहेहे.

सार

जे वस्तु आपणथी नीपजेहे, तेनें मुल तेनी स
ख्याउपरथी करवा मांडवुं नहीं; जातीउपरथी
करवः आपणे धाडोकज उद्योग कर्यो, पण ते
जो एवो होय जे, हसणांहे ते लोकोनें, अनें आ
गळ बनार तेयोनें पण, तेथी घणो मुण वये तो,
तेज क्षुति करवाने योग्य पायके. नहींतो, घणां

शियाळ

शियाळकुतरांनां वडां घईमें लोकोनें उपद्रव मा
 व जेम घायके तेंधु ते घायके, विजुं वा वातमं तात्यव
 एके जे; केटलाक कविहे ते, घणां यंघ करवामां प
 रुशार्थ सामेहे ते तेमणे मानवो नही, हजार
 व्यर्थ यंघ करीनें लोकोनें बांधवानो यम माव
 देईये, ते करतां; एकज करीये जे सर्वनें मान्य
 बाय एवो कर्णामां पुरुशार्थ घणोहे.

—०००—

वात १२५

जवाम खनें घोषनपथी

कोई एक जवाम उडाउ सुतो, तेनो बाप व
 सुं इव्य मेहेलीनें मृत्यु-पाम्यो. ते इव्य हायमां
 बावतांज तेणे ते यमल करवामां, जुवुं रमवा
 मां, पातरोमा संगमां, खनें पोताना जेवा निहयो
 नी असनी एवामी सोवतमां, सवळुं उडावी नाख्युं.

तेची

તેની કારકી ગયો. એક દાસીને તે બિહારી સ
 રસો મરીની તિરે કરતો હતો; તે દાસીને, મહિ
 નો પોસનો, પણ સૂર્ય સારો તપોને, કાર્દ ઉઘા
 ઝાના દિવસ સરસો દિવસ ગણતો હતો; ત્યા
 હાં મુલ્કીને આવેલો એવો એક ગ્રીષ્મપક્ષી પણ તે
 સે પાણીઉપર તરતાં દોઢો. ત્યારે તેને અસમના
 ધુંમમાં એવું આવું કે, ઝંઘાલો સરેજ આવ્યો:
 હવે હારે લુગડાનું કામ નથી. એવું વિચારીને,
 તેણે શરીર ઉપરનાં લુગડાં ઘરેણે મેહેલ્યાં; અને
 તે ઉપર પૈસા લેઈને, સોવતી સાથે, ફરીથી એક
 જુવાનો દાવ રમવા ગયો, તે હાર્યો; પછી તેને લુ
 ગડાં વના ટાકાડની પીઢા ઘણી થયો; ત્યારે મ
 નમાં આસૂર્ય પામીને તે પાકો નદીતીરે જઈને જુ
 રકે તો, પાણી ઠંરીનયુંકે અને તે ગ્રીષ્મ પક્ષી ટા
 હાલે સુચો, તે તેડે પહોંકે. તે સઘળું જોઈને તે
 ને મુઠ્ઠી આવી. અને તે મધ્યાને માથે મન્દ મેહે
 લીને કેહેકે, સરે પક્ષી, કં સૂર્ય, જો હોં તારાઉપ
 ર વિશ્વાસ રાખ્યો; સરે, તેં હોંને ઠગ્યો અને તું પ
 ણ ઠગાયો.

સાર

कार

जे पुरुष केह करेहे, जेनें जुवाना बसाहाना
 जायके, बसवा बसनीनी सोवतनां करेहे, बस
 वा छिनाल्लवानो संगती करेहे, तेबो पोतानो बि
 सो उतावलो कम बर्द रहयो; जेनें ऊं दरिद्री कम
 न बयो; ए बानन, आसुर्य बाणन, नहीं एवा ब
 समनी, पछवाडे जे बल्लग्या, तेमनें, ते बसनी के
 फनां कांई आस्थो आनऊ दीसे नहीं एवा बाब
 हे. जेमनें रात जेनें दाहाडो एवोज कंदजे, बा
 द्रव्यके ते उडावोये जेनें ते बर्द रहया पकी पाहुं
 उडाववाने जोईशुं ते पेदा करीशुं; छेलीबारे क
 रज काहाडोनें पण उडावे; एवा पुरुषोनें दरिद
 ए शिष्टा घणी चोडीके. ते बिजस लोक जेबो बि
 चार करेहे तेबो करत नयी, बसनें आधीन ब
 य होयके जाटे, ते सुघल्ली बानेनें उलटी देखे
 के; जेनी आण्यनां कमलो बयो होय तेनें सुघ
 लो बसयो पिळी देखावके. उपरली बात मांहे
 नें जवान पुरुषे जो अपार बिचार कथो होत तो,

तेनें

तेनें उन्हाळो आव्यो एवं आणीनें, रद्देलां इतां ते व
 ख पण तेनां जात नही. पण असमची तेणे उन्हाळो
 नहोतो अनें उन्हाळो जाण्यो, अनें आनळ कोई
 दिवस शिवाळो आवये नही एवं आणीनें सुनडां वे
 त्यां: तेवण मुं करवा? रमीनें पैसा उडाववा. पकी ये
 सा पण नवा, अनें बस पण नवां, ग्यारे तेनी का
 ण्यो उघडीवो; पकी विचार करीनें कळ मुं?

—*—

वात ११६

सावर अनें वसु

कोई एक सावर पोतानी जवांमीना भरमा
 आव्युं एटले, ते बिजां सावरनें घणी पीडा करवा
 लाग्युं. ते भुईं उपर पक गडावे; शिगडी इलावे;
 अनें छोटे शब्दे बरका पाडे; एवं केसवळा भव
 पामीनें कांपवा माडे. एक दीवस तेनुं वसु आ
 नीनें तेनें पुढेडे, सरे, तने कोडावो जे ऊं छोड

बळीव,

बलीच, ऊं कोईची आताउ नही, हवी शेकी को
हो, ते तने कुतरांनो शब्द सांमळताज मयची ओ
न कोरने कम नाशी जा योको एम कारण मु. ते का
ने केहेयो? सावर केहेके, बचा, तु मोख्य ते खरु, व
ण ते कम थायके हनी ज्ञाने पंम कमजण वडता
नथी. ऊं आपणी मंडळीमां वळीच, पराक्षनी, तेज
होवुं खरु, अमे ऊं चारे चारे द्वारा मनमां नि
खय कंरुं के, कोईमाची भय पानीने हवे ऊं
उरमार मंडी, पण मु कंरुं कुतरांनो शब्द का
रे काने पळो, हटके द्वारा नाळा दिविळ या
वडे. पळी द्वाराची जेठची उतावळ कावडे तेज
ची करीने नाशी कुटुं.

सार

जे फांकडा, खडारखार पुरुष, ते अथसान धा
मकी, होयके, ते, पोताना सोवतोयोमांज माच
शेकी करे; पण द्वारा पुरुषनी आनळ तेमनीची
हकातु नवी. दीठानां एवु आथुंके के, जेना मु

समा

सुनी रात्रि अने दिवस शिवाईगरोमीज बातोके,
 एवा पुरुषमी बागळ एकादे सरो पुरुष आवाने
 आंखो काहाडीने जुए, एटले तेमनी धोरज नवी
 न. पकी एवा लोटा पुरुषम पाणी उतरे ते जो
 मामाज बनकारके. एवी बलतमां पकी ते भ
 व, लाज, अने रीस, ए बणेमा बानेळामां पडेके
 ते जो पैय राखीने जोडुक बराक्रम करेता, पै
 तानी शोभा राखी सके, पण तेनो उपाय नही, प्र
 सब पछो एटले तेमनी धोरजज जती दिहेके. ए
 भाटे लोटा बाटाटोप कोई नमे तेटलो करो,
 पण जेनो जे लभाव होय ते सहजज बागळ प्र
 नट योजे.



बात — ११७

मधेडा अने सिद्ध एमनी पारध

कोई दिवस सिद्धने एवं मन ययुं जे मधेडाने
 सिधाते लेईने पारध करवा जईये, पकी तेणे न
 भेडाने कछुं के, तुं एक झाडीमां जईने संतार्द
 रेहे;

रहे; अने फलाणी बेळाये ओचितो छोटी भयंकर
 शब्द करवा मांड, ते बंध करीश नही; एठले भ
 यथी घाभरी बरने सवळां जनावर नाशी जवा
 मांडये: ऊं नासवानी जग्या उपर वारी द्यालीने
 रज्जु: ते मार्गे बरने जे आवये तेने मारतो ज
 ईश, पक्षी ते गधेडे तेम कयुं एठले; सर्व जनावर
 नासवां लाग्यां; सिंह वारी आगळ हतोन, ते एक
 एकने मारतो गयो; अने पेठ भरायुं एठले, गधेडा
 ने हाकमारीने कोहेके, अरे गधेडा, ते भल्ली करी
 केरे भल्ली करीके; हवे एठले, पुरं कर, अने खर्श
 यां आव. ते सांभळीने गधेडे सिंहनी पासे आ
 ये; अने पोते काम-साहं कयुं एवं मनसां आ
 गाने, खांडसां तेने पुहेके, सिंह, ह्ये कयुं ते तने
 मनसां नस्युं ना? सिंह कोहेके, नस्युं एसां गुं कोहे
 पुं? अरे घणुज नस्युं; अरे गधेडा, ते एवं कयुं जे,
 जो तारं सरुव ह्ये न जाण्युं होत मोर, ऊं पण ते
 तारो शब्द सांभळीने नासवा मांडत.

सार

(१२६)

सारे

कैटलाक या गधेडानी पेडे छोटी छोटी नर्त
माचो करीने, अजाण्या लोकोने मां पेदा करेहे,
तेनं ससय खोळखेहे, तेमने ते कौतुक माच ला
भेहे, माटे हवा पदप ज्यांदां मळे त्यांदां तेना
जगार सारी पेडे मोभ माच करवो, एटले दीक्षी
पायमे जे, एनाधी भय पामवानु प्रयोजन भवी.



बात ११८

डाहाये गधेडो

एक डोसो, पोताना गधेडानें चरावतो हतो, ह
टलामां, मचू चाकीने पकवाडे उभो रक्षी माटे
गधेडानें नसाडवानी पंताकळ करवो लाग्यो. ते
जखत गधेडो तेनें बुकेहे, चारे चगी, चारा वांसो
उपर तारो मचू गुण मांखगे को नही चारु? डी
सो केहेहे मांखमेज, समां संदेह मो? गधेडो केहे

हे

(१६७)

है एवं है तो, ऊँ वहींर्यायी एक तसुभर आगळ
घालमार नहीं. छारा कपाळमांघी जो गुण छुट
ती नवी, तो छारो घणी कोई कां नयाय, तेनो
छामे हर्ष के शोक शो?

चार

गरीब लोकोये राजासोमी उलटांपाळटमां चित्त
घालवुं नहीं, असले तो ते पेचमां माव आवे. नाकि
तेमने तो उलटपाळट एटलीज जे, एक नामनो
राजा हतो ते विज्ञा नामनो बयो तेणे करीने ते
घणो गरीब यशे, के आगळ काम करतो तेवी
बलुं करवुं पडशे, एवं तो कांई के नहीं. तो पण चा
र स्वार्थ साधक लोक होयके ते, तेने अभिमान
मां नांखीने युक्तीये खंडाईनां आगळ करेहे प
छो खंडाई पुरी चईने यश बघो तो, तेमां तेनें
तो कांई लाभ बतो नथोज, पण पेचमां आवेतो
खुळीये चडवुं पडे.

बात

(१६३)

वात १९८

शेखीदार प्रवासी

कोई एक पुरुष, घणा दाहाडा प्रवास करी
ने, घेर आब्यो; पछो तेणे, छीं देशांतरमां गां गां
कौतुक दीउंछे ते पोनीं ओछलीता घोनें वज्रा
बोनें कछां; तेमां आ पण एक गरझीकोजे, छ
अलका पुरीमां गयो हतो; ते त्यांझां लोक पं
दर पंदर हाव करता. पण जारे तेमनें अनें
झारे बाद पछीं त्यारे, छारा कुरवानें कोई पो
छातो महीं. पासे हता तेमनें ए बान खरी भा
शी महीं, ते जोईने, तेथोनें ते बात खरी जणव
वा माटे ते पुरुष सम खावा तैयार ययो. ते बख
त ते मांछेनो एक पुरुष तेनें केहेके, भाई, तूं ए
टला संकटमां कां पडछ? हाथमा कांकणनें आ
रशी शुं करवा जोईसे? अछाने ते हमणां प्रत्यक्ष
अ कां देखाइतो नथी? तूं एम जाण जे के, ऊ
आ बखत अलका पुरीमांअ छु; अनें तूं त्यांहां कु

यो

(૧૨૨)

હો તેમ એકવાર ચહીયાં કુરી દેલાડ એટલે તે
કહ્યું તે સહ. તે વડાઈ હોરને તે ગમ્યું નહીં અને
ચોગીયાળો યદને અમથો છાનો રહ્યો.

સાર

જે કોઈ પ્રદેશમાં ફર્યાદે અથવા નધી ફર્યા, તે
મળે પોતાની વડાઈનો સંબંધ જેમાંકે, એવીવાત,
પોતાને છોડે કહેવો નહીં; આપણે છોડે આપણી
જુતીની વાત લોક સરી માનતા મધો; એટલે, આ
પણ સમ સાધા માંડોએ, તેમ તેમ તેમને વત્તો સં
દેહ આવે. સરી વાતની આ અવસ્થા, તે પક્ષે
આપણ કેટલોક જુઠોજ બનાવીને કહીએ તેનો તે
શી વાત? ધાર માણસ વચ્ચે વાહેરની જુઠી વાતો
કહેકે, તેની જુઠાઈ પકડાઈ જાયછે. તે મંડળી
માં કોઈ એકાદો તે દેશમાં ગયેલો હોય, તે તે
વલતજ તેનું જુઠાપણું છોડામાં ઘાલવામાં શક
તો નથી.

વાત

नरुड पक्षीणी, बलाडी, यने भुङ्गी,

एक नरुड पक्षीणीये, एक छोटा झाडनी दे
 से माळो कथो होता; यने एक जंगली बलाडी ते
 झाडवे बसे बसोसमां रेवती होती; यने एक भु
 ङ्गी पण, पोतामां बसां सुद्धां ते झाडना बडमां
 पोलाणमां बसि करीने रेवती ह्ये; ते चरण
 रसमो पाडोस तेमनें सुड दाबक चरनें बगा दा
 दाहाडा बाखो होत, जो, तेमने ते पुड बला
 डीनी बाखी सांभळी न होत तो. एक दिवस ब
 लाडीसे एबु करुं के, येहेलां नरुड पक्षीणीपासे
 छपर बथी, यने तेनें केहेवा लागी; पडोशी बार्द;
 मं कड? बाणनें छोटी खनर्यनी बसत बावी
 के; ते नडारी भुङ्गी, रात यने दाहाडे झाडना ब
 डमां सोतरेहे; तेना मनमां एबुके के झाड उसडी ब
 डे बटले बाणणां बसां तेना हाथमां सेडेवज बावे.
 बाटे ऊं तो बार्द हवे झनें सारो नाने सुजसे ते

करीम.

करीश. तू तारु संभाळजे. ए प्रमाणे तेना न
 ममां भय पेदा करीने, ते न जाणे एम, हळुवे
 रहीने ते बलाडी हेडे भुडणीपासे गयो. एने
 ह्यो स्नान करीने केहेके, बाई, तमे राज क
 हीं बाहेर तो जतां नथी? भुडणी बाली, एम शा
 माटे पुळ्ळ? बलाडी केहेके, काई मही, सेहेज
 पुळ्ळ. तमनें तमे ते करो, एण गहडपक्षिणी
 राज एमां बघाने केहेती हती जे, भुडणी बाहे
 र जशे एटले ऊं तमनें तेनां बघां खावाने आ
 णी आपीश. एनें एक बलाडीनुपण बघुं खवरा
 शीश. एवं बोली ते, छारे काने पडुं. तो हवे
 ऊं जाऊं; छारां बघां एकलां के; तेमनें छारे
 संभाळीनें वेढुं जोईये. एम कहीनें पाकी उपर
 पोतानां बघांपासे जईनें तेमनें संभाळीनें वेढो.
 ए प्रमाणे तेणीये केडलाक दांदाडा कथुं. खाना
 नें जोईये माटे, ते राते खानोमानी बाहेर जाय,
 एनें खाणे. दिवसे बघाने संभाळीनें बेसे, एनें उ
 पर हेडळ भयभीत जोती रेहे. एवं तेनुं चरिच

) जोईनें

जोड़ने, गुरुद्विगी अने मुंडणी एमना मनमां
 अरस्परस घडो देव यथो. पछो ते एक एकना
 भवथी ठेकाणं मुंकोने कहीं गयीयो नहीं. हे ली वा
 रे तेमनी एवी अवस्था यथी के, ते, अने तेनां
 वच्चां, अन्न बना भुखे मरीगयां; अने ते बलाही
 ने घणु लावानुं राख्यु.

सार

घाडीयाओये, आ जगतमां छोटा छोटा अने
 र्थ कर्थाके. केटलाक सारा पुरुषाना कुटवगां दे
 ष कराव्याके, ते केवा के, कोई दिवस मज्याज
 नहीं. केटलाकना मनमां संदेह वाव्याके, ते
 नोकच्याज नहीं. केटलाकने धूळ मेळव्याके, ते
 फरीथी ठेकाणे वाव्याज नहीं. जे पुरुष पाडो
 शीसाथे स्नेह राखवाने इक्के, तेणे अमयुं को
 ईनुं कहेलुं सांगव्या उपरथा पोताना पाडोशीनो
 वामनुं मनमां वाकुं घाणवुं नहीं; सांभळेली वात
 उपर कल्पना करीने पोतानुं धागेलुं विजानी आ
 गळ केहेवुं नहीं; आभाटे के, जेनी आगळ कही
 थे

ये तेनें जी चाडी करवी होय तो, ते किर्जोना हा
थी करे, राईनें पर्वतजेवडी करीनें देखाडे, जे पु
रुष भलोके तेनी आगळ कोई कोईनं गते तेवुं के
हेके, पण ते ते वातनें पेटमां डांशीनें राखेके; ए
कनी वात बिजानी आगळ केहेतो नथी; तेनुं फ
ळ एके जे, पछी ते बे जणा तेउपर सरखुं हेत
राखेके; ते शत्रु होय तो पण तेनें बारणे आबो
नें ते मित्रु थायुके; तेणे करीनें ते पुरुषनं मन आ
नंद पामेके.

— ○ * ○ —

वात १२१

वेहेन अनें भाई

एक पुरुषनें बे न्हानां होकरां हतां; एक हो
करी अनें एक होकरो, तेमां होकरो वणो सुंदर
हतो; अनें होकरो साधारण हतो, एक दिवस
ते बे जणां खापना तकता आगळ रमतां हतां,

त्यांहां

त्यांहां कोंकरो वेहेननें केहेके, थरे वेहन, या तकता
 मां जो व्यापण वेमां सार कोण दांसेके, ते कोडी
 जे घणु खोट लाग्यु. ते समजी के, एणे छाने ए
 पे थोळो जणववा सार कहां. पक्का तेणायें वाप
 नी पासे जईनें भाईनी फर्याद करी; अने कहां
 जे, बापा, तकतामां रूप जोईनें प्रसन्न थयु. एते
 स्त्रीयोमो भर्मके. तेमां मन घालवुं ए परवनें या
 ग्य नथो. बापे वे जणाने क्वातो सरसां चांपीनें ते
 मना मननं समाधान कर्यु. अने कहां जे कोंक
 रां तमे लडणो नही. हवेथी तमे वे जण रोज
 आरसांमां जोतां जजो; कोंकरा, तं एटला माटे
 जोजे के, तारा या सुंदर छोने दुर्गणना मेल ला
 नथे तो तेनी तमें खबर पडये; अने कोडी, तं ए
 टला माटे जोजे के, तारा रूपमां जे थोळुंके ते
 तारा गुणे करीनें पुढं थयु के नही ते तमें ख
 बर पडये.

सार

एधी कोई वस्तु या सृष्टीमां नवी के, विचारने अने जेमां काई ओळुं दीसतुं नवी. ए माटे वहीने आरसा रूपी मानीने, तेमां पोताना गुण अवगुण निव्य जाता जईये तो, तेमां आपणुं ह्यो टुं हित थायके; ए आवाळ व्ह सर्वनें करवाने थो ग्यके. जे रूपाळे पुरुषके; तेने पोताना अवयव चारसामां सारा दीमो; पण तेणे विचार करी जे जोषुं के, जेवो ऊं बाहेरचो बग्योळुं, तेवो मां ह्यो छं के नहीं. कामदेव सरसो सुंदर रूपवान के, अने आंतर्य गुण जो लोटाके, तो, ते पुरुष लोकोने अप्रिय थायके; अने तेज पुरुष जो मिष्ट भाषण, सारो स्वभाव, एवा गुणे करीने युक्त होय तो, ते लोकोने घणो प्रिय लागे. रूपाळेके, अने सारा गुण नवी, तो, ते कोर्ने कामनो नहीं; अने जेमा गुण साराके, तेनुं रूप केवुं पण हो, ते रूपउपर लोक नजर राखता नवी, लो

ટા પથરાનો ચમકારો ઘણો હોય સાટે તે શું હ
રા રત્નની વરોવરી કરશે? રત્ન બાહેરથી વડાલ
હોય તોપણ, તે જાતે રત્નજ, સાટે જે પથર માં
હેથી સારો, જેનો બુદ્ધો નિર્મલ, કરણી ચોલો, મ
મ પવિત્ર, અને હાદાયો, તેને રૂપનું કામ નથી.

—૦૦*૦૦—

વાત ૧૨૨

શિયાળ અને માંકડું

કોઈ એક કાલે, સઘળાં પશુઓએ માંકડાને
રાજા કર્યો; તેને રાજ્યાભિષેક ચતાંજ, તેણે પોતા
મેંદિયે ચોકસપ્પાનીં અને શાળવણાનીં વડાઈ
કરી. તે પશુમં મૂર્ખપણું જોઈને શિયાળને લો
ટું લાગ્યું. તેણે મનમાં નિશ્ચય કર્યો કે, એકાદ
દિવસ, હું આ માંકડાને છેતરીને સઘળાં પશુને
નોંચું જોવરાવીશ. પછી કોટલાક દોવસ થયા
પછી કોઈએ એક જનાવર પકડવાના પાંજરાના
ખિલામાં રોટલો વાંધીને પાંજરું મેહેલ્યું હતું, તે

જોઈને

जोईने शियाळे मांकडाने कर्ह्य के, सौं एक ठे
 काणे कोर्नो, थांपण दीठी के; तेनो धणी कोर्न
 जणानो नथी, त्यारे ते राजानो एवं छारो मन
 मां आवे के. मांकडाने कपठ एवं मालुम नही,
 माटे ते उतावळो त्यांहां ते लेवाने गयो; ते रो
 टलामें हाथ अडाडताज पांजरुं बंध यधुं; अने
 मांकडुं मांहे रह्युं, त्यारे मांकडाने धणी लाज
 आवी, अने ते शियाळउपर चडफडवा लाग्युं;
 के, तं घातकी, राजद्रोही, पातकी, के. कांदें चिंता
 नही, ऊं तने छोटी शिक्षा करोण. ते सांभळीने शि
 याळ खडखड हसवा लाग्यो; अने जती वखत पा
 कु जोईने डोकुं हलावीने मांकडाने केहेके. कां
 दे, तं राजा केहेवायके अने तने या पांजरुं हे
 ए कयम खबर न पडी.

झार

थोडी समजण वाले पुरुवे राज्यकारभार मा
 ये लेवो नही; लोपो तो ते, आपणो अने लोको
 नो स्वार्थ डुबावे. माटे एवी छोटी पदवीने योग्य

तो

તો તેજ પુરુષ, જે સ્વતઃ દક્ષ ઘણો; પ્રામાણિક; સ
 ત્ય વચનો, વિજામાં ઠગે નહીં, અને પોતે વિજાયો
 ઠગાય નહીં, જે લોકોઉપર રાજ્ય કરે છે તેમનો
 રીતોનીતી જાણનારો, ઉદ્યોગી, સ્ફુર્તો, પણ કોપી નહીં;
 ખલો પણ પોતો નહીં; સ્ત્રીનો દ્રક્ષા કરે પણ છ
 રા ગુણનો સ્ત્રીનો, જુઠો સ્ત્રીનો જેને તિરસ્કાર
 આ કામ કરવું, કે ન કરવું, એનો જેના મનમાં
 સંદેહ પડતો નથી; જેમાં દંભોપણું નથી, યજ્ઞા એવા
 ગુણ નહોય અને જે રાજા થયા, તેનો દશા કેવો
 થયો તે ઉપલી વાત જોયાથી ઉઘાડી જણાય છે
 તેથી લોકોને ઉપદ્રવ થયા; અને જે ધૂર્ત હતા તેને
 તેનો સ્વભાવ ઓઢાણે, તેને વશ કર્યો, અને છો
 કનું સાદું થવાના ઉદ્યોગ ઉપરથી તેનું ચિત્ત કા
 ઢીને વિષય ભોગમાં ઘાલ્યું; અને પોતાનો સ્વાર્થ
 સાધ્યો.

(२०६)

वात १२३

खच्चरानो

एक खच्चरने घणु चरवानु मंळे अने काम पो
डु करधु पडे, तेथी ते कार्दक दिवसे सारु पुष्ट
घयु, अने खळद कुकरा मारवा लाग्यु, तेने को
ईये केहा के, तुं घोडानु बसुके, ते पण घोडो के
बा के अंधो तेंवो महीं, सरत जीतनारो, ते सां
भळीने खच्चरे पोताना मनमां निश्चय कर्था जे, प्र
संग पडो होय तो ऊं छोटी मजल करु. पक्षी
घोडाक दिवस गया एटले तेनो धणी ते खच्चरउ
पर बेगीने कहींक सारे उतावळे कामे जेतो ह
तो, तेणे तेने उतावळं दोडवा सारु घणी कमची
घो मारीयो, ते बखत, ते खच्चर दोडतां दोडतां
घणु थाक्यु, अने पोताना मनमां पोताने केहेवा
लाग्यु, अरे, आ बखत ते तारु घोडानु पराक्रम
क्यांहांके. माटे ए उपरथी निश्चय कर के तारो
बाप घोडो नडेतो नधेडो हतो।

मार

सार

जे घयडां उपरथी पोताने छोटे मानेके, तेनें गधेडो जाणवो, जे खरो छोटां माणसके ते, पोतानी कीर्त्तये करीने पोते छोटे होयके. स्वतः जे अयराकनी तेज, वदना नामथी पोताने छोटा पण आणवा जायके, ते तेनें थतुं नथी अने हुलका पण मान आवेके.

**

वात १२४

सामनुझाड अने कांटानुझाड

एक उंचं सागनु झाड अरण्यमध्ये थरुं हतुं, ते रोज पोतानी छोटार्दना गर्वथी पोतानी छेठळ थ चेलां न्हानां झाडनें शिकार करे; ते झाडमां एक कांटानु झाड हतुं, तेथी ते न सेहेवाशुं त्यागे, तेणे एक दिवस ते सागना झाडनें पुछां जे, भाई, तुं आटलो गर्व शोसार करु ते कुहे? साग के

हेके.

रहेके. ऊं सघळां झाड मध्ये श्रेष्ठ, अने शोभायमा
 नकुं; झारुं मायुं मेघ मंडळ भेदीनें गयुंके; झारा
 खभा सर्वदा लीला रहेके, अने तमे केवां केा के
 घणांज नीचां; जे आवे ते तमनें पगतळे चगरीनें
 जाय झारां पांदडा उपरथी जे टपकानो प्रवाह
 पडेके तेणे करीनें तमे डुबी जायोके, कांटानां झा
 ड केहेके ते सघळुं खरुं पण ऊं तनें कज्जकुं ते ख
 रुंज जाणजे के, जारे लाकडां कापनारो तारा ख
 भाउपर कोवाडाना घा मारवाने आवगे, ते व
 खत अझारामांनुं जे एकादुं केवळ निश्छ हल
 कुं झाड हशे तेनो साथे पण-तुं छोटे हर्षे करी
 नें तारी छोटाईनो बदला बदली करवाने इ
 कीष्ट.

सार

छोटाशेनी पडवाडे घणी उपाधीके, तेटली न्हा
 नाने नथी. ए माटे छोटे अने न्हा नो एमना सु
 ख दुःखनो विचार कर्यो होय ते, तेमां छोटा

(२१२)

एहं असारं एम केहेवं घणुं कठण पडे. एवंके तो
पण, जे पदमोये सधवा संपत्तीये छोटा यथा, ते
मणे गर्व करीने न्हानानो तिरस्कार करयो एसां
घणुं मूर्खपणुं के.

—०५०—

वात १२५

इंद्र अने गणपति

कोई एक दिवस देवोना मनमां एवं चायुं के,
कृत्य लोक मांहेनां झाडोमांथी एक एक झाड या
पणी पोत पोतानी कपानुं करीनें राखवुं. त्वारे इं
द्र बोल्हो जे, शास्त्रालीनुं झाड छारुं. कामदेव
केहे गुलबासनुं छारुं, चंद्रमाये तगरनुं कछुं, वा
यूये करेणानुं, अने वरुणे पारंगानुं, ए प्रमाणे ते
सनें ते निष्कल झाड गम्यां; ते जोरनें गणपतीनें
आश्चर्य थपुं, थोते कछुं जे, तमारी इक्षामां कावे
ते झाड तमे तमारुं करो पण, नाळीधरी ए झा

सं झाड; जेनां फळ देव अने मनस्य एवेनें प्रिति
कर, अने जे सर्व प्रकारे कामनेंके, ते सांभळी
नें दूधे डोकुं हलावीनें कसुं, गणोना एटला साटे
ज लोक तमनें ज्ञानना देव एम केहेके. अने ख
रुज के, उषधोगवना अमथुं जुडी सुती माटे एका
दी वस्तुनं अभिमान राखवुं ए सूर्यता.

सार

जे कांई काखुं ते नरी सुती माटेज करवुं न
हीं, जेनें आश्रित करीनें राखीये तेनी पासेथी कां
ई फळ जावुं, नरी शेभा जावी नहीं.

—○*○—

वात १२६

घुडं अने तीड

एक व्हड घुड झाडनी पोलाणमां उघतेो हतो
ते झाडनी छेठे एक तीडे गावा मांडां, ते वखत
घुडेवे चण बार तीडनी प्रार्थना करी जे, भाई,

तु

तुं अहींसांधी जा: छाने उपद्रव करीश नहीं, ता
 रो कटकटे छारी उघ जायके. ते उपर ते तो
 ड तेने धिक्कार करीने गालो देवा लाग्यो. केहेके
 के, अरे, तुं लुच्चा चोरके, राननो बाहेर जईने
 चोरी करीने पेट भरके, अने दाहाडे झाडनी पो
 लाणमां चाबीने संताई रहके. घुडे तेने कह्यो, भा
 ई, बापा, तुं तारी झीम संभाळ; नहीं तो बळतो
 पस्तार्इश: तोपण ते तीड सांभळे नहीं, वत्तो वत्तो
 निंदा करीने पाछे गावा लाग्यो. त्वारे घुडे ते
 नी कपटथी सुति करवा मांडी. बावा, क्षमा क
 र, मजथी अमर्धादा थयो. यण हवे छारा अ
 नुभवमां पक्कं आथ्य के, जे जागवुं तो, ताहं सु
 खर गांन सांभळतांज जागवुं; तारा मधुर खरनी
 आगळ सारणी तो गणनामांज नहीं. ताहं गावुं सां
 भळाने कोकिला तो लज्जाज पामशे. भलुज थयुं,
 जे सांभर्युं. छारीपासे एक चमृतनी शीशीके; ते
 छाने छारा देवे आपाछे, ताहं गळुं गावे करीने
 सुकाई गयुं ह्यो माटे, जं एम जाणुकुं जे, तेभां

थी एक प्यालों भरिने जोईये तो ऊँ तने चापी
अ. तोड तरशो हतोअ, माटे घुडपासेथी अ
मृत लोधाने छोटी आशाये तेनी पासे गयो. ते
प्रासे आवतांज घुडे उचकोने ह्योनां नांख्यो.

सार

प्राणीमात्रनो प्रकृतीयो जुदी जुदीयोके. एकादी
ही प्रकृतीमां विजानुं करेसुं आवतुंज नथी. ए मा
टे तेणै एक वे बेळा प्रार्थना करीमें कहां होय
तो, तेमें उपद्रव करवो ए योग्य नथी. खनें उ
पद्रव करीनें उळटुं लडवुं, गाळो देवो, एतो के
बळ दुष्ट पणुज, पक्षी जे एवं करेके तेनें ते शि
क्षा करे तेमां काई आश्चर्य नुही.

—**—

वात १२७

एक आंखेकाणु हरण

एक काणुं हरण समुद्रनी तीरे नित्ये चरतुं ह
तुं: तेना मनसां एवं के, चरती तखत कांणी खां

४

समुद्र की तरफ चनें साड़ी चाँख देरनी तरफ
 होय, तो, मारो आवये तो ते जगाने. एवो
 बदेबल करीने ते पानाना मननां पानाने निरी
 य गणतो हतो. तेउपर एक पारथो घणो
 दाहाडा सुधी टापतो हतो; पण ते हायता
 आव्यु नहीं; त्यारे ते एक नावमा बैसाने. हे
 लुवे रहीने पाणीने रस्ते यईने तेना पास आवो;
 अने गोळीमारोने तेने पाखु. पछो ते प्रण जे
 तो वखत आ शब्द बोल्हो; हे प्रारब्धताती गतो
 अकळके; जे तरफथो जे चिंता करतो हतो, ते
 तरफतो हाने उपद्रव थयो नहीं, चनें जे तरफ
 थो भय नथी एवं हाने सुजतुं हतु ते तरफथो
 हारो अंत आव्यो.

सार

आ जीववानो पक्कवाडे नाना प्रकारनां भयके.
 तेथो आपण गमे तटला विहीने चालीये तो पण,
 सर्व प्रकारे निर्भय एवं कोई दिवस यनार नहीं.
 आ संसारमां आववानो मार्गतो एकजके; पण आ

हीयांथो

होंयांयो बवाना मार्ग तो अनेक हे. त्यांहीं आपणी चोकणी केटली चाले? जे वातो आपणा आप्यामां आवेके, अथवा जे प्रत्यक्ष देखावके, ते कदापि जळवाय. पण जे आपणी आंखोयी व मळी, अने जे आप्यामां आवे नही, एवोयो वातो आपणे आसपास सैकडांके ते कस जळवाय. ए मां एटलुं जणांकुं के, आपण निर्भय होये एवं को ई दिवस मानवुं नही; अथवा सभय होये माटे निर्भय होवा, सार घणो अम करीये नही. जारे निर्भय एवं आपणा हाथमां नधी त्यारे रात दा हाडो भयमो चिंता राखवो ए मूर्खता, मनुष्य स एखा विवेकीने योग्य नही.

—००*००—

वात १२८

वरुण अने कवाडी

एक कवाडी एक नदीना कांठानुं झाड कापतो
होतो; तेनी कोटोवाडी अकसात तेना हाथमांभी

कुढीने

हुटीने पाणीमां पडो; माटे ते वज्रो शोक करवा लाग्यो. तेनो विलाप सांभळीने वरुणदेव त्याहां प्रगट थयो; तेनें कवाडीये पोताना शोकनं निमित्त कसूं. ते वखत वरुणदेव पाणीमां डपको नारीमें एक सोनानी कोहोवाडी खेईनें उपर आओ, अनें ते कोहोवाडी कवाडीनें देखाडीनें पुढे के, अरे आज तारी कोहोवाडी? ते बोल्हो एना छारी नहोय. पक्षो वरुणे फरीथी डपको नारीमें एक रुपानी आणी, ते जोईनें एण कवाडीये कसूं ए वण छारी नहोय. विजी वखत तेनी जे गयो हती ते खेईनें आओ, तारे ते कवाडीये छोटे दुर्व करीनें लीधी; अनें वरुणनो घणो उपकार माओ. ते वखत कवाडीनो साचाईनो अन्हार जोईनें वरुणे प्रसन्न थयोनें ते सोना रुपानी वे कोहोवाडीये तेनें वर्धीस आपोयो. ते सभाचार कवाडीना सोबतीये जाण्यो. तारे तेणे वण नदीउपर जोईनें तेमज हावमांनी कोहोवाडी पाण्णेमां पाडी, पक्षी कोई खण जाणे ए प्रकारे ज, विलाप करवा लाग्यो. ते सांभळीनें पूर्ववत्

वरुण

वरुण त्यांहां आय्यो, अने उपको मारानें सोना
 नी कोहोवाडी उपर काहाडी, अने ते कवाडीने
 पछुं के तारी कोहोवाडी गयोहे ते आत्रे, ते
 सोन जोईने कवाडीनु मन पंचळ बधु, अने ते
 वरुणने केहेके, हा महाराज एज ह्यारी. एम
 कहीनेते घाभरो यईने वरुणना हाथमांथी लेवा
 गयो, एटले, वरुणे तेने तिरस्कार करीने तेने सो
 नानोते थापी नहीं, पण तेनी मूळनो हती ते
 पण तेना हाथमां आवी नहीं.

सार

पणुं करीने लोकोनु अन्धकार मारें चालवाउ
 पर चित्त पायहे, आ जगतमां ठगपणे करीने आ
 समारा केटलाकहे ते अनेक कारण केहेके ते को
 हो; पण जोतामां आ लोकमां प्रामाणिक पणा
 सरखो विजो पुण मधी. अवे के, आपण, सा
 को ग्रहस्थ होयहे तेउपर सचळां कामनो वि
 आस राखीये कीये, अने तेने होअो मानोये की

ये;

ये, नेमज परलोक प्राप्तीमां पण प्रामाणिकपणा
सरलो गुण नथो, जायाची कोई लोकोना 'शा
स्त्रमां साचाईनी प्रशंसा नथी करी एवं नथी; मा
ठे साचु बोळनारो युद्ध बे लोकमां सुख पामेळे,

—*—

वात १२६

दीपडु शियाळ घने बांदरो

एक बांदरानें पंच करीनें, तेमो आगळ, दीपडे
शियाळ उपर चोरोनी फर्याद करी. ते पंचाई
तनु कौतुक जावा. सार विजां पशू पण सभामां
आव्यां हतां ते त्यांहां दीपडानुं बोलवुं चड रक्षा
पळी, शियाळे एक वातमां जवाप दीधो के, हों
दीपडानो जनम चोरो नथो. पळी ते तंटा
नो विचार करीनें बांदरो सारांश हनेते कह्यो.
दीपडानें कह्युं के, अरे, तारी एवो जनम काई
नथी नथी. घने शियाळनें कह्युं जे, तें यापण खा

थोले

थोड़े खरी, एसां काई छाने संदेह नथी. ए प्रमा
णे ते वे जणाने लुछा एवं ठरावीने सुभा उठो.

सार

जे एकवार लुछो केहेवायो तेन सखं कोई
मानत नथी. दीपहुं ए विजानुं वित्त केई जनार्ण, च
ने शिथोळ पक्कं ठण, एवं रुबे जाणे हे, माटे, ए
वो व्याप्य अणे.

—**—

वात १३०

मरीनो मळ अने समुद्रनो मळ

एक नदीसांनुं माळसुं पूरना तणावसां तणाई
ने समुद्रसां गद्यु. ते मवा देशसां जतावेतज, त्या
हांना रेहेनाराशेनें तण सरखा मानवा लाग्युं
अने केहेवा लाग्युं के, ह्यारो देश, ह्यारो जात,
अने ह्यार कुळ, तहारा करतां साहं के. ए माटे
ह्यानें तमे सर्व मळांनें उजे ठेकार्ण बेसारोनें सा
ज आपो. त्यांहां पासेज एक विजो जातोनुं माळ

सुं हतुं तेणे ते सांभळीनें उत्तर दीधो अरे, हवे
 सी एवा वात बोलीश नही. कदापिक तूं अनें ऊं
 एक जाळसां पकडाया तो, तनें खबर पडशे के उं
 चुं ठेकाणुं कोलुं. गमे तेठलं मूल आपोनें ताले
 वंत लोक, ह्मनें खावानें खेई जणे; अनें तुं तो
 हलके मूले मरीव लोकोनें घेर बेचाईश, अनें
 मफत पण अपाईश.

सार

पारके ठेकाणे जईनें ते ठेकाणानी निंदा, अनें
 पोताना देशनी स्तुती करेछे तेनें अनाडी पुरुष जा
 णवो. जेनें तेनें पोताना देशउपर प्रति स्वभा
 चीज होय. आपण परदेशनो निरस्कार करीनें
 पोताना देशनु वर्णन करवा मांडीये तो, ते देश
 मा लोक आपणी अवगणना करीनें ते पोताना
 देशनी प्रशंसा करशे. वस्तुतः आपणो देश सांगो
 माटे आपण छोटा एवं काई नथी. तेनें तो गुण
 विद्या, जोईये. ए माटे काई देशनो रेहेवासी
 हो पण गुणवान अनें विद्वान होय तेअ सर्व ठेका
 णे प्रतिष्ठा पामे.

देवगर्मा पंडित

एक दिवस देवगर्मा पंडित रमनो हनो, ते जी
 रन कोई एक विजे पंडित तेनो मशकरी करो.
 त्वारे तेनो गर्व उतारवा साह देवगर्माये एक भ
 मुष्य सगावुं, अने तेनो पणह उतारीने पांशहं क
 राने भुंउपर मेहेयुं, पक्षी ते पंडितने पुछां के,
 या छारा कोहेडानो अर्थ कहोय तो तुं विहा
 न एरो. पंडितने ते कांदै सुज्यं नहीं, त्वारे ने
 ने देवगर्माने कहां, के, एनो अर्थ छाने तो कां
 ई सुजतो नवी, माटे तुज केहे. देवगर्मा वो
 ख्यो, तने सुजतो नवी तो अ कऊहुं सांभळ. जो
 का भमुष्य सदा चडावेसु होय तो, उतावळुं भा
 की जाय, अने त्वारे काम पडे त्वारे चडावीये
 तो, घणा दिवस टके अने घणु काम करे.

सार

मनुष्यन मन आ धनुष्यना सरखे के, ए सदा
 बीधी मेहेल्युं होय तो, एनो शक्ति ओखी धायके;
 पंखी ए तेवुं काममां आवनुं नथी. माटे हाउ
 विनोद रमवुं ए, मगने विश्वांतोनां ठेकाणांके; अ
 ने बुझीने वधारनारांके; ते निर्दोष माटे छोटा
 पुरुषोत्तम ते सुखे करवां.

—**—

.वात १२२

कागडो अने खुबतर

एक खडामां खुबतर रेहेतां हुतां; तेनी मंडळी
 मां पोछां थोळां करीने एक कागडो पेडे; तेणे
 मौन राखुं हुत, माटे ते खुबतरोना आप्यामां
 आव्यो नही, एवं केटलाक दाहाडाहुची वाख्य;
 पछी कागडाने पेतानो कतीनं मानन रेहेतां ते
 जा, का, करवा लाग्यो; तेउपरशी खां कोणके

ते

ते जाणीने खतूनरोचे तेने शिक्षा करीने काहाडी
 मेहल्यो, ते फरीने पोतानी मंडळीमां गयो, त्या
 वे तेनां ते रंग वैरंग पीक्षां जोडने, आ थापणामांना
 नहों; एवं कहीं कागडाक्याचेपण सारी काहा
 ह्या ए प्रमाणे ते कागडे पोतानामां जे थो
 ग्यता न होतो ते लेवा गयो ते पोतानी हत्ती ते
 नेपण तेहेलांने आय्यो. ते नहों कागडे अने
 नहों खतूनर एवां थयो.

सार

बेष धारीके तेमनं एटलुं एक सारं के के ते घ
 णा दाहाडासुधी लोकोने ठगी सकता नथी; ते
 मनं बोलवुं अथवा आंचरण एकादी बखनपण ते
 मा बेषयो जुदुं पडेके तेणे करीने तेमनं खोटाप
 णुं उताबळुंज सूझ पुरुषना जाण्यामां आवेके.

(२२६)

बात १३३

चकली घने ससलो

एक गरुड पक्षी, ससलाने पकडीते तेनीउपर
बैठा रहतो. त्यांहां पासेज झाडउपर एक चक
ली रहती, ते ससलाने कहेके; अरे, तूं परो सखेके.
थिक् तारा जीववाने, अरे तूं कानोमांनो ने
शी रहाने मिथ्या कां जीव खुवळ. तुज्जने ना
शी जा. ऊं एम जाणुं, जे जां तूं चेत करीश
तो, जातोना चपळके साटे, शत्रूना हाथमांघी सह
ज नाशी जईश. ए प्रमाणे चकली ससलाने तिरस्का
र करीने बोलेके, एटलाभां, एक बाज आचो;
तेणे झडप मारीने ते चकलीने उचकी सोधी; ते बख
त चकलीचे घगा विलाप कर्था, पण ते बाजें कांई
गजकार्था महीं, अने तेने लोईने गयो, ते जोईने,
ससलो मरती बखत पण समाधान पामाने चक
लीने केहेके; अरे, तूं पोतामे निर्भय मानीने ह्या
ने धमकावती रहती, ते तज उपरज ते प्रसंग आ
व्यावे, तो जोईये तूं केम निर्पाह करळ.

सार

(२२७)

सार

जे पोतानी उपर बीने त्थारे तो घभराय, अ
ने रिजाने साव शास्त्रनी बागे कोहे, ते पुरुष उ
पहासने योग्य धायके.

—○*○—

वात १३४

बृहस्पति अने मूर्तिकरनारो

एक दिवसे बृहस्पतीना मनमां आबुं के, मनु
ष्य लोकमां छने कोटलुं मानेहे ते जावुं, माटे
ने भूलोकउपर आब्यो; अने मनुष्यनं रूप लेई
ने मूर्तिकरनारानी दुकाने गयो. त्याहां अने
क देवानी मूर्तिथो बेचवाने मांडीयो हतीयो, ते
मां तेणे इंद्रने, कुबेरने पोताने पण, दीठा. ते व
खत पोते मूर्ति बेचाषी सेवाने आब्योहे एवुं दे
छाडीने, इंद्रने सामे आंगळी करीने बेचनाराने
पुहेहे; अरे, आ मूर्तीनिं शुं लेईश? ते बोल्हो दे

वैसा

पैसा अने आ कुवेरनुं? एनुं कांई वत्तु बेसणे, ते
 सांभळीने बृहस्पति माघ डोलावीने तेने पळेके, वा
 रु व्हारे, आ बृहस्पतान मूल सघळा करतां वत्तु
 हशे महीं वारु? मूर्ति बेचनारो बोव्हा, जो तं
 आ बे मूर्तीयो लोईश तो, बृहस्पतीनी तो छ त
 ने ते वेना मूलमां मफत आपोश. ते सांभळी
 ने बृहस्पति आशीयाळो यर्दन पाळो गयो.

रार

जो आपण सन्मार्गे चाळीयेकीये, अने योग्य
 आचरण आचरीयेकीये, अने आपणा देशनुं, मित्र
 मं, अने पोतानं पण कल्याण यवासार उद्योग क
 रीये कीये; तो पळी लोक मनमां आवे तेवुं बो
 लोने! आपण ते सांभळवानो उद्योग शं करवा
 करीये; जे पुरुष पोतानो प्रशंसा विजाने होडेथी
 सांभळवानो उद्योग करेके, ते बुद्धि मानेना लक्ष
 मां पोतानं हलकापणं मात्र देखाडेके. पळी-ते
 अने बृहस्पतीनां पळे लाजवुं पडेके.

(१२६)

मात १४५

राजा गुरसेन अने तेनो दास

कोइ बखत जन्हाळाना दिवसनां, गुरसेन रा
जा नगरने बाहेर फरीने पावो आवतो હતો, તે
પોતાનો સુંદર વનવાડીમાં મલો. ત્યાંહાં માના પ્ર
કારનાં શુભ હતાં, તેની શોભા જોતો જોતો આ
ળીમર તેળીમર ફરેલે, ઇટલામાં, ત્યાંહાંનો એક દા
સ, સારો બનીઠનોને હાથમાં એક પાળી છાંટવાની
છારી લોઈને, રાજા હતો તે ઢેકાળે રસ્તો છાંટવા
આવ્યો; મનમાં એવું કે, જીવેલાળ લીધેલો દાસકું
તે છારી આસ્થા પૂર્વકની ધાકરી જોઈને રાજા પ્ર
સન્ન થઈને છારો દાસપણામાંથી છુટકો કરે. પ
છી તે રાજા જહાં જહાં ફરે, ત્યાંહાં ત્યાંહાં તેનો
આગઠ તે આડે અવલે રસ્તેથી જઈને છંટકાવ ક
રે. રાજાએ તેનું મરજ ઝેટલું આર્જવ જોઈને, તેને લો
લાવ્યો; ઇટલે તે દાસ દોડતોકને રાજા સરસો

આવીને,

आधीने, आशा भरी उभो रह्यो. त्वारे राजाचे ते
ने कहां; अरे, तू तारुं काम रेहेवा देईने ते जे
आटली वार परिश्रम कर्यो, एतुं कांई काम न
होतुं. आटली वार तारे विजुं कांई काम करवुं
जोईतुं हतुं. तो हवे जे तारो संदेह भावुंकुं के,
तारी आशा चारीपासेथी सकळ बनार नथो.

सार

गरज ओटलुं आर्जव, आगळ आगळ पडोनें क
दनारा घणा पुरुष छे; ते आपणी तरफती रिजा
मे प्रसन्न करवा सारु जेन जेम प्रसो उद्योग क
रेछे, तेम तेम, सुख पुरुषनें तेमो कंटाळो आवे
छे, तेथी तेमो स्वार्थ चतो नथी. अने उद्योग नि
ष्कळ जायछे.

—००*००—

घात १३६

कोयला बेचनारो अने घोषी

एक कोयला बेचनारा एक नगरां घंधो क
रवा सारु गयो हुनो, त्यांहां तेना नामना धो
बानो मेलोप ययो, त्वारे बे जाणाचे एक एकनी

खबर

खर अंतर पुलीनें रेहेवानी ठेकाणां पुछ्यां; त्यां
 रे कोयला बेकनारे धोवीनें कहां के, तार ठेका
 णं सार नथी नाटे, क्षारा घरमा आवीनें रेहे.
 धोवी बोख्यो; भाई, ते कहां ते खर पण, तारी
 जोडे आवीनें जो अ रअ नो अ जे लगडां सवा
 रमां धोईनें आण तेने तारा कोयलानी रज स
 ध्याकोळ बता पेहेलां काळां करे.

सार

आ जगतमां कोईनी साथे समागम करवो, तो
 ते छोटा विचार करीनें करवो जोईये. आपण
 छोटा मुणी छीये, पण निरंतर जो दुष्टनो समा
 गम रेहे, तो, ते आपणनें तेना संरखा करेज. ए
 माटे जे विचार करनारा अने पोतानं सार इ
 छनाराके, तेमणे कुमनुष्यथो बेगळेज रेहेवुं. तेनी
 संगती समूळ नाथ करे. तेनो समागम करीनें
 आपण निर्लेप रक्षा तोपण, लोक तेवुं जाणनार
 महीं. समागमना योग्यो तेनुं अने आपणं एवुं
 एकटुं मळीजाय के, तेमांनुं काळुं, ते, तेनुं, ख

ने नोट, ते, आषण, एटल, जुड़ पाडवानो खम
लोक करता नथी. प्रतिष्ठाके ए निर्मल झरणना
षाणी सरखीके, ते जेम कचरा कादवसां मल्लीने
बेहेवा मांडे त्यारे. ओहोळो थायके, तेमज दुष्ट स
नागमयी विद्या मेखी थायके.

—*—

वात १३७

गवई सारंगीवाळो

एक गवईसारंगी खेईने कसालनी दुकाने गान ता
न करीने मयपी लोकोने घणा प्रसन्न करतो. तेमनी
ते बाहवा: सांभळीने तेना मनसां एवं थांयुं के
एक दिवस ऊं नाटक सभासां जईने, छारो गुण दे
साहीने, द्रव्य, चने कीर्ती, पेदा करु. एवो तेना घणो
थायछ जोईने गान करनारा तेने सभासां खेई गया;
त्यांहां जग्या विशाल, चने लोकनी भीड, तेणे
करीने तेनां खर. चने सारंगीना नाद ढंकाई गयो;

ते

ते कोई भी संभळायो नहीं, अने जे कोई लोक, पासे
 हिता तेमणे सांभळ्यो, पण तेमणे ते ठेकाणे छोटा
 छोटा मानारा, बगाडनारा, एममं मारुं, मगाडवुं,
 सांभळ्युं हतुं, माटे तेनुं ते एमनें कठोर लाग्युं, ते
 यी ते बखत तेमणे नाक मरडीनें रीसवी तेनें या
 छो यांछो करीनें ते गवर्दनी फजेती करी; अने तेनें
 सभानी बाहेर काढाडो मुक्यो.

सार

जे प्रशंसक अथवा अजाण लोकोना मुखवी
 प्रशंसा सांभळीनें पोताने छोटा मानेके, ते पुरुष
 लोकोना उपहास पामेके. एकादो विमोदी हो
 घरे, ते चार अमाडी लोकोनें प्रसन्न करी सकेके,
 माटे, ते गुं पंडित लोकोनी आवळ ह्यो उघाडी
 नें तेमनें प्रसन्न करी सकशे? ए माटे नकं प्रसन्न
 करवा उपरज मन न राखीनें, पोतानी योग्यता,
 सांभळनाराथोनी योग्यता, अने जे गुणे करीनें प्र

सम करनार ते गुण आपणामां पुराहे, ए सचळ
विचार्युं जोईये. नहीं तो कथीं अम तिथ्या था
य, अने उळटे लोकनां उपहासतानें पामे.

—**—

वात १३८

कृतघ्न कुतरों जेणे गाडरां लाधां

एक रवारी पोताना कुतरा उपर घणो, विश्वा
स राखतो हतो. बाहेर जाय त्यारे पोतानां गा
डरां ते कुतरानें सुणे. अने तेनाउपर सघळो वि
श्वास राखीनें निश्चिंत रेहे; अने ए कुतरो उत्सा
ह्यो चाकरी करे-माटे तेनें ते नित्य मांखण, रो
टलो, खवरावे. अने तेनीसाथे मीठुं मीठुं बोले.
एटलुं करतपण ते कुतरो धणीनी पक्कवाडे एका
दुं गाडरां मारीखाय. पक्को कोटलेक दिवसे ते र
वारीनें खबर पडो, त्यारे तेणे ते कुतरानो प्राण
लेवा मांडो; ते वखत कुतरो तेनें केहेके, अरे झा
रा धणो, तुं झारो जीव लेईश नहीं, जो! जं ता

३१

રો અસલ જુનો ધાકર હું; એક અન્યાય ચુકીને
 ૧. કોં કર્યો હશે, તે ઉપરથી તું ધાવડો નિર્દય થઈ
 ને હાને મારી નાંખવાનું શાસન કરાવે તને યો
 ગ્ય નથી. દીપડું તારું નિત્ય શત્રુપણું કરે છે, તેનું
 વૈર તું કાં લેતો નથી? રવારી ઉત્તર કરે છે અ
 રે લુચ્છા, તને દીપડા કરતાં સોગણું વત્તું શાસન
 કરવું યોગ્ય છે; શામાટે જે, દીપડું અપકાર કરે
 જ, એ ઝં પક્કું જાણુંકું, માટે તેનાથી ઝં નિત્ય સા
 અથ રહેતો. પણ તું હારી વિશ્વાસુ ધાકર, અ
 ને ઝં તારે મહસે રહેતો, તને સારી રીતીએ પા
 ળતો; તે તજથી જારે હારી અપકાર થયો એ, હા
 ને ઘણું દુઃસહ લાગે છે. માટે તજ સરસા કતમ્બ
 ને જીવતો રાણવી એ યોગ્ય નથી.

સાર

જેનું આપણે સારું કર્યું; જે ઉપર આપણે વિશ્વા
 સ રાસ્યો; જેનો સાથે આપણ મિત્ર બુદ્ધીએ ધાર્યો;
 તેનાથી આપણે અપકાર થયો તો તે સેહેવાતો
 નથી. તેની ક્ષમા થતી નથી. તેના અપકારથી

જે

(१३६)

जो दुःख पायहे तेनो अनाश पण अचूना अकला,
रखी यतो नथी. माटे एवा अपराधीयोनं शिक्षा
करवी ते, अपराध प्रमाणे करवी नहीं; तो, आ
पणो एवा प्रमाणे करवी.

—*—

वात १३६

इंद्र अमें गधेडो .

एक घोडीनो गधेडो भार बहीवहीनं अकला
यो, त्वारे तेणे, इंद्रनो प्रार्थना करी. हे देव, त्वा
में बिजो धणी आप, त्वारे इंद्र तेनें कुंभारमें स्वा
धीन कर्यो. पक्षी त्याहां इटोनो भार बही बही
में त्यांहांयो पण अकलायो. पक्षी करीयो इंद्र
नो प्रार्थना करवा लाग्यो जे, कुंभार करतां बि
जो सारो धणी आप. त्वारे पक्षी इंद्र तेनें जाम
डीयानें स्वाधीन कर्यो. तेनी पासो रहीनें ते घ
रोज दुःखी ययो, अनें केहेवा लाग्यो, अरे, ऊं

मूर्ख

कैवेर जे, या नामडीयो तो ते बेकरतां घेलो
अ दुष्टके, जीवतां काम करावीनें मुचापळी
झावं नामडुं पण काहाडनार एवा बणीनें स्वाधी
न बयो.

सार

होय ते चाकरी अथवा ठेकाणाची अकळार्डेनें
विजा ठेकाणामां सुख बगें एवं मानेके, ते अज्ञा
नी जाणवा, सुखदुःख ए सर्व ठेकाणे के; एमाटे आ
पण होय ते ठेकाणामां रचीनें संतोष पामोये, या
माटे के, नवा ठेकाणामां सुखअ बगें एना निश्चय
नवी. कदाचित् अधिक दुःखपण याय.

पात १४०

नामडीयो उंदर अनें सेहेरनो उंदर

एक सादो भोळो नामडानो उंदर हतो; तेनें ये
र त्हुट पुट एवा एक सेहेरनो उंदर आयो. ते
नें अनें एनं जुनं बोळणाण हतुं, तेची ते नामडी

चे

धे तेनी घणीअ परखानत करी. जे पदार्थ पोता
 में घेर हता ते, अमें पासेना खेतरमांघी काई कुं
 ली कुंली बटाणानी घीनो, अने बजनों ऊबोयो,
 अमें काई रोटलाना कडका, ए सर्व तेनी आब
 छ मेहेल्लु, अने ए प्रमाणे मामडामां जेटली ज
 मसो मळनीयो हतोयो तेदली तेंखे सेळवीयो, प
 ण सेहेरीने ते काई भावीयो नहीं, पछो ते गा
 मडीयाने केहेवा लाग्यो छोटा भाई, जो तने छा
 में रजा आपो तो, ऊं मन मीकळु करीने बोखुं
 जे, तने आकी आ मदारी जग्यामां कम रहोका.
 आ अरण्य, अहीयां आसपास चार, झाड, डुंगर,
 अमें पाणीनां केळा, ए बिना त्रिभुं काई नजरे प
 डतुं नयो, तो आ पक्षीयोना कलबलाट करतां
 माणसोना शब्द सारा कौनहीं धार? आ उज्जह
 अरण्य करनां राजधानी सारी के नहीं? माटे ऊं
 कजंकुं ते तमे खरुं मानो, अने सेहेरमां चालो.
 त्यांहां तमे घणुं सुख पामशो. हवे विचार क
 रशो नहीं, उतावळा चालो. आ मृत्यु लोकनी
 वस्ती क्षणभंगुर, माटे जेटलो काळ जाय तेदलो

आनंदमां

आनंदमां काहाडयो. एवी तेनी बहारनी बातो
 सांभळीमें ते डोसामें मोह लाग्यो. पक्षी ते बे जणा
 त्यांहांची मीकव्या, तें रात पडी एटले सेहेरमां
 गया. आनळ आयळे एटलामां तेणे एक छोटां
 घर दीठुं. त्यांहां पेहेले दिवसेज विवाह चघो
 हतो, तेनी जमणवार चघी हती; ते घरमां जई
 में ते बे जणा एक खोरडामां पेठा. त्यांहां ना
 ना प्रकारमां पक्कान्न भयीं हतां, चनें त्यांहां को
 ई मनुष्य हतुं मंडी; ते जोईनें नानडीयानें चणे
 आनंद चयो, पक्षी सेहेरी तेनें केहेके, छोटा भा
 ई, तने खोरडा वचे बेसो, ऊं तमनें एक एक प
 दार्च आपुं ते चाखीनें छानें तेमो स्वाद केहेता आ
 चो. पक्षी ते सेहेरी उंदर जेटलां पक्कान्न, फळ,
 हतां तेमांंची एक एक पदार्च अनुकने पोतामा
 परणानें आपे, ते परणो चाखीनें, चाख्यो मोची
 नें, आहा! शा मोठा पदार्चके, बा: एम कधीनें ना
 मंडीयो तेनो स्वाद वर्णन करे, ए प्रमाणे एक
 घडी तेमणे आनंदमां काहाडी. एटलामां को
 ईचे खोरडानां कमाड उघाडवा मांड्यां, ते जाणी

में वे जणा नाशनें एक लुणार्ना जना रक्षा, ए
 टलासां वे छोटा मातेला बलाडापण त्यांहां या
 प्या; तेमळे छोटा शब्द कर्था, ते सांभीळने नाम
 डोया उंदरनं हईवुं भाके बडकवा लाग्युं. पशो ते
 हळवे रहीं सेहेरीनें केहेके, भाई, यावुं जो ता
 रा मगरनं सुख के, तो ताहं मनें अक्षय्यारहो. ए
 न छारेतो छारं गांमहुंज सारं. त्यांहांना खेतर
 भी मीनो सारी, पण रात दाहाडो जीवनें वरथरा
 ह राखीनें, अहीयां या पकाम खावां न जोईये.

सार

सावा पीवा जेटलुं इच्छा, अनें उपद्रव विनाम, ए
 कांत स्थळ जो मळे, तो, अरण्यमां वास सारो; पण
 सेहेरमां रहीं नामा प्रकारना शरीरनें अनें मन
 में उपद्रव भोगवीनें, अमंतार्दना डोळमां रेहेवुं कां
 ई सारं नहीं. केहेयो के, विजय वासमां एटलुं सु
 ख के थारे लोक मगरमां कयम रेहे के? तो ते
 मां कारण घणांके; केटलाकनें बाद प्रतीवाद सार

रेहेवुं.

रहे, पड़े, केटलाकमें राजकामसार, केटलाक
 में उद्यमसार, केटलाक गुणवान्ना समागम रा
 ह रहेके, केटलाक पोताना वृद्ध, रहेता आया जा
 टे, केटलाक स्नेही संबंधीसार, केटलाक मगर द्रव्य
 मेळववामुं ठेकाणुंके ते सार रहेके, केटलाक वि
 हान कुशलके ते मगरमां रहीनें एवं, द्रव्यके के
 अमक संख्या द्रव्य मेळवनें, पोताना गाममां ज
 र्दनें, सुख भोगवीशुं, विजा केटलाक, अन्मसुधी नग
 रमां दुःख भोगवे छे, तेमना मनमां एवं के वृद्धा
 वस्थामां मगर मेहेलोनें एकादी मदीनी तीरे अथ
 वा तीर्थमां जर्दनें सुखेकरीनें आयुष्य पूर्ण करीशुं.
 एटले, नगर वासी लोकोमां घणुं करीनें एवो को
 ई जणातो मधी के, जेना. मनमां विजनवास कर
 बानी इच्छा मधी. छोटा छोटा जुना कवीधोयेप
 ण वर्णन कयुं छे के, मन.स्वह राखवाने, पुण्य
 करवाने, अथवा आरोग्य भोगववाने, विजनवा
 स जेवुं विजुं साधन नथी.

उदर अने सापनी मागी

एक वभक्षित दुबळो उदर होता, तेणे घणे अ
मे करीने एक फडीयाना कोठारमां खुणाभणा
दर पावुं, अने सोढे घेणे. त्याहां केटलाक दी
वस यथेष्ट दाणा खार्दने जाडो यवो. पही एक
दिवस तेने बाहेर नोकळवानो इका थयो, त्तारे
बाहेर नोकळवासारु घणो थस कथी, पण शरी
र जाडु थयुहतु ते दरमां मासु नही तेथी नो
कळायु नही. ते जोईने पासे एक सापनी मागी
हती ते तेने केहेके, भाई, जो तुं तारो कुटको क
खाने इकतो होय तो, तेमो उपाय आ एकज के,
जे, तुं जेवो पेहेलां दुबळो हुतो तेवो थो, एटले
ऊं जाणुं जे देव योगधी तुं यहीयांथी कुटीश.

सार

जे गरीबाईसांणी श्रीमंतथयो तेने घण करीने गरी
बाईनां सुख भोगववाने सळतानथी. गरीबाईमां जे
सुखके ते श्रीमंताईमां नथी; श्रीमंतनी पळवाडे घ

ज्याक तंटा आवेके, ते गरीबने नथी होता, मा
टे जे ते तंटाधी अकळाय तेणे संपत्तीधोपण अक
ळायुं जोईये, तेज सुख पामे, बिजा उपाय नथी.

वात २४२

पेट अने बिजा अवयव

कोई एक दिवस हाथ, पण, इत्यादि अवयवों
धे विचार कर्हो के, आपण छोटा असकरीने पै
दा करीये, अने आ पेट नकामुंवेठुं वेठुं लाय, ए
मुं? माटे आजसुधी जे ययुं ते अयुं, पण आज प
क्षी ए पोते उद्योग करीने एनुं पोषण करे, अक्षारे
एनी कांई गरज नथी. एंस कहोमें सर्व अवयवों
धे सम खाधा. हाथ केहे अक्षो जो आजपक्षी पेट
में माटे एक आंगळी हलावीये, तो अक्षारी सध
ळी आंगळीयो तुटी पडो. क्षो केहे ऊं सम खाऊं
के, जो ऊं एने माटे एक कोळीयो लेऊं तो क्ष
में कीडा पडो. दांत केहे जो, पेटमाटे अक्षो एक

कोळीयो

कोळीयो आवीये तो ब्रह्माहं सत्वानाम् जाये।
 ए प्रमाणे सम खाईनें निखय कथो ते सर्वनें महा
 कष्टे करीनें पाळवो प्राप्तयथो. हेलोवारे एवो अ
 वस्था आवी जे, सघळा अवचव सुकाई गया; हा
 उकां अनें चर्म मात्र बाकी रह्यो. ते बहुत सर्वेनो
 आंख्या उघडीयो के, आपणे कान खोटु कथे. पेट
 बना आपणो उद्धार नथी. पेट पोत उद्योग क
 रतुं नथी सह, पण जेठलुं आपणां योग्यो तेन पो
 षण, तेठलुं तेना योग्यो आपणु पोषण पायव्हे.

सार

कोई एक समयमां एक राजधानीमां एतुं
 बयं के, घणा दिवस सुधो राजाचोने परस्पर लं
 डार्ई चाली; तेथी सरकारमां द्रव्यनो तोटो आ
 यो; माडे राजाये पोतानी रक्षीयत पासेथी पा
 रे वारे वेरो लीधो. ते उपद्रवथी अकळार्ईनें
 सघळी प्रजा सेहरे मेहेलीनें नीकळी गयो. त्यांहां
 सघळा लोकोये एको कथो के, आपण मेहेनत

करीये

(१४५)

पूरीये, अपने सरकार अपने बैठे साथ ए गी? तो
 बीजघो आपने सरकारमें कोई आपसु नहीं. ए
 वो तेमनो निश्चय जोईमें राजाये पोतानो प्रधा
 न तेमनो पासो भोकसो. तेणे तेमने आ बैठे आ
 में अबचवनी बात कही. ते सांभळतांवांतज प्रजा
 राजांमें अनुकूल बयी; अपने राजा प्रजा वे सुखी
 बयां. तात्पर्य एठलुं के, सरकारमें द्रव्य आपो
 ये नहीं. तो, ते सरबंदीनुं सरच सहजज ओहं क
 रे, एठले, भाडां एकठां बर्दमें दीवसे लुटे, को
 ई कोईनुं सांभळे नहीं; अपने बंड उभां बर्दमें उ
 पड़व करे; तेही राजा अपने प्रजा एमनो एक का
 लेज नाश बाय.



बात १४६

गधेडो सिंह अपने कुकडुं

एक गधेडो, अपने कुकडो, ए वे जणा, एक ठे
 काणे बरता हता; एठलामां सामेची एक सिंह

बावतो

आवनी हतो तेनें जोईमें तेवखत कुकडे छोडो
 शब्द कियो. सिंघ कुकडाना शब्दयो घणुं निहो
 धेके, ते शब्द सांभळतांअ, सिंघ घणी उतावळ क
 रीनें पावो नावो. ते जोईमें गधेडान्न मनमां
 आव्यु के, छाने जोईमें सिंघ नावो. माटे ते दावी
 में सिंघनो पछवाडे भायो; ते कुकडाने शब्द स
 भळाय नहीं एटले वेगळे सयो एटले सिंघे पावो
 फरीनें तेनो गर्दन पकडो. ते वखत गधेडा मनमां
 केहेवा साम्यो के, हरे हरे! ऊं मूर्ख केवो के पो
 तानुं धंढरणुं झाणीनें आ उक्कीतुं मोत माणीनें
 काळमा होमां पडो. नहीते आ वखत झा
 रा कुटंबमां निश्चित बेठो होत.

सार

शरीरनुं सामर्थ्य न होय अनें जे, ते उक्कीतुं ले
 वानें आयके, ते पाशमां पडेके. ठेकाप्पाना अथवा
 संगतीना माहात्म्ययो एकादी वखत आपणयो कोई
 बिहीना, तेउपरयो ते आपणयो दवेके एवो निश्च

(१४७)

य करीमें तेनी संधाये एकाएकी प्रसंग पाइवा ज
ईये नहीं. तेनु अने चापणु सामर्थ्य जोईने जा
लिये.

—००*००—

वात १४४

बांदरो अने शियाळ

एक बांदरो शियाळनी प्रार्थना करीने केहेवा
लाग्यो के, तारु लांबु अने गुहा सरसुं पंछडुंके; ते
मांघी न्हानोक कडको छाने चापीश तो, ऊं झा
रो वांसी हांकीश; एटले छाने टाहाड, वायु, ए
नो उपद्रव नहीं बाध; तारी पंछडी तारे जोईये
ते करतां बत्तीके; अने तेपण तु धूळमां मेली क
रु, तो तेमांघी थोडोक छाने चापीश तो तेमां ता
ब काई अडतु मयी; अने छानां काम बघे. शियाळ
उत्तर करेके, अरे, तु पंछडी बत्तीके एम केहेके,
पण, जे हे तेके, तु समजतो मयी परु ऊं तने क

अं

(१४८)

ऊँहें के, ऊँ मरु त्थांहां सुधी क्षारी पुंछडी यम,
ज हलावीश पण एमांनो एक नाळ सरखो तहें
आपनार नथी.

सार

कैटलाक सोकोनी पासे वणुं द्रव्य होयके जे,
तेनो निर्वाह पुरो बर्दनें वणुं उगरेके, एवं के तो
पण, तेनें लोभयो एवं आवेके के, बिजुं जो मळे
तो वणुं सारं. पछी एवा बिचार बाय एडले ते
मांधी एक कोडी पण, तेनो परोपकारमां आवे
नहीं.



सात १४५

बधेडो अने कुतरो

एक दिवस बधेडामा मममां बायुं के, बिला
जती कुतरा उपर आपखो धणी घणी प्रीति करे
के, माटे ऊं पण ए कुतरानी पेडे कुडुं, मसुं, पुंछडी ह
छावुं, अने सोळामां बडीनें चेसुं, तो, धणीनो वा
हालो

हालो याज. एवो विचार करेहे एटलामां, ते
 मो धणी खेतमां गयो हमो ते आव्यो; अने घर
 मा उंवराउपर वेठोहे एटले, गधेडो तेमें साने
 आव्यो, प्रथम तो आगीमर तेणीमर कुल्कारा मा
 रवा लाग्यो; पक्षी लांबो खर काहाडीमें भुंको;
 ते जोईनें धणीनें खडखड-हसवुं आव्यो अने छोटे
 कौतुक सरखु लाग्युं. दस पांच पळे तेज कौतुक
 एनाजीव उपर आव्युं; ते गधेडो पोताना पाहला प
 गउपर उभो रहीनें, तेणे आगळना बे पन छोटे ह
 धकरीमें धणीनी छातोउपर मेहेल्वा; अने हम
 णां छातोउपर बेसनार एटलामां, तेणे वुम पाडो,
 ते सांभळीनें घरमांथी एक चाकर हाथमां धोको
 लोईनें दोडतो आव्यो; तेणे ते गधेडानें मारीमें हा
 डकां जूरां कथीं, अने गधेडाना मनमां आणि आप्पुं
 के, धणीनी कृपामो घवुं. ए सर्वची वतुं गयो.

सार

केटलाक पुरुष विलायती कुतरासरली चेष्टा
 करीनें पोताना धणीनें प्रसन्न करेहे. ते तेवा हो

थके

(१५०)

धके तेचीज बायके, पण विजो जाणे जे जे कर
तो, बंधेडानी पेटे शिक्षा घामे. शा माटे जे, मा
णस माणसनी प्रकृती तम्हे तम्हेनी होयके: तेनें आ
नंद पमाडवामा प्रकार पण जुदा जुदा होयके.

मात १४६

पशु पक्षी अनें बागोळ

एक दिवस पशु अनें पक्षी ए बेमां परस्पर
छोटी लडाईं खानी. त्वारे बागोलोये विचार क
र्या के, आपणा शरीरना घाटउपरथी आपण प
शु के पक्षी, एना लोकोनें संदेहके, ते, आज आ
पणनें कामना के. माटे आपण वेगळे रहनें शु
बायके ते आपणळची जोईये आवो, पक्षी नन
शे तेना पक्षी लेईये. एदलामां वे सैन्य एकठां
खरनें सणीज मारामारी खाली. ते जोईनें प्रव
न बागोलोये एवं जाण्युं जे, पक्षीनी जीत बघे;
माटे पक्षीनी तरफ आवोयो. अनें वेगळेथी खां

स्थो

स्थी बडाबीने जेती हतोयो के, वत्तु योहं देखी
 मां तो ते प्रमाणे करीशुं, पक्षी केटलीक वारे,
 प्रभूनें सैन्य जीत्युं एवं तेनी नजरमां आव्युं, त्वारे
 पशूनी तरफ जईनें तेमनें केहेवा मांछु के, जुयो,
 उंदरनां छो, अनें अक्षारां छो सरसां के, माटे,
 अक्षी पक्षी नयो पशुकीये, अक्षनें तमारी मंडळी
 मां ल्यो, अक्षी निरंतर तमारं कल्याण मममां द
 ष्छोशुं, अनें तमारी साखे कोई दिवस बसाड क
 रीशुं नही. पशूये ते मान्य कर्युं, पक्षी हेली ख
 हार्दमां गरहे छोटं पराक्रम करीनें पशूनें सर्व
 प्रकारे हराव्यां, पक्षी ते बागोलेन पोतानो प्राण वंचे
 अनें ज्ञातीना हाथमां जईनें आपणी फजेती न बा
 य माटे त्यांहांची नावोयो वे, ते दिवसची हजु
 झाडनी बसोलोमां, पर्वतनी सुफावोमां, पेशीनें रे
 डेके. ते हजु रात पडेके. अनें सघळां पक्षि पो
 त पोताने ठेकाखे सुवाने जायके त्वारे ते बाहेर
 नोकलेके.

(२५२)

सार

अबने मळेंनि घेतानो नातनो घात करवो एं सरसुं मोचि कर्म विजं मथी. अबने ते जे करके ते उघाडं पडे तो, तेने मरधुं पडे अबने कदाचि जीवे तो, संसारमां छो देखाडधानुं ठेकाणुं न रे हे. ते पापो जांहां जाय त्यांहां सवळा लोक तेनो तिरस्कार करे.



वात १४७

कुकडो अबने शियाळ

एक कुकडो एक उंचा झाडना डाळा उपर वे शीने छोटे शब्दे करीने बोळतो होता; स्वो के तेना शब्दोनो सवळां अरण्यमां परहो उद्यो. ते व सत एक शियाळ सावानुं मोयतो त्यांहां पासेज करतो होता, ते, ते शब्द सांभळीने ते ठेकाणे सावीने जुएके तो उंचे ठेकाणे बेटोके माटे ते

हाथ

हाथ आवे एवं दीठु नहीं; पक्षी तेनें खेतरीनें के
 ठे आणवा सार तेगे कपट चारभ्यं; झाड़नी या
 से जईनें तेनें केहेके भार्द, तनें जोईनें ऊं घणो
 राजी बघो; पण गुं कए तं जहां के, तहां आवी
 में मजयी तनें आलींगन अपातं नथी, माटे ऊं आ
 मं छुं, जे तं उतावलो हेठे आवीनें छाने आलिंग
 न आपीश, महीवार? कुकडो केहेके. शिवाळ काका
 ऊं तनें खरज कऊं छुं जे, हेठे आववुं छाने निर्भ
 य देलामं नथी; कशवित् आवुं तो ऊं बिआ को
 ईनें हाथ आवुं तो ह्यारी दशा कठिणज के नहीं?
 गिधाळ उत्तर करेहे, अरे ह्यारा प्राण, हमणाज
 यमनो अनें पक्षीनो मेळाव बघेके तेमां एवं ठ
 येके के, हवेथी कोई कोईनें मारे नहीं; अनें
 सर्वे हेते रेहेवुं, अनें जे आ ठराव भागसे तेनें
 छोटी शिक्षा यसे. आ बात सर्वत्र प्रसिद्ध बघी
 के अनें ते हजु कय आणी नथी ए छाने घणी न
 चाई खानेके हम शिवाळ बोलेके ते कुकडो का
 न देईनें सांभळतो हतो एटलामां, डोकुं बाहेर

काहाजीनें

काहाडीने कुकडो बेगळेची जोवा लाग्यो, त्वारे
 नेने शियाळ पळेके भाई, तं आटलो मम पाली
 में शं जएके ते छाने कहीश? कुकडो कंहेके ते बं
 गळे पांच सातेक पारधीनां कुतरां आवतां हाथ
 एवं छाने दीसेके; शियाळ केहेके एवं देखायके तो
 भाई तारे छारे रामराम ऊं जाऊकुं. कुकडो के
 हेके अरे काका हांहां जशो नहीं; ऊं हमणां उ
 तावळोज हेडे आवुंकुं, ऊं जाणुं कुं जे आज सघ
 लां जनावरोये सखा करीके माटे, कुतरानो तमा
 रे भो नयो; शियाळ उत्तर करेके, नारे बाबा, स
 खानी बात सघळे प्रसिद्ध थयीके खरी पण ते, ते
 कुतरात्रोने खबर थयीके के नहीं ते कोष जाणे.

सार

ठग ठगनें ठगनें घणो दानंद पामे; धूर्तबुं बोल
 वं चंदनना सरखुं शीतळ, पण, तेमा छैयार्सा पा
 ली होयके माटे, कांई कारणवना घणुंज ममता
 नुं भापण नजरमां आवे त्यांहां घण्णे सावधानी
 राखवी. जे कोई पोताने हाहापणे करीने एवा

धूर्तनं

ધૂત્તન માયા પાશં ચોલ્લોને તેના હાથમાં આવે
નહીં, અને તેને ઉઝડો ધિતામાં ઘાલે તે પુરુષને
હોટો ખતુર કહીયે.



શ્લોક ૧૪૮

કળવી અને તેના હોકરા

કોઈ એક કળવી મરવા પડ્યો હતો તેના મન
માં આવ્યું, જે, હોં શાજ સુધી ધંધો કર્યો છે તેવો
જ દ્વારો પહોંચીને નિરંતર હોકરાને ચલાવે.
પછી તેણે આ યુક્તિ કરી, સઘળા હોકરાઓને
લાટલાપાસે બોલાવીને કહ્યું, જે, હોકરાઓ દ્વા
રં જે કોઈ છે તે આ હેતર, અને વાડી, જે એના
ધણી અને સઘળા મઢીને કોજ, વિષ્ટુ જે કોઈ દ્વા
રં, મુંદનાં હશે તે હેતરમાં કહીંક એક હાથ નો
પે હાટેલું હશે, માટે તે હેતર તમે વિચા કોઈ
ના હાથમાં જવા દેશો નહીંહો. તે સાંભળીને હો
કરાઓએ નિશ્ચય કર્યો જે હોસાથે કોઈક કામ છે

તરનાં

तेरमां दाडी मेहेल्लु हे, पल्ली, ते कणवी मुवां व
ही तेमणे ते खेतर खेडवाने मणे हाय हाय भर
खोदी जायुं; तेमां तेमनें यांपण तो जडो नही,
पण भुईं सारी खेडाची, तेथी ते खेतरमां बावेल्ला
दाणा दशनणा आया अने तेमनें घणा द्रव्यनो ला
भ जयो.

सार

शरीरे साजार्द, अने उद्योग, जहाकि त्याहां द्रव्य
लाभ अवश्य बाधज, उद्योगमां उद्योग खेती समा
न विजो नही, ते उद्योग जे पोतावे हावे करे
हे तेमनां शरीर कुंटां रेहेके. तेथी एकती रोग
जाय नही अने लाभ जाय. विजु आ तसार न
लाववाने जे जे वस्तूचो जोर्डचे तेनी, खोड नही.
ए माडे खेती चयवा बाडी बाहावे मुखे छोटे
हर्षे करतो; तेमां जे मेहेमत करी ते निचे व्यर्थ
जाय नही; इना लाभमां नममां काई भोको न
ही; एवो आ एकत्र बंधो हे, एमां साहित्येनें
जोर वण चोरो सकतो नही.

वात

(२५७)

वात १४६

घोडा खने सिंह

एक ताजा बहेराने जोरने सिहने घणी तृष्णा
थयी जे, एना मासना एक कडको जो सावाने
मळे तो सह बाय. पकी ते बहेराने हाथमां
आणवा सार सिंहे बैयना बेश लीधो. खने सव
ळां मशूने जणावुं के, छों देगे देश फरीने माना
अकारनां आंधधोना खने बनस्पतीयोना अनुभव
लीधाके. छारे हाथे पशूना एके गेग सारो घवा
बनो रह्यो नथी. बहेरे तेमां पगलां थोळखीने, स
नमां विचार कर्था के ऊपण ठग बिया करीने
एने ठग. पकी ते बहेरो भोळापणुं देखाडीने सिं
हनीपासे लंगडतो लंगडतो. आथो खने केहेवा ला
ग्यो के, बैयराज छारे पाइले पने कांटो भाख्यो
के, तेथो ऊं घणो दुःखी हूँ, माटे कपा करीने त
मे कांदै उपाय करो. सिंह बोख्यो नेटा, पासे
आव. छने तारो पन जोवादे पकी बहेरे सिहनी

पासे

(२५८)

पासे जईमें पाइला पगनी खात मारी तेखे करी.
नें सिंहनें अइबं फुटी नयुं अपनें बुझो पाइतो रह्यो.
बह्यो चारे पगे कुदीनें मारी गयो, जमें मनमां
घणो खुशी थयो के, छो भलो एनें ठग्योके, जे झा
में ठगनार रह्यो.

सार

ठगनें ठगीमें घणु समाधान बायके. यद्यपि कच
ठे करबं, ठगबं, ए सर्वथा मोघन कर्म के. छोटा
झिनें योख्य मखी, तो एण भाषणमें ठगवाने जे झा
झो तेनी बागळ कपडे करीनें तेना मनोरथ सि
इ न बधा देबो ए नीतिजके.



बात १५०

सिंह रींक अपने पिछाळ

एक हरण्यमां सिंह अपने रींक ए बे अणा बे त
एकही दोहीनें एक हरण्यमा शवबागळ एक का
लेज खाबो पोहोता पछी तेमां ते बेनी बोलाबा

धी

सी बर्देनें घणोवार सुधी बुद्ध बयु. त्वारे बे ज
 ना खायल बर्देनें चाकीनें भुईं उपर पछा; एद
 लामां अकस्मात् ते रस्ते एक शियाळ जतो हतो,
 ते तेमनी अवस्था जोईनें निर्भव-बर्देनें ते बेनी व
 घमांघी हरणनें लेईनें गयो. ते बे लडबर्दया ए
 ण ते जाताज रछा, ग्रामाटे के, शरीरमां शक्ति
 नही, ते माटे शियाळनें काई प्रतिबंध करी स
 क्या नहीं. ते वस्तु बे जण्णोमें विचार बयो,
 ते, पोत पोताना मनमां केहेके, अरे, ज्यो जा
 फळ अंधारा बडवानुं, ते लुखो अंधारभक्ष्य ले
 ईनें चाल्यो, इमें अछो एकमेकनें एवं कर्तुं हे के,
 तेना हायमांघी पडाववानो पण शक्ति राखी नवी.

कार

एकाही वस्तुसार लडोमें लोक अदालतमां न्या
 य करवा जायके. त्यांहां मकीलनें पावेके. अ
 बे लडोमें चाके, अमें तेमनें लाल जात. न्याय ह
 अन्द्नेो अर्थ विचार कर्वाची केवळ नीतीज. पण
 तेज न्याय समुप्यमा दुःखनं कारण बयोके. जा

न्यायनें

न्यायमें भहंसे केटलाक भोल नागता दीठा है, के
 ठलाक घरबार बेचाने देवु करीने पोताना आत्मा
 ने संकटनां मांखेहे; मनमां एवं के, आपणी ब
 होवर विजो यण बिपत्तीमां पड़े तो सार एवा
 सोक पैसो खरचोने बिपत्तीमां पड़ेहे; ते करतां
 चार भला माणसने तेडीने तेमनी पासे तंटो कां
 में चुकवावीये. कह्युंके के, जो माणस नीतीवाजो
 सने भक्तिमान् एवा होय तो, तेने सख्खी देखाइ
 नारानुं शुं कामके; थोड़ु खानाराने बैद्यनुं काम
 पडनार नहीं; जे न्याय मार्गे चालेहे सने प्रामा
 णिक यण केहेवरावेहे तेमने परस्परमां कांई
 बांधो पड़े तो, ते बांधो पोताने मेळे एकादा
 चावितनी उपर मांखीने ते कहे ते सांभले तो ते
 ने बदालतमा बकीलनुं काम पडनार नहीं. चा
 वितनी यण जहां तंटो चुके नहीं एवी एकादी
 बातके तो, जे धर्मशास्त्र जाणेके, भलो सने जे डा
 हापणमां प्रसिद्धके, एवा एकादामें ते बात सम
 जानीने तेना कछ्हा प्रमाणे चाले ए योग्यके. ते

• सने

(२६१)

मनें पण जे ठेकाणे समजण पडे महीं एवी संदेह
युक्त बात होय त्यांहां तोडरोड काढाडीनें मांडे
मांड तंटो घुकव्यामां सांके.



बात १५९

उंदरनी सभा

एक बखत सुषळा उंदर पोतानी मंडळी मेळ
बोनें विचार करवा लाग्या के, बलाडीने आपण
में भो घणोळे माटे, तेचो आपणो जीव राखवा
नो सारी बुक्ति शी करवी? एवा विचारमां माना
प्रकारनी कल्पनाचो नोकळीयो अनें घणी हा ना
बयी, ते बखत एक जवान उंदर आगळ आवीनें
तेणे घणुं पांडित्य कर्युं केलीवारे एसिद्ध कर्युं के
एमां एकज युक्तिके जे बलाडीनें गळे घटडो बां
धवी एटले ते लगार हाले के आपण सावध च
ईनें पोतपोताना दरमां माशी जडंचे, ते सांभळी

ने

नें सघळा उंदरोये बाहवाः सारी बुक्ति काहाडी
 एम कहनें मायां हलायां, अनें तेमांथी केटला
 क उंदर केहेवा लाग्या के, आ उंदरमें सर्वनी प
 सेथी एक आवरुपच आपवं योग्यहे, त्यांहां एक
 दाहायो घरडो उंदर हतो ते ते सघळुं सांभळो
 नें उभो यदनें केहेके भाईयो, कल्पना तो घणी
 सारी काहाडीहे, अनें तेमो काहाडनार पण घणो
 दाहायोहे खरो, एमां कांई संदेह नथी, पण ए
 कल्पना करनारना मुखकी द्वारे एटलुं हजु स
 मजबुं जोईयेहीये जे, ते बलाडीनें बळ घटडी क
 म बांधवी, अनें कियो उंदर ते काम करणे एट
 लुं जं जाणुं त्यांहां सुधी तमे तेनें आवरुपच आ
 पयो नही. ते सांभळोनें सघळा उंदर ते जवान
 उंदरनें हया.

सार

झोये बोसकनें मो घणी बातो सेहेलीयोके प
 ण ते करवा जांहीये त्वारे खबर पडे के करवी

घणी

घणी कठणके ए नाटे जे पुनव एकादि धुक्ति के
हेवाने आगळ बायके पण तेजे ते कम करोये ए
सुनजावी देखाद्याविना तेनें सेवाशी आपोये महीं.



बात १५२

सिंह गंधेडो अने शियाळ

एक वखत सिंह गंधेडो अने शियाळ, ए वणें
मो करार थयो के, आपण मृगया रमया जईये
अने जे मळे ते वेडेची लईये, पक्षी तेमसे एक पु
ष्ट सावर मार्या; तेना भाग करवाने सिंहे गंधेडा
में कह्यां, तेउपरची गंधेडे वण भाग बरोबर कर
तांवे. राज सिंहेनें रीस दडीनें तेणे एक क्षणवा
रूमां गंधेडामां आंतरडां बाहेर काहाड्यां; पक्षी
सिंहे ते काम शियाळनें कह्यां त्याने, शियाळ डा
हायेज ते तेमानो एक न्हानो कडको तोडी ले
ईनें सिंहेनें केहेके राजाधिराज, द्यारे तो आट

लुं घणुंके, अने रह्युं ते सघळुं तसे थंगीकार का
 रो. ते जोईने सिद्ध घणो प्रसन्न बयो अने तेने
 बुद्धेके अरे तने आ राजनीति कोणे शीलवी. ते
 नेलो महा राज खरुज पुछ्यो तो आ बातभां तो
 द्वारो गुरु आ सामोके ते गंधेडोज.

सार

जे पुरुष मन देईने शीखांमण. लेवा मांडशे ते
 ने लोकोना अचरणनां फळ जोईने घणी बातो
 समजावामां आवणे. पूर्वकाळनां माणसोनी वा
 तो अने हमणांजे यायके ते वेळ मनन कथाची
 आपणी चालमां सर्व प्रकारनां दृष्टांत मळसे; अ
 ने तेमांची घणुं सारं बणे. विजो कोई पुरमां
 तणावो होय ते जोईने, तेने तणावुं आपणने ब
 आव करेके. एम विजाने देश बागी जोईने आप
 नां संभाळीने चाळीयेकोणे. माटे जे पुरुष एवा प
 दार्थमात्रमांथि बुणरोष लेके तेने कोई बहत का
 म चालवुं केवुं करवुं आपणाची क्षोडो बयवा व

रावरीना

(२६५)

रोवरीनो अथवा आपणो सेठेनो कोई होय तो ते
मासाथे कम बोलवु कम चालवु एमां कोई स
देह पडे नहीं.



बात १५३

घरडो सिंह

कोई एक घरडो सिंह मरवा पड्यो ते सांभळो
में पूर्व सिंहे जेनें जेनें दुःख दीधुं हतुं ते सवळां
पण पोतपोतानुं घेर खेवानें तैनी पासो जाव्यां;
भंडे पोतानी डाहाड प्रशीनें तेना पेठमां घोची,
जेवी, विजळीनी झळो, बळदे तेनें शींगडां मारीनें
लोही काहावुं. ते जोईनें मधेडे पण खामळ ज
ईनें बाहला पण उपाडीनें सिंहना छोडाउपर ला
तो मरीयो, त्वारे ते बजारो सिंह प्राण मुकती
बसत देख्यो, चरे परमेस्वर या मुं दुःख, हरे क

रा

(१६६)

ही जेने धराकसी समनोपण तिरस्कार सज्जन
ही ते ऊ, आज आया मोचना हाथमा मार स
ऊहु ते करतां छाने हजार वृत्तुन दुःख कठण ला
गत नवी.

सार

आपणमें प्राणिमूर्ख माने जेने दुःख न दे एवी
इहा जेने होय तेणे लोकानु सार करवु. अमर्य
कोई कोईने मानत नवी, ए माटे जेने छोटपण
मेळववु होय, जेने ते वंशपरंपरासुधी चलाव
वु होय, तो तेणे सन्मार्गे चालवु, वही तेने को
ईपण दुःखदायक बनार नही; जेने संकटनी बल
न तेने बेरी नजरे पडे नही. जाहां जूए त्याहां स
हाय करनारा जेने मित्रज नजरे पडथे.



वात १५४

डोसो जेने जेनां होकरा

एके डोसोने पांच होकरा हतां, ते मांहेमां
डे छडतां माटे बापे तेमने धनकाथां, सामादि

भेदे

भेदे करानेपण समजायां, पण ते सचळु व्यर्थ न
 थुं. त्वारे छेलीबारे तेणे आ युक्ति करी जे, ते
 होकराने पोताने सामे बोलावोनें एक लाकडी
 घानी भारी अणावीं; अनें एक एक होकराने क
 छुं के तारानां जेटलुं जोर होय तेटलुं करीनें
 आ भारी अनें भागी आप. पक्षी तेमणे सचळी
 ये एके एके वसुं जोर करुं पण भारीमांजी ला
 कडीयो. एक एकमे आशये इतोयो ते कोर्दो भ
 गार्दो नही. पक्षी डोसे तेज भारी होडीनांखी
 में ते मांहेनो एक एक लाकडी एक एकना हा
 थमां आपी, अनें प्रथमनो पेठे भागवानुं कछुं, त्वा
 रे तेमणे ते सचळी लाकडीयो एक क्षणमां भागी
 नांखीयो. पक्षी जाय तेमनें केहेके होकरांयो आ
 जायुंनां एकानुं जोर? तमे एमज खेहे करीनें ए
 क एकनो आशय राखीनें रेहेयो तो, तमनें उप
 द्रव करवामें इद्रनुं पण सामर्थ्य चालनार नही,
 अनें तेज खेहनो आशय एकवार हुट्यो तो पक्षी
 कोर्द एक रांडोरांड आवागेनं तमनें एक क्षणमां
 उपद्रव करी सकये.

सार

સાર

સર્વદા આપણું સારું થાય એવું જો મનમાં હોય તો માણસોએ ચરસરસ એકો, અને ભાઈબંધાઈ, એ ઉપર નજર રાખવી. જે રાજ્યમાં અથવા કુટુંબમાં જટલો એકો થોડો હોય, અને ટુકડીયો થયે જાય, તે રાજ્ય અને કુટુંબ ઘણું નબળું અને શૂંચે જીતવા યોગ્ય થાયકે કહાયું છે. જે, માંદો માંદો સ્વર્ગ પોતાના માણસને કારણે. એવાટે રાજ્યમાં, નાતમાં, કુટુંબમાં, મંડળીમાં, અથવા જાહમાં જાહમાં ચાર એકઠા થઈને એકાદું કામ કરવા નાંડીયે તેમાં, સ્વર્ગ, દેવ, પેટો એટલે જાણવું જે વિનાશ કાલ પાસેજ આવે. જે એક માના પેટમાંથી મોકલ્યા તેમણે તો એક એકે સોહ રાખે, એક એકનું સારું કરવું, એ તો સેદેજ જોઈયે. કોઈના કહ્યાથી કરવું એવું નથી. દુઃખમાં ભાગીયો હોય એટલે દુઃખ હલકું થાયકે, અને સુખ થાયકે. એ માટે જેને જગતમાં મિત્ર નથી અથવા કે પળ થોડાકે તો તે નિત્ય વિદીતો રહે. શત્રુએ તેના

મનમાં

(२६८)

समझों पातानी निर्वलतानी चिंता होयके, अने ते
मा. मनमां एवं आवेके जे, हर कोईनें हाथे द्वा
रो नाश थयो सकये.



बात १५५

डोशी अने तेनी लुंडोयो

एक डोशीनी लुंडोयो हतोयो तेजमें ते नित्ये कु
कडां बोले ते बखत उठाडोमें कामे बलमाडे. प
ह्नी कोई एक दिवस ते लुंडोयोये विचार कर्यो
के आ दुष्ट कुकडो आपणी मिठी उब मेहेलावे
के, माटे, एनें मारी नांखीये एटले आपणनें डोशी
मा उपद्रव नहीं जाय. मक्की तेप्रमाणे कथ्ये.
अनें मनमां धार्युं जे, हवे अजुवाळुं घतासुधी डो
शी आपणनें उठाडमारी नखी. डोशीये ते सचळुं
जाण्यं, पक्की लुंडोयोमें शिक्षा बवासार डोशी तेम
में ते दिवसची मध्य राते उठाडवा लागी.

सार

(१७०)

सार

काई एक काम करता पेहेलां तेना परिणाम
नो विचार करबो: नही तो सुखने माटे जे उद्यो
न करीये ते दुःखनु डेकाणुं थाय.



वात १५६

मोर अने कागडो

आपणाउपर राजा करबो, माटे सर्व पक्षी ए
क दिवस, एकठां बयां हनां. तेमां मोरे आगळ
आबोने पोतानां सोनेरी पीछां उंचां करीने तेनो
शोभा जोवामां सर्वनां नेत्र लगाव्यां, ते बलत घ
णाक पक्षीयोये तेनें राजा करवाने हा कह्यो; अ
ने तेनां घगां बलाण करीने समोवधी बांखो उ
चोवो करीयो. आगळ एवं चणवार करीने तेनें रा
ज्यपदवी उपर आपमार ते बलत, कागडो आग
ळ आबोने बोलेके. राजाधिराज तमारा दारुना
दासने एक शंका बघीके ते जो आपणी आज्ञा बा
ध तो बोलुं. मोर केहे सुखे बोल भारी. काग

दो

हो कंठैके महाराज, अच्छे तमने राजा करीने अ
 छारा प्राण तमारे स्वाधीन कर्छा; हवे अच्छारे स
 घळी बातनो भरसो तमाराउपर के, पण, जो क
 दाशने गरुड, गिध, अथवा बाज, ए अच्छारे गरीब
 नो घात करवा आवणे, तो तने केथीरीतीये ते
 में जीवशो? तेटलुं कहींने अच्छारा भयनं निवार
 ण करो. ए प्रश्न सर्व मंडळीये सांभळतां बातज
 तेमणे विचार करीने कहां के बात खरी; आपणुं
 रक्षण आ माजुक शरीरवाळाची बवानुं नथी;
 माटे आ राजा उपयोगो नथी.

सार

कोई मंडळीये पोवानो मुख्य करवो तो, तेनी
 उपरनो शोभा जोईने भुलीने करवो महीं. सर्वन
 सह करवामां जेना गुण होय, अने सामर्थ्य हो
 य, अने जे शाहाणे, चतुर, होय तेने करवो, तो
 तेने लोक करता नथी अने मरी अमंताई उपर
 मजर राखीमें मूर्खनं अनुसरण करेके; माटेअ ते
 मांघी चणोक्त बातोनो बनाव बायके,

शात

(१७२)

बात १५७

पोपट खने पांजरुं

कोई एक छोटा पुरुषमीपासे पोपट होता ते
में तेणे नित्य सारा पदार्थ खवरावनें एक घणा
मूलना पांजरासां पाव्यो, ते पांजरुं तेणे बान
सां एक झाडनें हेठे बारस पाहाणना चोतरो क
रोनें तेउपर मेहेल्युं हत; मनसां एवं जे, ए पोप
ट उन्हाळासां उघाडे ठेकाणे वा खाईनें सुख पा
मे, ते घरधणी अथवा घरनां माणस ते पोपटनी
पासे जाय त्यारे तेनी साथे सीढे शब्दे बोले, ते
नां पोळां विखराय ते घरधणीबाणी पोमानो को
मळ हाथ तेनीउपर फेरबांनें ठोक करे, एवा घ
णा सुखसां रेहेतो तोपण ते पोपट नित्य मनसां
विमासतो हतो के, हे परमेश्वर विजां पक्षि घर
ण्यां कुटां रहीं झाडांनां डाळांउपर खरुंद वे
सेके, ते छोटां भाग्यवान् जं तेमनी पेठे हुटो का
रे फरीश? पक्षी कोई एक दिवस चाकरनें हाचे

पांजरांनुं

पांजरानु, बारणु उघाड़ रह्यो ते ते पोपठनें सान
 पांथो एटले पांजरामांथी नीकळनें पासेना अर
 ण्यमां उडी नयो; मनमां एवुं के बाकीनुं बायुष्य त्यां
 हां सुखे करीनें पुरुं करीश, पण अरण्यमां जर्दनें
 मानाप्रकारना नवा नवा संकटमां मात्र पड्यो.
 बचारो ते प्रथम ऊं दुःखी हूं एवुं मनमां मात्र
 जाणतो हतो, ते हवे खरात्र दुःखमां पड्यो. बिजां
 पक्षि तेनें चांचो मारवा लाग्यां; तेनी जे मनुष्य
 बाणो सांभळीनें लोकोनें संतोष चतो हतो, तेज
 बाणी. सांभळीनें पक्षोजात तेनें वस्तुं दुःख देवा ला
 ग्या, सारुं सारुं अन्न खातो तेनें हवे उद्योग करी
 नें घेड भरवुं, तेनो तो, तेनें अभ्यास नहीं माटे
 भुखे मरवा लाग्यो. वा वरसांतना उपद्रवमांथी
 रक्षण धाय एवुं घर नहीं. बरसाते करीनें पां
 लो पल्लळे, चमे टाहाडें ठुठवे, ए प्रकारनुं दुःख
 तेना शरीरमी प्रकृती नाजूक माटे तेथी सेहेबायुं
 नहीं. छेलीवारे ते दुःख पीमी पामीनें मरती व
 क्षत पोताना मनमां केहेवा लाग्यो, अरे बचारा

पोपठ,

घोपट, जो करीनें एक बार ते पांजह नमें, मले
तो तू बाहेर फरवानी बात कोई दिवस न करे.
पण ते हने क्यांथी मले? एम कहीनें तणे खांखो
नीचीयो.

सार

सर्व बातो अमकूल सते जेनें स्वतंत्रपणे भटक
वानुं मन पाय तेणे या बातमांथी शिक्षा लेवी
के, जो स्वतंत्रपणं विपत्तीये युक्तके तो ते शा काम
मं. नाबडीयावना नाब समुद्रमां नभतुं मथो,
सेनाधिपवना सेना नभती मथी. तेमज खाद्यो अ
अवा होकरां जेनें पोतानो मले नभवानुं सामर्थ्य
मथी तेणे ऊं पराधोनकुं एवं जाणीनें खेद खाणवो
महीं. न होय ते दुःख पेदा करीनें पोताना या
आनें संकटमां कां नांखाये?



बात १५८

चकली अनें निजां पक्षी

एक कणवो खेतरमां भांडा बावतो हतो ते च
कलीना ध्यानमां हतुं, ते निजां पक्षीने कडके, अरे,
तसे

तने सुघळां बनकूळ बाधो तो आपण सर्व मळी
 में या बी छेतरांमें एना नाश करीये; शमाटे जे
 भींहीनां दोरडां बायके, पारधी तेनी आळ करे
 हे, तेची आपणी जातीना नाश बायके ते तेन वो
 सब कोई बक्षीये गणनायुं महीं; पक्षी भींहीना श
 णना फुट्ता, त्वारे पण तेही तेमनें कही, जुषो,
 जो आपण सुघळां या छेतरां तुडी पडोये तो,
 हजु उपाय के ते सांभळीनें ते सुघळांये तेन उप
 हास्य कर्युं, जनें केहेवा लाग्वा के या मर्से जनें
 आगळनु भावी मुजेके एवं आपणमें अणवेके के
 शु? पक्षी पोतानु कही व्यर्थ नयुं जाणीमें बकलीये
 विचार करी के, यावा अविचारीना समानां रेहे
 नु हवे योग्य नवी, एवं कहीनें तेने ते दिवसची
 बक्षीना समानम मुको जनें माणसेमां वास करी.

सार

आपण माणस होये नाटे जेमां सुघळां माणसे
 न साह बास ते करवुं, ए आपणो लाभाधिक ब
 जेके, तेमांपण आपणा ओळखीता, सवा, संबधी,

इतलुं

(२७६)

एकमे साहं करवुं एतो आवश्यक छे; विष्णु काँदें
आपणची न चाय तो सारी बुद्धि पण आपोये; ए
का बार न सांभळे तो बे बार, धंण बार, कहाँ जा
ईये; एटले आपणमें जेटलुं घटतुं हुतुं तेटलुं का
पणे कर्षुं; पछी ते न मानोमें काँई एकादा बंधन
मां आवे तो ते आधो; तेनो आपणे साधे दावन
हीं. पछी एवा सावित्रीकीनो संन करीमें तेना
साधे आपण आपणो नाश करीये ते करतां तेन
तो संगज मेहेलीये ए पुतळे; शांमाटे जे, ते का
प्रसुं कहाँ सांभळता नथो माटे तेमनुं खोटुं कर
तुं ए जेम डोक नहीं, तेन तेमनो संन करीमें ते
नमी साधे आपण बुडीये ए पण योग्य नहीं.



वात १५८

जवान पुरुष जेने बलाडी

कोइ एक जवान पुरुष एक बलाडीनो साधे नि
य रमतो; ते घणो सुंदर छती, तेउपर ते पुरुष
नू हेत घणो बसुं; ते एटलुं जे, केलीबारे तेनोउष

र संकांन चईनें रात दाहाडे झरवा लाग्यो. वही
 ते दुःख मडाडवासाव तेणे रति देवीनी चारधना
 करी; एटले देवीचे छावा करीनें ते वखाडीनी स्व
 रूपवती श्री करी. तेनें जोईनें ते वरवनेा सर्व
 प्रह्लांडमां माय महीं. वही तेणे तेज दिवसे ते
 भीसाचे सप्त कर्युं. राते वेजणां सुवाने चोरछी
 मां वयां. त्यांहां, तेणीये कहींक उंदरनी प्रव्द सां
 भव्यो; ते सांभळतांज ते वल्लत पोताना वरनें सु
 कीनें उंदरनी पळवाडे दोडी; ते जोईनें. रतीनें. सी.
 व वही के, या छारो जळव, जेनें छोटा छोटा
 छोक नान देहे, तेनें हणीये चनादर कथी मा
 डे, ए सीवहे छी एनें माणस करी ते वाडेरयो ना
 व वही वण संतःकरणची वलाडीजहे साडे एनी
 पाहती अनें कति ए अरस्वरस सळतां नवी ते व
 छे एवं करवुं. एन कहीनें देवीचे तेनें जेवी व
 ती तेवी करी.

चार

जापसोनी सारी चनें छोटी रोतीनु कारण मि
 ला चनें संगति एहे चरां, पण चणु करीनें तेनें
 तेनो समावण कारण हे. जो समावणोत्र पुष्प
 बारो होय तो, ते पुणनें रथाराव, पण ते मुकावी
 नें मरो मुण साणनो ए चणु कटिणहे. जो समा
 व हरिद्रोहे चनें तेनीपासे करोड दयेधानो सना
 हे तोपण, ते पोताना लवळा अवहारमं हरि
 द्रोणां चिन्हत्र देखाडये. प्रकतीचे तेनें हरिद्र भो
 ववसासार पेदा कर्याहे तेनो चढहे हाव साख्यो,
 तोपण तेनो समावण जाय नहीं. समावे क
 रोनें जे मूर्खहे तेनें द्रव्यादि संपत्तीची आहाणो क
 रो सकतो नवी. समावची मूर्खहे तेनें द्रव्यनी
 मरज साद होक मजो, पण ते पुछे छोटी पा
 व नहीं.

(१७८)

पात १६०

जधनाख्यो नाख्यो अने भनरी

कोटली एक नाख्यो जधनाख्योना जधपडाना
आनीमें कोहेवा आनीयो जे, आ जध आझाव हे,
पही वे अणीयोने सरसरस आहार बर्ने वे पक्ष
नीयो, भनरीपासे न्याय कराना गयो. त्यारे
भनरीचे कष्टां जो तने अदायतनी रीते बाद क
रयो तो तनमें सरस घणु यशे; अने फडचो पण
वेहेलो यशे नही, माटे, तने उभयतां झारां जे
हीको, अ तमाव सार इच्छुकुं, माटे तनमें कड
कुं जे तने वे मळीने अने तमारी इकीनत खली
आपो; एटलो अ तमाव, अळु ममनां आणीने जे
नीति हसे ते कहीश. ते सांभळीने वे पक्षनीये
रात्री बघीयो; अने इकीनत खली आपी. पही ते
भनरीचे तेजनी आहारनो बाद ममनां आणीने ते
नने कष्टां सांभळोको, तने वे बरोबर अणाओको
माटे, सरा कोठानो न्याय करवा अने खगार क

दिण

दिण दीसेके माटे, माख्यो तमे एवं करों के एक
खाली ठेकाणुं स्यो, अने मधमाख्यो एक तमे व
ण स्यो, अने त्यांहां मध कीमें वे जणोयो द्या
रो पासे लावो, पक्षी ऊं ते वे मधमो खाद रंग
जोईमें आ मधपूडानुं मध कोमुं ते कहीण मध
माख्योये ते बातनी तरतज हा कही अने माख्यो
ये आंऊं करवा मांयां ते जोईमें ममरीये माख्यो
ने कहां जे तने जुठोयोको अने मध माख्यो सा
घोयोके.

सार

जे जुठोके ते पोतानी जुठार्द जे ठेकाणे उका
ही पडे त्यांहां आहुं आवळुं वणुं बोलीमें कजोयो
लावो चलावीमें भला माणसनें समथो दुःखी करे.
ममर्मा एवं के कजोयो चुकवनारनी मजर चुकी
ने आपणं काम ययं, तो ययं, न ययं तो नहीं.
अने जे साचोके ते कशी बातमां बाकुं बोले नहीं.

बात

(२२१)

बात १६३

घोर अने कुकडो

एक घरमां राते घोर पेठा त्याहां तेमनें चो
रवा जेबुं कांई मळ्युं नही, एक कुकडो माच ज
छो, तेनें खेईनें मारवा मांडो ते बखते कुकडे
तेमनी घणी छुती करी जे जूथो ऊं लोकोनें के
टलो. कामनो हुं जे, ऊं परोडमां बोलीनें सर्व
लोकोनें पोत पोतानें कामे बळगाडुं, माटे तने
छाने मारथो नही. घोर बोल्या, अरे लुया, एट
ला माटेज अछे तातं गळुं कापनार जे, तुं बो
लीनें लोकोनें सावधान करछ तेंथो अछाराथी चो
री सुखे थती नथी.

सार

जे सुखे करीनें भला लोक आपणनें सारा के
हेके, तेज आपणो गुण, दुष्ट लोकोनें छोडे दुर्गु
ण बायके.

बात

बलाडो जेमें जमवाने बोलाव्यो हतो

एक यहखे एक छोटा साणसनें जनवाने ते
 खो तेने माटे छोटा समारंभ कर्यो ते, ते जोईने
 प्ररनो बलाडो मनमां विचार करवा लाव्यो के,
 ऊं घणा दिवस यथा भार्दबंधनें जमवा तेहनार ह
 तो ते, आज सारे अवसर मख्योके, पक्षी तेणेप
 ण पोताना रुछनिचनें मोतक दीधुं, पक्षी ते नि
 च त्यांहां आव्यो अनें पेहेलो रसोई आगळ गयो,
 त्यांहां कै कै जातना पदार्थ रंभाता हता ते जोई
 ने मनमां केहेके, या पदार्थ सहज मळवा दुर्लभ,
 पण भार्दबंधना योग्यो आज हाने मळगे, ते हवे
 ऊं एवं खाईश जे, खाठ दाहाडानी निरांत करो
 श. एवो मनसुनो करीनें पुरडी हलावेके अनें
 ह्यो मळमळावेके एवामां तेनें एक सांभारो दा
 ठो, तेणे हळुवे रहीनें पछवाडेची जावीनें तनी
 भावली वे टांगडोयो झालीनें तेनें लडकांनिं बापे
 र लांछो दीधो; त्यांहां हेडे पसर हता तेउपर च

पडाईनें

(२८३)

बडाईने बसाडामे सबळुं शरीर टोचार्द नयुं, ते
 पारडतो चारडतो त्यांहांथी मासवा लाग्यो तेनें
 विजां बलडां मथ्यां तेमणे पुणुं शरे तमनें आज
 मिजमानीमां तेच्या हता तेमांशा समाचार के?
 ते बैल्यो ते समाचारनुं शुं वर्णनकर एवी मिज
 मानीं जन्मांतरमां पण झेनें घयी नहोती पण ते
 मां एक शुं बयुंजे लागारेक कसुबो बत्तो लीधा
 मां पाव्यो तेनुं घेन द्युं तेची ऊं ते घरमांडेथी
 बाहेर कस नीसरो पाव्यो तेनी शुद्धी झेनें रहो
 नही.

भार

घरभणीना चोळसांणवना झेनें तेणे तेझावि
 ना कमथा विजामे विचासे कहीं जवुं ते या बला
 डानी पेढे खेदनुं ठेकाणुं घाय, त्यांहां अत्रतिछा
 घाय, ते पक्षी झोटी युक्तीये करीनें डांकवी पडे.

रात

(१८४)

पात १६३

रबारी बेपारी ययो हतो

एक रबारी एक त्रिस समुद्रने कांठे बकरां
घारतो हतो, ते बकरांने चारे बळगाडीने पोते
एक शिळाउपर ठाहाडे, चने धोमो, सुंदर वा
सावा बेढो ते बळत वा बंध ययो एटले समुद्रने
याणि हालतुं बंध थय, ते जार्दने तेने आमंद थ
यो; चने एवो विचार थयो जे, ऊं बेपारी पाउं,
आ चहीयां बकरां घारतो नकामो बेयो रऊं
ऊं, तेकरतां एक म्हानुं सरखुं नावडुं वेचायो ले
ईने दरोयो खेडीश, तो केटलो सुखी थईश. दे
शावर मासु सोई जाऊ तो झुने केटलो लाभ था
य, इत्य चने छोटाई मेलववानो आ रंतो के
वो सारोके. एवो विचार करीने घेर जर्दने पो
मानां सघळां बकरां वेच्यां, त्रिजुं जे घरमां हतुं
ते सघळुं बेचीने तेनुं एक नाव लीधुं, तेमां माल च
भें उतारु माणस भरीने नाव हाकीने लगार था

थो

धो पधो, एटलानां बाइलां यथां, छोटा छोटा
 मौजा आवना लाग्या, दिशाओ खावा धाईयो, ना
 मंड बुडवा लाग्युं; ते जोईने भार जोको करवा
 सोरु माल सवळो पाणोनां नांख्यो एटले तरतज
 नावडुं वायरे धकेलाईने एक पथराये अथडाथं,
 ते, तेना कडके कडका अईगया, नावडुं तथा उता
 र सवळां बुड्यां, रमारीमात्र बुडतां बुडतां रह्यो
 ते मद्दाकष्टे करीने तोरे प्याओ. पक्षी तेणे जेने
 बकरां वेंचाथी आष्यां हतां तेने घेर चाकर रेहे
 वाने गयो, तेणे तेने तेज बकरां चारवाने राख्यो;
 त्वारे ते फरीथी एक दिवस ते समुद्रने कांडे ते
 ज शिळाउपर बेढो हतो ते समुद्रने पूर्ववत् निस्र
 ल जोईने कोहेके, अरे उग, हवे फरीथी तुं छाने
 ललचावनने जअक ते हवे तारो अम मिथ्याके,
 ऊं तने जोईने एक वार भुल्यो ते अत्यंत दरिद्रो
 थयोकुं अने. एक वार अनभव लोधो तेणे छाने शा
 हाणे कथी माटे ऊं हवे कोई दिवस तारो वि
 श्रांत करनार नही.

(२८६)

सार

बेचाथी शाहाणपण सारुं, एवं केहेवन छे ए
माटे, जे पुरुष एक बार पोते दुःख भोगवोंने जे ब
स्तूनी अनभव लईने टाहाडो थयो, ते फरीथी ते
बस्तूनी इच्छा करतो नथो. पोतामी जे सबस्थाछे
तेमांज प्रसन्न रहेके.

बात २६४

जवान कोकरो अने सिद्धनुं विच

एक डोसो कोट्याधीश हतो, तेनें एकज एक
कोकरो हतो, तेउपर तेनुं अत्यंत हेत हतुं, एवा
ने कोकराने प्रकार रसवानुं व्यसन लाग्युं, ते जो
ईने डोसो केहेके, अरे परमेश्वर, ह्यारा कोकरा
नी गत केवी थये? एम नित्य ते चिंतां करे; एक
शिवस राते तेनें शमण आय जे, बनसां कोकरा
नें सिद्धे मारीनांछो के, पछो तेनें एवी चिंता थयो

जे

जे रस्से ओ ए शमणं खहं बनं; ए बिहोके शमणं
 खोट करवाने डोभे एक छोटा घर करीने तेने प
 छवांडे फरती कोट करीने तेनां कोकराने घाली
 सेहैल्यो. ते घरमां कोकरानुं मन रमाडवाने ते
 जे सर्व वस्तुनी अमुकूळता करी; माना प्रकारनां
 चित्र चितराव्यां, अने जे जे जनावर कोकराने वा
 हालां हंतां तेनां चित्रामण भोंतउपर कहडाव्यां,
 तेमां एक सिंहनुं चित्रपण हतुं; एक दिवस कोक
 रो सिंहनुं चित्र जोडने कोकराने घणी रोस चढो
 कां जे, शमणं खहं पडे एवं जाणीने बापे छाने घा
 ली मेहैल्योके, ते आ सिंहने माटे; एवं कहोने ते
 आंल्यो काहाडीने ते चित्रमे केहेके अरे दुष्ट; अ
 आ बंदीखानामां दुःख भोगवुं कुं ए तारे माटे, छा
 रोपामे जो आ वखत तरवार होत तो, तारा पे
 टमां घोघत पण शुं करुं रे एम कहोने दांत पी
 शीने रोसमां तेणे ते चित्रमांना सिंहनी कीतीमां
 मुंकी मारी त्यांहां भोंतमां एक खोलो हतो
 ते हाथमां पेशी गया, अने तेनो घा पाकीने ते
 ना दुःखयोज ते कोकरो मरण पाव्यो. ए प्रमाणे

(२८८)

बापे शमणु खोट करवाने जे उपाय कर्यो ते नि
थ्या यईने थनार हतु ते धयुंज.

सार

बचानु होय ते मटनार नहींज. पक्षी चिंता क
रीने अमथा जीवने खेदनां कां नांखोये.

मात १६५

कुकडी अने शियाळ

एक शियाळ एक जाळासां पेथीने कांडे खावा
नु मेळववाने उंचेनोने जोतो हतो; तेणे दांदां ए
क कुकडी दीठो, ते माळासां उंचीवेठो हता ते
मोपासे शियाळेजवाय एवं हतं नहीं, त्यारे ते
णे कुकडीनां वखाण करवा मांझां अने केहेके, अ
रे, बेहेन; तारी शी खन्नर के तने घणो करार
नथी घरमांज सुई रेहेके; एवं ह्यो सांभण्य ते ब
सतथी बेहेन तने खज कऊळु जे हाने एवि चिं
ता थयो के रात अने दाहाडे उंच आवती नथी;

म

માટે સહજ કેઈ હવે તું કોવોલું, અને સમાર પા
સે તો આવ, હામે તારી માડ જોવાદે; એવું તે બો
લેલે, વચ્ચે વચ્ચે તેનાં વચાંન કરતો આવલે, તે
સાંભળીને જહાં વેઠી હતી ત્યાંહાંથીજ કુકડી જવા
પડેલે. સરેજ ભાઈ તે સાંભળ્યું તે સહજ. એવો મં
દવાડ હામે કોઈ દિવસ આવ્યો મહોતો, ડુંદ
ળનાં તારીપાસે આવો હોત, યજ્ઞ શું કરું વેલો હા
મે કહ્યુંલે એ તું કોઈને પાસે આવવા દેઈએ ન
હીં, અને કોઈપાસે જઈએ નહીં, માટે ભાઈ નજ
બી હેઠે ચલાતું નથી, હવે તું આ વલત જા
હમણું તો ડુંદળજ એવોલું એ તારીપાસે ચાલી
શે આવું તો દ્યારો જીવ તરતજ મીકલી જાય.

સાર

વચાંન કરનારા જેટલા તેટલા જુઠા જાળવા.
માટે, તે સર્વના શત્રુ એવું સમજીને સચલાયે, તેન
મીસાએ તેજમાણે ચાલવું. શામાટે એ મેનમા મા

આવી

घाघी बोसबामें पार नजर पोहोचाडोमें, तेना बं
भनमां आवनार नहीं एवा चतुर पुरुष या लोक-
मां बोडा, अने आवनारा घणा.



मात १६६

देउकुं अने उंदर

एक दिवस उंदर अने देउकुं एमने नदीकांठा
जा घणीघणासार बरपाड गयो, त्यांहां उंदर भू-
र्त्त ते घासनें थोडे रहोमें देउकामें नार मारि, दे-
उको कुत्कारा मारवामां निपुण तेणे ते जोईमें यु-
क्तीची उंदरनी सावे गांठ पाडी, अने तेमें केहेके अ-
रे पुरुष, आवो सानो हावो हाथ आव, चोरनी पेडे
छपार्दमें कां नारख? पक्षी ते बे एक एकमें छोंणां
देईमें हावोहाव नारानारी आव्या, अने हमणां
एकएकनो जीव लेशे, एटलांमां समळी आवी ते
ते बे जणांयानें उचकीनें लोई गयो.

सार

सार

कहेवत है जे, बेनी सडाईमां चिजानें लाभ.
तेनुं कारण ए है जे, मनुष्य एकएकनो सार क
रवा खाने एटले, एक एकनां छिद्र काहाड़े, ते,
हैषयो जाणता नथी जे, चिजो कोई आपणा बेला
वा उपरयो अटकळ बांधीनें, आपणो घात कर
वाना उद्योगमां हये. घणेक ठेकारे एवं दीठा
नां आबुंके के, जे वस्तुमाटे लडेके ते वस्तुनां कां
ईं जांव नथी होतो, फलाणानें फलाणे हराबो ह
टला. अभिमानसारुज तेमनें सामानो जीव खेवो
अथवा पोतानो आपवो एवं करवुं पडेके. एवी
सडाईनुं फळ ए जे जीव आय, पराधीन बाव, दुःख
पामे, ए है.



बात १६७

मोलुबो खनें माणस

एक माणस मोलुबानें पकडीनें तेनें मारी मांस
ते। हतो, ते पकत ते मोलुबे तेनी दीन बाणीये

करीनें

કરીને પ્રાર્થના કરી જે, મારે તું હાને મારીશ ન
હીં, જ તારે કામનોહું, જો જે જં હું તો તારા
ચરનાં ઉંદરનો ઉપદ્રવ નથી, માણસ કેહેકે સારો
વાત તું જો તે હાહં કામ મનદેઈને કરતો હો
ત તો જં તમે આ ચલન જીવનો નુકીને તારો
છોટો ઉપકાર માનત, પણ, ઉંદર હારે હાવા
જીવાનો જનસો રહેવા દેતા નહોતા, તે ઉપદ્રવ હા
રે હજુ તારાજીવન તેવોને તેવોજં છે, માટે, તારા
તે ઉપકાર વિજા કોઈને દેલાડ હાને દેલાજીશ ન
હીં, એવું કહીને તેને તેનો જીવ સીધો.

સાર

જે કામ આપણે આપણા સ્વાર્થમાટે કર્યું, તે
જી થયપિ વિજાને પણ ગુણ થયો, તોપણ તે તે
માઉપર ઉપકાર કર્યો એમ કેહેવાનું નથી.

વાત

(१८३)

वात १६८

चाकर अपने अणसमज

कोई एक चाकरनो भजो, दिवस चायनगी बे
ल्लाघे घेर आयो. तेले उतावळुं जनवानुं कर,
एवी चाक्षा चाकरनें करी, ते वसत घरनां देवता
नहोतो ते नाटे, ते चाकर पाडोयोना घरनांची
दीपो करीनें उतावळो घेर आवतो हतो, तेनें र
क्षामां एक अणसमज माणसे हाथे झालीनें उ
भा राख्यो. अपने पुढेके, चरे, आ वसत तारे दी
वानं शुं कानडे, आ तु कोनें नाटे क्वांदां सेई
जायके, ते झनें कहीअ? चाकर उत्तर करेके,
चरे, ऊं हाहाया माणसने मोथ कहं, ते झनें
हजुं जडतो नवी, ते सांभळोनें अणसमज सज्जवा
ईनें चालतो ययो.

सार

जेसुं जन काममां अवसर विचारनां होय, तेनें
कनय वनामुं बोलावीनें सोजववो, ए अणसमज
नं लक्षण. एवा माणसनें समजुं जे हे ते माणस
नां नणता नवी.

७४

वात

(३६४)

वात १६६

शियाळ अने गाऊडी

एक शियाळ नदी उतरीने पेलो पार-गव. त्या
 गां शेवट पडोवेली होती माटे शियाळची तेउपर
 नद्यां नद्यां, माटे, से त्यांहां काणांमेर तेणें
 मेर कांतां मारीने चढवानो लाग जांमं, हंमं, एउ
 कामां मेना मावाउवर माख्योनां समुद्राच आवी
 नें केतो, अने ते तेमं लोहो पीवा लाग्यो; त्यांहां
 तेलउउवर एक गाऊडी हतो ते तेनें केहेके, भा
 ई, अने केहे तो ऊं आ माख्योनें उडाजे मेहेलं.
 तेनें ते असाव देहे, बार्द, ते अने छोडो उपकार
 र कर्तो, यण, आरे ते नथो करवुं, गांमाटे जे,
 आ माख्यो हंमणां लोहो पीनें हंमं यशे हटले व
 पो उपद्रव नहीं करे; अने एनें जो तुं उडाडी मे
 हेके ना, विजे धुणे विजी खुलो माख्योनां समुद्राच
 माख्योनें उवर मेळ्यो अने चमरां मारीनां एक सी
 हीनं लोणं वणरेकेना देणे नहीं.

मार

प्राद

राजानी पासोना केटलाक कारगारी सांभिया
 होयके, माटे जे सापण तेनने वेगज करवाने
 सवाक करीये तेर, तेसां यण सांई कळ नवी. कां
 जे, तेने ठेकाणे विज्जे जे आवणे तेवज तेवज का
 न करणे. माटे जे के तेज सारा; ते केटलेक दि
 वसे हप्त यया पकी विजा नवा आवणे तेना सर
 सो सणे उपद्रव ते जमायी नहीं पाय.



वात १७०

कागडो जने साव

एक कागडे एक दिवस सामने चांचमां साख्यो,
 जने तेने झानार, एटलासां साणे पण तरफडतां
 तरफडतां कागडाजी डोके नमकुं मरुं; तेणे करी
 ने ते कागडाने झेर चहुं जने मरणे एवो ययो,
 तेवखत ते केडेके, चरे, ऊं विजाने मारीनें सुख भोगव
 मारो हतो ते जने आ शिक्षा बरी, ते योग्यत्र बरी.

सार

(२८६)

भार

परपीडा करनारानो कोई दिवसे नाच थाय
ज. जेनो चाय निसुय जे, पोतानो खार्ब बतो
होय तो विजाने केठलु दुःख चाखो, पण ते मन
नां चाणे नहीं; तेनु सारं बरन थाय.



सात १७१ .

ब्रह्मा यनें उंड

एक दिवस उंडे ब्रह्मानी करगरीनें स्तुति करी,
हे देव, जेवा बळद-आदि खेईनें सर्व पशूयोनें ते
जीगडां आप्यां हे, तेवां छाने कां नवी आपतो?
के जेके करीनें हं प्रबूयो छारा देखनुं रखण करुं;
यनें केहेवा लाग्यो जे परमेश्वर एटकी छारी पि
संती सांभळबीज. तेनें ब्रह्मा उत्तर करेहे, बरे
मूर्ख, तेनें छौं जे आप्यके ते विचार करीनेंज वा
झुके; तेनां तारे संताप राखबो योग्यके; ते न रा

खीन

(૧૮૭)

હીને હો વિજ્ઞાને આપ્યુંકે તે આગળ કરીને તેનું
આગળ; તે માટે તેને આ તારા પદ પળાવી શિક્ષા
પટલોજ કહ્યુંકે, તારા કાન સાંભાકે તે ટુંકા
થયે, અને તે આગળથી કમલ વધીય.

સાર

આ સંસારમાં પરનેશ્વરે જેને જે મેલી આપ્યુંકે
તે યોગ્યકે. તે ફોરબીને વિજ્ઞ કરવા સાર જે હ
ધીન કરેકે તે સોફી બુદ્ધિના મૂલ જાણવા. આ
બુદ્ધિના ઉદ્યોગજ અર્થ જાયકે એમ નથી, તે,
તે અર્થ જાયકે, અને ઉલટા દુઃખી થાયકે.

વાત ૧૭૨

સાવરી અને તેનાં વચાં

આ સાવરી ક્ષેત્રમાં રહેતી હતી, તે ક્ષેત્ર પા
કું પટલે તેને ચિંતા થયો. જે, આનાં વચાંને પા
સો સાવરીને ઉડવું શીલતા પેદેલાં, એ ક્ષેત્રનાં

ક્ષેત્ર

खेतार कापवानें आवणे, तो कयन घरो? पक्षी ते रोज चारो घाणवा जाय त्वारे वखांनं केहेती जाय जे, झारी पळवाडे कोई कांई बाले, तो ते सघळं ऊं घेर आवुं एटले व्हांनं केहेवुं. एक दिवस खेतारनी धणी खेतारमां आवीनं घेताना कोकरानें केहेके, होकरा, ऊं जाणकुं के आ खेतार पावुं; अने कापवानें योग्य घय, माडे तुं काले सवारमां जा, अने आपणा इष्टमिच, पाडोशी, एमनें खेतारनी कापणीमां मदत करवासारु. कही आव. एवुं ते खेतारवाळे दीकरानें कर्ह्युं. ते सघळं वखांनं के मा घेर आवी एटले कर्ह्युं. अने मानो पळवाडे कलबसाट करीनं केहेवा लाग्यां के, मां हवे तुं अक्षनें उतावळीं अहीयांयो विजे डेकाणे लेई जा. मा बोली वखां निश्चित रोहो, कां के, खेतारमा धणीये खेतार कापवानो भत्तो पाडोशी अने इष्टमिच उपर राख्योके; तेयी ऊं पळुं जाणकुं जे, काले कापणी नती नथी. विजे दिवसे लागरी जबा लागी त्वारे तेणीये वखांनं पूर्वमांयेडे कही मेहेल्युं. तेउपरवी ते खेतारनी धणी शुं बोलेके

ते सांभळनासार बघां ठांपतांज हतां, एटखामां,
 ते खेतरनो धणो आव्यो, अने जेने बोलाव्यां हतां
 तेनो वाट जातो वेढो, पण कोई आव्यु नही, अ
 ने तडको पण बघो, त्यारे ते होकराने केहेके
 अरे, वाडोशी, दृष्टनिच, ए उपर विश्वास राखवो
 कामनो नही, माटे तुं हवे, एवं कर के, आप
 ण सगंनो प्रार्थना कराने तेने केहे; जे अक्षारे
 माटे तमे सवारमां वेहेलां ऊढोने खेतरनी काप
 णोनो सहायताने आवजो. ते सांभळीने बघां च
 णां विहीनां अने मा आवी एटकेज तेमणे ते स
 माचार माने कछ्हा; त्यारे ते बोली बखारे, एट
 झुंज जो छे, तो, तमे विहीशो नही; शामाडे जे
 सगां, सगांनो चिंता राखीने तेममा काममां पड
 शे ए निष्ठा जाण्जो, पण काले फरीथी ते गुं बो
 खेके ते मन राखीने सांभळजो, अने छाने केहेजो.
 बिजे दादाडे खेतरनो धणो घणो बारसुधो सर्वा
 आवनारांके एवं जाणीने वाट जातो वेढो, पण ते
 कोई आव्यु नही, पक्षी ते होकराने केहेके कोई

चिंता

बिंता नथी, भिमा, काळे तूं, सवारनां रानरडां
 सारां तेंबार करी मेहेल, जापण जापणे. साथेज
 कापोसु. ए वर्तमान बाबांथे माने कहां एठले
 ज ते बोली बसां हवे सापणे बर्हीयां रेहेवुं सा
 इंमयी, ग्रामादे के जे माणस पोतानां कान आ
 पण पोते करवाने मोकळ्या, ते धणु कराने ते का
 सनें पार पाडे. पछी तेणाये पोतानां बसां त्यां
 हांभी ते बहुत काहाडीनें बिजे ठेकागे मेहेल्यां,
 बिजे दाहाडे खेतरेनो भगी अने तेनो कोकरो वे
 जणाये बाबांनें खेतरेनो कापणी करी.

सार

जे कान पोतानी मेळे करीसकाय एवंचे, ते
 काम करवानो भरसो सगां इष्टमित्र उपर राख
 वो नही. जे पुरुष तेमनाउपर भरसो राखेके,
 तेमनें वे तरफची छोट आवेके, एकतो मूर्खनो ये
 ठे तेमनी बाट जोता वेशी रेहेवुं, बिजु तेमणे के
 तथा काले घणे संताप पाववुं. ए करता पोता
 ना कामनी मुख्यपणेची पोतानाउपर भरसो राखे

के,

(१०१)

है, तेनूं काम उतावळूं बर्द आवेके. कदापि न बर्द सकूं तो तेनाथी पोताने मन चाली सका सके जे, छीं छारी तरफथी उद्योग करवानां चाल स करूं नथी, अमें कोईमें भरसे रह्यो नथी. एन करतो बयं नहीतो तेनो दोष छारे नावेनहीं.

रात १७३

कानडा अमें नाउरह

एक कानडा एक नाउराना बांसाउपर का, का, करतो बेठा रहतो, तेमें नाउरह केहेके, अ रे दुःखदायक कामो क्यम रहेतो नथी? कलबछाट कां करेहे अरे जो ऊं बाव के कुतरो होत तो, तूं छाने खाटलो उपद्रव करोसकत? काण्डो केहे है, सरीबात कही, ऊं ते जाणीनेज कहं, जे क र है, अमें जे छाने शिक्षा करीसके एबाके, तेमने हांघडेपण ऊं उभो रहेतो नथी जे तारासरसा अनाथ दोन हे जेनो छाने भो नथी तेमनेज ऊं उपद्रव कहं.

बार

(૨૦૨)

શાર

ઘળ કરોને લોકોનો સભાવ આ કાનડાના એ
 થો હોયકે, જેને ઉપદ્રવ કર્યાથી તે શિક્ષા પામે
 તેને પરકાંચે તે રહેતા નથી, અતે એ અનાથ દીન
 કે તેમને પોડા કરોને પોતાના મનમાં પ્રસન્ન થા
 યકે. તેમની સમજણ ઘટલીજ જે, જેને પોડા ક
 ર્યાથી પોતાને શિક્ષા થાય નહીં તેને પોડા કર
 થી જ્યાંહાં શિક્ષા થાય ત્યાંહાં ન કરવી.

—૦૦*૦૦—

વાત ૧૭૪

કળવી અને અદૃષ્ટ

કોઈ એક કળવી સેતરમાં ફાળ માંસીને લેડતો
 હતો, તેના ફાળને દ્રવ્યનો ગર અચઢાયો તે જો
 ર્ફને કળવીને ઘણો આનંદ થયો. આંસ્યોમાં ફ
 ર્વનાં આંસુ આવ્યાં, તે વખત તે સેતરમેં કેહેકે અ
 રે આરા સેતર, તેં હાને છોટો ઉપકાર કર્યો,

મજ

मजदीमउपर छोटी दवा करी, ते सांभळीनें यह छनें रीत घढी अनें ते माणसनें रुपे कणवीना छो आनळ आबीनें बोलवा लाग्नुं, अरे, मूर्ख, त में शं कहोये? ते छनें मुकीनें खेतरना उपकार मान्यो, अनें छनें संभार्येण नहीं, अरे बळद, आ तनें मध्यं घुटलं द्रव्य ताहं महीं एवुं बर्दजा त तो, आ तं छारे नामे रोवा बेसत, ते वसत तं बिजा कोईना दोष केहेत नहीं.

सार

एकारा काम काजमां आपणुं सारुं वयं होय तो, तेनें संभारोये, जेनें आपणुं छोडुं वये दोष मेहेसोये.

बात १७५

कुकडुं अनें शियाळ

एक दिवस सवारमां एक शियाळ बाराणां दोरीना फांसामां भरायो, ते एक कुकडो बेगळेची जोईनें,

ते

मैं हल्ले तेनीपासे चाबीमें तेना छोड़ूँ। सामुँ जावा लाग्यो। तेनें शियाळ केहेके, भाई, जायुँ के ऊँ केवा संकटमाँ पछो ते, यनें ए सचळुँ भाईरे ता रे माटे, कां जे, ऊँ घेर जतो हतो एटलामाँ ता रो मन्द काने पछो, यनें छामेँ एवं ययुँ जे तेनें क्यारे मळुँ, माटे उतावळो आवतो हतो तेमाँ आवुँ ययुँ; हवे तुं एवं कर जे एक पाळी खाव, यनें या दोरी काप, यनें जो ह तजयो न चाख तो या छारा समाचार कोईनी आगळ कहीम नहीं, जांहां सुधी ऊँ या दोरी छारेदांते करीनें करडी नाखुँ यनें हुंटी जाऊँ। कुकडे ते सचळुँ कपटनुँ जाणीनें उतावळो जईनें पेहेलां बाडामा यणी में ते समाचार कस्यो, ते दोडतो आयो, यनें शियाळ दोरी कएडतो हतो एटलामाँ तेनें शियाळ में शिक्षा करी।

शार

हुंउनीउपर उपकार करीये नहीं केहेसो के कोईनेंयण संकटमाँ काममाँ आवोये, एबो-नीति

के

(૧૦૫)

કે તો તેઉપરથી ચોરનેપણ સહાય થવું અને વ
દુઝમે માટે તે કરવું નહીં તો દુષ્ટને તે દુષ્ટજ સ
હાય થાય અને ચોરને તે ચોરજ થાય પણ વિજા
યે થવું નહીં.



વાત ૧૭૬

• એક છાલો ઘોડો અને લાદેલોગધેડો.

એક છાલો ઘોડો અને એક મારે ભરેલો ગધેડો,
એ બે મારગમાં ચાલેકે, અને તેમનો ઘણો પછવા
હેથી તેમને હાકતો ચાલ્યો જાયકે, તે વખત ન
ઘેડાને માર ઘણો થયો, અને તે ઘટગોથે પડવા
ના સંધાનમાં આવ્યો, તેવજુ તેણે ઘોડાની ઘણી
ઘણી પ્રાર્થના કરી જે. માર્ડ, હ્યારા વાંસાઉપરનો
ઘોડોક માર તું લેઈને હ્યારે સહાય થા. જો હું
પ્રાણ જવાના સંકટમાં છું, પણ ઘોડો નિર્દય દુષ્ટ
તેણે તે કાંઈ સાંભળ્યું નહીં. પછી તે ગધેડાને અર્થ
માર્ગજ ઢેશ વાગી અને તે હેઠે પડ્યો, તે ઉઠે નહીં,

તેવજુત

तेबखत तेना धणीये तेनो तंग लीला करीया, अने
विजापण घणा घणा उपाय करीया, पण ते मखेनये
ते कयम उठे? यही तेने धणीये तेना उपरना भा
र अने तेनु चामडुं उतारीने घोडानो पीठउपर
छायुं. ए प्रमाणे ते छोडे बोडे उपकार न क
रीया माटे पोते घणा अममां पड्यो.

सार

आपण एकएकना कानमां न झाबीये तो तेमां
बे जणाने तोढोके; झोणी नजरे जोतामां एकएक
ने सहाय बायके माटेज या सृष्टीनो व्यवहार चा
लेके. माटे ए बात ज्यांहां ज्यांहां यती नयी
ज्यांहां सबळाओनो सार्थ बुडेके.



बान १७७

शियाळ अने दीपडो

एक दीपडो गुंफामां पोताने लावानुं साहित्य
भरीने निराते रेहेतो हतो, ते थटकळीने एक पि

याळ

घाल तेनें नळवानें घाव्वा, मनमां एवुं जे शुं के
 ते बापणे प्रत्यक्ष जोर्डनें लक्षमां आणोये. दीपडे
 तेनें गुफामांथीज उत्तर कर्यो जे भार्द हमणां तो
 तुं क्षमा करीनें जा, ह्यारे शरीरे करार नथो.
 शियाळ धूर्त तेनें प्रथम सदेहं हतोज ते तेवखत
 खरो यथो. पक्षी ते तरतज एकवकरां चारमा
 र रबारीपासे नथो, अनें तेनें ते सघळी बात क
 हीनें केहेके, तारे विजुं काई काम नथो एक
 कुतकुं माच लोर्डनें घाल, अनें दीपडो गुफामां सु
 तो के तेना कपाळमां ते मार, एटले तारुं का
 न थयुंज. पक्षी तेणे ते प्रमाणे कथें, अनें दीप
 डानो प्राण लीधो. पक्षी ते दुष्ट शियाळ ते गुफा
 मां रहीनें दीपडानुं मेळवेलुं साहित्य पोते भोगववा
 मांछुं, तिनें घणा दिवस थया नहीं एटलानां तेज व
 करां चारमारो एक दिवस ते मार्गे जतो हतो ते
 जे शियाळनें ते गुफामां जोर्डनें तेनापण कपाळ
 मां कुतकुं मारीनें प्राण लीधो.

चार

सार

जे बिजानो माश करीनें अत्याये बैभव पैदा क
रे ते छग्न दिवस भोगवे नहीं.



दात १७८

हरण अनें डालना बेला

एक हरणनी बहवाडे पारधी पछा त्यारे ते ना
दुं नादुं डालना बेलाने ओढे पेठ ते देखायुं नहीं,
त्यारे पारधी आशा मुकीनें पाछा फर्या, एटला
मां ते हरणे तेज बेलानां पांदडां लावा मांछां,
तेथी ते बेला डाल्या एटलामां ते पारधांमांथी
एकजणे पाछुं बाळीनें जायुं तेणे एवं जाण्युं जे
कोई जनावर बेलांमां बैठके, एवं अटकळीनें ए
क तीर मांछ्या, ते हरणनें बाग्यो, तेथी तेनो प्रा
ण मथो. मरती वखत ते पोतामे केडेके अरे, कत
ज एको जे ऊं तेनें या शिक्षा यथी ते योग्य यथी.
कां जे छारा संकट समयमां जे छारे कामनां
आया तेज बेलाने छे उपद्रव कर्यो.

सार

(३०६)

सार

कृतघ्नता ए सर्वदोषनो राजा के, कांजे, जे पोता
न सारुं करनाराने दुःख देखे, ते पुरुष बिजा लो
कोने दुख देवामां आवुं पाहुं कम जोशे. माटे
जे कृतघ्न थयो एटखे तेनां दुष्टपणानो अवधो थयो.



बात १७६

समळी अने कोळी

एक समळी सबूतरनी पकवाडे बडो हती ते, ए
क कोळीये जनायर पकडवाजे जाळनांखो हती ते
मां भरायो, तेबखत ते पांखो फडफडावेके अने
तेमांहेथो जवानो उद्योग करेके, एदलामां ते को
ळी, पासेज काम करतो हतो तेणे आवीने तेनें
थकडी, अने मारवालाग्ये, त्यारे ते करगरीने ते
नें विनती करेके के, छाने जीव दान आप, जा,

होकांड

(३१०)

हो काई तने उपद्रव कर्षो नथी, ऊं खनुनरनी पछ
वाडे पडोहतो, तेने कोळा उत्तर कांके, बाह
खबतरे प्रण ताहं शं वगाखुं हतुं, एवं कहीने ते
णे तेमं माघुं अने धड तेवखत जुहुं कर्षुं.

सार

विजाने पोडा करनी एज पेहेलो दोषके, पलो
ते छोटांने करो अथवा न्हानाने करो, पण ते
नं दुःख बेने बरोबर के, माटे न्हानाने पोडा क
र्षायो दोष थनामां काई चुक नथी.

—०*०—

वात १८०

वांदरी अने तेनां बे वच्चां

एक वांदरीमें बे वच्चां हतां, ते मांहेथी एक
उपर ते घसुं हेत राखे, अने विजानो अनादर
करे एवामां एक दिवस तेनी पछवाडे पारधी प

हो

खो तेवलन, तेणीये बाहाला बच्चानें उगारवा
माटे तेनें छाती सरसुं लोधुं, अनें विजुं हत ते
सेहेजअ तेनें बांसे बळग्यं ए प्रमाणे बच्चानें खेई
नें ते उतावळी वेगे दोडेंके, एटलामां, दैवयोग
थो एवं थयुं जे एक पट्यरमां बाहाला बच्चानें
माथुं पळ्ळारिनें ते मरीगथुं. अनें बांसाउपरनें
संकटमांथो उगथुं.

सार

आपण जेनें लाड लडावीये ते होकरुं बगडे
ते फेताने अनें पोतानां मायापनें सुख दे नहो.
अनें व्यापण जेनें लाड नथो करतां ते घणुं करी
नें दैववान् तोपजे.

—**—

वात. १८१

काळुं माणस

नारा लोकना देशमां एक जणे एक काळा माणस
नें वेचावो लोधो, तेनें जोईनें ते पुरुषना मनसां ए

बु

वुं आवुं के, आ जेनीपासे हुतो तेनी एलाउपर
 अनास्था, माटे एना शरीरउपर मेल चहोवे, ते हो
 ई नांखीयेतो ए गेरो घाय. एवो मजसां बिचा
 र करीनें तेणे तेनें एक छोटी कपरोटजां बेसा
 र्थो, अनें घणुं खर्च करीनें साव, पागडीयो खातो,
 अनें पग घसवाना पयरा, अनें सजर, मगाव्या प
 खी एक माणसे तेना शरीरनें खरो अनें साव जो
 लवा मंडो, अनें शिजे तेना सायाउपर पाणीना
 धारा रेडवासांडी, अनें एक बे जगा तेना शरी
 रनें पयरा लोहनें घसवा लाग्या, एवुं सवारयो
 ते संध्याकाळहुंधी तेणे बांधावे कथे. मण ते
 सघळुं व्यर्थ धईनें माणसेनें याक साच लाग्या,
 अनें ते काळुं माणसे टाडे ठुठवीनें मरण यास्युं.

• सप्त

जे जांझांयो यवानुं नहें, ते धवासाह कुतर्क क
 रीनें लिप्या जे अम कोहे, ते महेनत करीनें हा
 घनें फोसा साच जाण्हे.

वात

(૨૧૨)

વાત ૧૮૨

શિયાળ અને માંદો સિંહ

એક સમયે સિંહે જુઠીજ વાત ઉઠાડી જે, ઝં
માંદોકું, તો આ વણત, જે જનાવર દ્વારા સમાચાર
ર જોવાને આવશે તો દ્વારા મિત્ર જાણીશ. તે ઉપ
રથી સઘળાં જનાવર સિંહની ગુફામાં ગયાં. તેમાં
શિયાળ નયું નહીં, તે નજરમાં આણીને, સિંહે રી
પડાને મુત્ત શોધ કાઢાડવાને મોકલ્યો; તે જઈ
ને શિયાળને કહેકે, માર્ડ, તું આવો નિહુર કામ
રે વ્યોકે? અરે, સઘળાં જનાવરો સામીના સમા
ચારને ગયાં, અને તજથી રહેવાનું પણ કામ! શિ
યાળ કહેકે, સ્કોટા માર્ડ, સિંહને દ્વારો તાઢાંન
મમલ્કાર કહીને વિનંતો કરજો જે, દ્વારો સેહ
તમારી ઉપર વૂંચે જેવો હતો તેવોજ કે, તે વાતનો
તમે મનમાં સગાર સંદેહ આણશો નહીં; અને ઝં
હમણાં પણ તમારા ચરણ ઉપર નાનું મેહેલવા આ

વાત,

(१५४)

बत, पण शुं कहें? तसारी मुफा छारी नजरें एडे
हे एटले छारा पेठमां फाळ पडेके, कां के, जे ते
मां एकवार गयाके, तेनां पनलां हजमुधो पाछां
फर्यां नथी.

सार

जेजे बाम चानल आवी, तेनो विचार कधीवि
ना तेमां पछामां हानोके. सर्वनो बाट ते थाप
णी बाट, एम कहीनं जे एकादा खटलामां पडी
ये, पण, एवंके के, चहुं करोनें लोक पोतानी व
होये घालता नथी, तो, तेमां एकादो कोई खा
र्यसाधक होयके ते तेमनें जेम बाळेके तेम वळेके
तेमाटे घणा करे तेज करीये एवं ठीक नहीं; तेमां
थापणे पण सारासार विचार कर्या जाईये.



बात १८३

मयपो वर

एक स्त्रीनें भणी घणो मयपो हुतो; तेनं ते
असम कुटवासार तेणीये घणा उपाय कर्या, पण

ते

वे सचछा धर्य गया, त्वारे केली, तेणीये आ सु
 क्री करी: के, एक रात्रीये नित्यनीपेठे तेनी भणी
 मयणीनें रक्षांमां अचेतन पद्योहतो, तेनें त्यांहां
 यी उपाडीनें तेणीये मसाणमां एक मशीतमां पो
 रमां सुवाड्यो, जेवा कोर केहेये के, सरोज न
 एलोके, अनें पोते चेर आवी. पक्षी केटसीक
 वारे, तेनें शुद्धी आवीनें, ते वसाप्ताप पाव्यो हये,
 एवं. मनमां आणीनें, पाक्षी ते मसाणमां वधी; अ
 नें मशीतमां वारणां ठोकवा लागी; एटले ते मां
 हेची मोल्यो; कोणके? ते बोली ऊं आ मसाणमां
 रहीनें मुह्लाखोमी सेवा करुं. तारेमाटे जन
 वानु सोदनें आवोरुं, माटे कमाड उघाड. ते बो
 ल्यो, वाहतो झारी वेहेन, हमणांति तं जनवानी
 वात एक कोरे मेहेल; अनें अनें बोडोसरलो दा
 व बीवानें आणी आप, ऊं तारो वणो उपकार
 मानीय. नाचडीये ते सांभळीनें कपाळउपर हा
 व ठोक्यो. अनें केहेवालानी, वाहा; ऊं झोटी
 देव हीन। एनी देव मेहेलाववाने आ एकज उपा

(३१६)

सरहो इतो, तेपण सिध्या नयो, हवे ऊं एठउं
मिसे समजी के, एनुं व्यसन मुखावना कोई दिव
स अमार नयो.

सार

कोइपण डेव गळेपडी महोय ते मुकी खषवा
मुकावी सक्कावहे. यण एकवार ते गळेपडी ए
दले पडी कुइयो कउणहे.



बात १८४

माणस चने सत्सर

एक माणस जांघ उघाडी मुकीनें, एक झाडनें
सेठे पिसामो खातो इतो, तेनी ते जांघउपर एक
सत्सर दंग करवा लाग्या; तेवखत तेणे घणीरीसे
नेउपर एक चापट मारी; तेमांची ते माथोनें फ
रीची तेज ठेकाणे आवीनें वेढो, त्यारे तेषे पा
ही चापट मारी; तेमांची पण ते पाहो नाढो, स
जनासे पांच सत्तीस बार जांघउपर चापटो पडो

जे,

(३१७)

धा, तेही करीने ते माणसनी जांचमाच सुजी मची;
 पण मत्सर हाच आव्यो नही. तेवखत तेनें घणो
 सोद थवो जेनें तेणे बोरभद्रनी प्रार्थना करो के,
 हे देव, तूं झोटोके, तारां सामर्थ्यनी आगळ को
 ई ठरतुं नथी; आ दुष्ट मत्सरे जेनें घणो उपद्रव
 करवा मांडोके; तो एउपर पराक्रम करीने एना
 प्राण ले, जेनें मज दोनउपर दयाकर, एना दंगे
 करीने ऊं घणी व्यथा पामुंकुं.

सार .

हलका काम सारुं, झोटाने जम देवो ए च
 ज्ञानीनुं काम. जे अक्षय सुखनो आपनार तेनें
 नाशवंत पदार्थनो प्राप्तिसाटे संकटमां घालोवे
 मही.

वात

(११७)

बाल १८५

बे बासण

एक माटीनं, थनें एक पितळनं, एवां बे बासण,
कोईये एक नदीनी तौरि मेहेल्यां हतां; ते नदीनं पूर
चाव्युं तेनां तणयां, ते बल्लत माटीना बासणनें
धिता बढी के, कदाचित् ऊं पितळमा उपर अथ
छाईश तो, फुटीजईश. तेनें कष्टी जोईनें, पितळ
मं केहेके, अरे, तं विहीश नहीं, तनें ऊं संभाळी
श. माटीनं बोल्यां, भाई तं लगार वेगळेपीज बो
ल, छाने तारो घणो भो के; कांजे, ऊं तनें अथ
डाज के, तं छाने अथडाय, तोपण नाथ छारो
ज थाय.

बार

गरीबनें तालेघरनी समार्ड, अथवा संगती, बि
बत्तीयां नांस्के: तालेघरनी जोडे रेहेवासां, का
सुडो, के ते सुडो, पण बे तरफवी हानी गरीब
मोज थाय.

बाल

(७१८)

बात १८६

शीयाळ अने बाघ

एक दिवस कोई एक कुशळ तोरंदाज, अरं
ण्यमां पारध करवा गयो हतो, तेणे घणां जमा
वर मायां, अने केटलांकनो, पळवाडे पड्यो. ते
जोर्डनें सघळां जनावर गभरायां, अने भय पामो
नें नाशनें झाडो, गुफा, 'एमां भरार्द गयां. ते व
खत एक बाघ तेमनें केहेके, अरे, जं जीवकुं, अ
नें तमनें भो! एवं थाय तो छाने धिक्कार के,
तो कांई चिंता करयो नही, तमे धीरजमात्र रा
खो, अने छातं बळ, शौर्य, एउपर विश्वास रा
खो; जं एकलोअ तमारा बैरीनें मारीनांखीश,
एवी छोटी छोटी चडार्दनी बातो केहेके, पुंऊडुं
पळाडेके, अने रोखमां भुईं खोतरेके, एटलांमां
एक तार आवीनें तेनो कूळमां दाम्यो, तेवख
त तेनो वेदनाये व्याकुळ बर्दिनि, तेणे छोटी
घांटे काहाडीनें वम पाडो, अने छो बती तीर
नें पुंऊडुं झालीनें तेनें बाहेर काहाडेके, एटला

मां,

मां, शीयाळ, पासे खाबोनें बिस्मस पामोनें तेनें पुं
केके; बाघजी, एबो ते कोण बळोयो हरे, के जे
णे तमसरला छोटा बळवान पशूनें पण घाएल क
र्या. बाघ बोल्हो, भाई छारी मूठकळ चका, जे
हे छामे घाएल कर्या ते, पेसो सातो उभाहे ते
मनुष्य, जे, आपण पशूओयो जीतातो नथो.

सार

बळ, अने शौर्य, ए छोटां काम करेके प्रण
जे तेना साहित्यमां तेठलुं बुद्धिबळ होय तो ते
महोय तो, तेज उळटां दुःखदायक बायहे. नरा
बळवान् सुराहे, ते, पोताना सामर्थ्य उपर भरसे
राखोनें, उतावळापणुं करेके, तेनां तेमनुं उळटुं ए
कादुं मर्म, शत्रूना जाण्यामां महोय, ते जाण्यामां
आवेके, अने तेज पक्षो तेमना घातनुं निमित्त बाय
हे. बुद्धिमान् अने युक्तिमान् के ते, छोटा बळवा
ननें पण नाच घालो सकेके. पशू जेम मनुष्यानें
जीती सकतां नथी तेम बुद्धिहीन बळवान्, डाहा

आनें.

(३२९)

યાને. ચતુર્દાશમા વઠ, તે જેવી અનાડીના હાથમાં લાકડો સામેનો છાંલી હાથે છે, અને દાવપેચ જાળે છે, તો તે તેનીજ લાકડીયે તેને મારે છે. સાર, જનાવરના જેવી નરીકૂરતા, અથવા વઠ, એ બુદ્ધિમાનના દાવપેચ જાળ ધાલતું નથી.

• यात १८७

शियाळ अने मुलबटो

एक राते शिवाळ एक छोडां बेचनारानी दुका
नसां बेठो. त्वांहां घणी जातनां छोडां हतो, तेनां
थो एकउपर पण मेहेलीने तेनासानु न्याहाळी
ने केहेके त्या घणु सुंदर दोसेके; पण एसां मांस
नथो मादे ए नशकरीना कामनूके.

सार

जेना ह्यामां ज्ञान नथी, तेनुं एकलुं सुंदरपणुं
मज्जकरोना कामनुंहे.

यास

(३२२)

बात १८८

पारधी अने चकली

एक पारधीये पक्षी पकडवाने, जाळ नांखो हती;
तेमां एक चकली आवी; ते विलाप करीने केहेके;
अरे परमेश्वर! छाने शा संकटमां नांखोके! छे एथा
ते शा अन्याय कर्थाके? छे कोईन सोन चोय न
थी, के रुपं चोयुं नवी; एक चोखाना दाणासाह
छाने थाटलुं रे प्राणांत पारिपत्य?

सार

शा संसारनां व्यायनी रीती एवोके, के, एका
ई गरीबे घोडी चोरो पेठसार करी होयछ तेठ
लासार तेनो जीव जायके; अने जे धनवान प्रति
ष्ठित केहेवाईने लोकीना लाखो रुपैया डबावेके,
ते, भाईबंध, लांच, एना योग्यो शाऊकार येने
पार पडेके.

बात

(२२३)

वात १८६

हरण अने सिंह

एक हरणनी पळवाडे पारधीनां कुतरां पड्यां,
माटे ते हरण भय घामीनें जीव लोडनें नाठं ते,
एक गुफामां पेठुं; त्यांहां एक सिंह हतो, तेणे ते
उपर पडतुं मेहेलीनें तेनें तेवखत मारो नांख्ये.
ते वेळा हरण पोतानां मनमां केहेके, हरे हरे!
शे ऊं हीन भाग्यनो! ऊं माणस अने कुतरां ए
जना हाथमांथी कुटुं माटे आ गुफामां आये,
ते आ दुष्ट सघळां जनावरोमां बुभुक्षति एवाना
हाथमां आये.

सार

जे भयथी घबरायके, अने ते मटाडवा सार, वि
जी निर्भय जग्यामां जवानो उद्योग करेके, ते व
त्ती विपत्तीमां पडेके. कांके काळ विपरीत के तो,
आपण ज्यांहां जईशुं, त्यांहां दुःखज आवशे. ए

माटे

(३२४)

माटे छोटा है, ते एक पापन, मात्र भय राखे;
माकी सा सचळा विन्या कडके कडका थाय,
अथवा आकाश तुटो पडे, तोपण तेनं मन डगम
गर्नु मथी.

सनात

